S.R.P. up: 3/0
no: 69/8

SRI PRATAP COLLEGE
LIBRARY

Class No. 891.431
Book No. N 11 B
Accession No. 4321

॥ श्रीः ॥

श्रीनाभादासजीविरचित

श्रीभक्तमाल।

श्रीप्रियादासजीकृत भक्तिरसबोधिनी टीकासहित।

जिसमें

चारों युगोंके समस्त भक्तोंका चरित्र

सविस्तर वर्णित है।

उसे

श्री पं० रघुवंशशर्मासे

शुद्ध करवायकर

श्रीयुत हरिप्रसाद भगीरथजीने

बम्बईमें

ज० प्रे० छापके प्रसिद्ध किया।

आवृत्ति २ री.

संवत् १९७० सन् १९१४.

इस पुस्तकका सब हक्क प्रकाशकने अपना स्वाधीन रक्खा है।

भूमिका.

यह भक्तमालग्रंथ जामें मोक्षका पंथ कहिये मार्ग दिखाया है तामें इस जगतमें हरि मिलबेके बहुत प्रकारके जो मत हैं तिन सर्वमतोंके जो श्रेष्ठ भक्त हो गये हैं तिन्होंका नाम और गांव और भक्तिके विषे भाव और प्रभुने तिन्होंको जा प्रकार परिचय दिखाया है और तिन्हे को जिस रीतिसे हरि मिले हैं और तिन्होका आह्लाद तथा तिन्होकी जात्यादि सर्व प्रकारसे वर्णित है. यह ग्रंथ प्रथम **नाभाजी** स्वामीने छप्पय छंदमें बनाया और अतिशय गूढ किया कि मंदबुद्धि पुरुषनको किंचित् पढ़ेसे अर्थ नहीं लगै. याते इसी संप्रदायनिष्ठ और इन्होंकोही पद्धतिमें भये जो महाज्ञानवान् और महाचतुर और भक्तिनिपुण और कविताविषे श्रेष्ठ, कि जिनकी कवितामें अनेक अनुप्रास और यमक और माधुर्यता और रसिकता और शब्दप्रौढ़ता और अर्थगूढ़ता और अलंकार और चमत्कृतिजन्यता और काकूक्त्यादिक अनंत भेद बताये हैं ऐसे जो **श्रीप्रियादासजू** तिन्होंने युक्तिसे कबित्तछंदसहित **भक्तिरसबोधिनी** नाम टीका बनाई. तिस टीकाकी चमत्कृतिको उपमा कछु कही नहीं जाती है याते यह ग्रंथ सर्व ग्रंथनिते श्रेष्ठ है. काहेते जो कोई यह एकही ग्रंथ आदिते अंतलौं पढिके पुनःपुनःअवलोकन करै अथवा याकी पारायण करै तिसको नवधाभक्ति, कविता करनेकी शक्ति, जगतसों विरक्ति और जीवन्मुक्ति सहजहीमें प्राप्त होवै. इसमें कुछभी संशय नहीं. हमने इसका भली प्रकार विचार किया है यातें हमको दृढ़ निश्चय है; कि जो ऊपर फल कहा है तिसकी अवश्य प्राप्ति होती है. यातें परोपकारहित हमने इसे अतिशय शुद्धताके साथ छपाके प्रसिद्ध किया. अब समस्त सज्जनोंसे सविनय निवेदन है कि याको साद्यन्त अवलोकन करि हमारे परिश्रमको सफल करें. अरु दृष्टिदोषसे जो कछु यामे भूल रही होय ताको क्षमा करें.

हरिप्रसाद भगीरथजी,

ठि०—कालकादेवी—रोड, रामवाड़ी, मुंबई.

अथ भक्तमालटीकाकी अनुक्रमणिका।

पत्र.	विषय.	कबित्त
१	टीकाकर्ताका मंगलाचरण तथा आज्ञानिरूपण	१
"	टीकाका नाम तथा स्वरूपवर्णन	२
"	भक्तिस्वरूपवर्णन	३
२	भक्तिपंचरसवर्णन	४-५
"	सत्संगप्रभाववर्णन....	६
"	नाभाजूकावर्णन	७
"	भक्तमालस्वरूपवर्णन	८
३	टीकाविशेषलक्षण	९
"	आज्ञावर्णन....	१०
४	नाभाजूकीआद्यावस्थावर्णन	११-१३
"	चौबीस अवतारोंका वर्णन....	१४
५	रामचन्द्रजूके चरणचिन्हका वर्णन	१५-१९
६	पार्वतीजूको सीताका स्वरूप लेनेका वर्णन	२०-२२
७	अजामीलजूका वर्णन	२३-२४
"	षोड़श पार्षदोंका वर्णन	२५
८	हरिवल्लभप्रार्थनाका वर्णन....	२६
"	हनुमानका वर्णन	२७
"	बिभीषणजूका वर्णन....	२८-३०
९	शिवरीजूका वर्णन	३१-३७
१०	खगपतिजूका वर्णन	३८
११	अंबरीषराजाजूका वर्णन	३९-५०
१३	विदुरजूका वर्णन	५१-५२
१४	सुदामाजूका वर्णन	५३-५७
१५	चंद्रहासजूका वर्णन	५८-६८
१७	समुदायका वर्णन	६९
"	कुंतीजूका वर्णन	७०
१८	द्रौपदीजूका वर्णन	७१-७२
"	विप्र श्रुतदेवजूका वर्णन....	७३
१९	संक्षेपसमुदायका वर्णन	७४
"	श्वपच वाल्मीकिजूका वर्णन	७५-८२
२१	रुक्मांगदजूका वर्णन	८३-८५
२१	समुदायका वर्णन	८६
२२	बलिकी दारा विंध्यावलीका वर्णन	८७
"	मोरध्वजजूका वर्णन	८८-९२
२३	अलर्कजूका वर्णन	९३
२३	रंतिदेवजूका वर्णन	९४
२४	गुहरामजूका वर्णन	९५-९६
२५	परीक्षितजूका वर्णन	९७
"	श्रीशुकदेवजूका वर्णन	९८
"	प्रल्हादजूका वर्णन	९९-१००
२६	श्वफल्कसुवन अक्रूरजीकावर्णन	१०१
"	बलिराजाजूका वर्णन	१०२
२९	श्वेतद्वीपवासीका वर्णन	१०३-१०५
३०	निंबादित्यजूका वर्णन	१०६
३१	सहस्रास्यजूका वर्णन	१०७-१०९
३२	आचार्यकेजामाताकावर्णन	११०-११४
३३	गुरुभक्तका वर्णन	११५-११६
३५	श्रीरंगजूका वर्णन	११७-११८
"	पैहारीजूका वर्णन	११९-१२०
३६	सुमेरदेवजूका वर्णन	१२१-१२२

पत्र.	विषय.	कवित.
३७	अग्रदासजूका बागप्रीतिप्रसंगका वर्णन	....१२३
३७	शंकराचार्यजूका वर्णन	१२४-१२६
३८	वामदेवजूका वर्णन	....१२७-१४३
४२	जयदेवजूका वर्णन	....१४४-१६३
४६	श्रीधरजूका वर्णन	१६४
४७	बिल्वमंगलजूका वर्णन	१६५-१७६
४९	विष्णुपुरीजूका वर्णन	१७७
५०	ज्ञानदेवजूका वर्णन	१७८-१७९
५०	त्रिलोचनजूका वर्णन	१८०-१८६
५२	वल्लभाचार्यजूका वर्णन	१८७ १८९
५३	कुलशेखरजूका वर्णन	१९०-१९१
५३	रतिवंतीबाईजूका वर्णन	१९२
५४	पुरुषोत्तमवासी महाराजजूका वर्णन	१९३-१९५
५४	करमाबाईजूका वर्णन	१९६-१९७
५५	सिलपिल्लेकुँवरिका वर्णन	१९८-२०४
५६	भक्तनिहितसुतविषदियोएउभयबाईजूका वर्णन	....२०५-२११
५८	दांऊमामाभानजेका वर्णन	२१२-२१५
५९	हंसप्रसंगजूका वर्णन	२१६-२१८
,,	महाजनसदाव्रतीजूका वर्णन	....२१९-२२३
६१	भुवनचौहानजूका वर्णन	२२४-२२६
,,	देवापंडाजूका वर्णन	२२७-२२९
६२	कामध्वजजूका वर्णन	२३०
,,	जैमलजूका वर्णन	२३१-२३२
६३	ग्वालभक्तजूका वर्णन	२३३
,,	श्रीधरस्वामीजूकी आद्याव-स्थाका वर्णन	२३४
६३	निष्किंचनभक्तजूकावर्णन	२३५-२३७

पत्र	विषय.	कवित्त
६४	सास्वीगोपलजूका वर्णन	२३८-२४१
६६	रामदास भक्तजूका वर्णन	२४२-२४५
६६	जसूस्वामीजूका वर्णन.	२४६-२४७
	नंददासजूका वर्णन	२४८
,,	अल्लजूका वर्णन	२४९
,,	बारमुखीजूका वर्णन	२५०-२५२
६८	तियासंग विप्र भक्तका वर्णन	२५३-२५४
६९	राजा भक्तराजजूका वर्णन	२५५
,,	तिया हरिभक्तजूका वर्णन	२५६-२५७
७०	गुरुनिष्ठका वर्णन	२५८
,,	रैदासजूका वर्णन	२५९-२६१
७३	कबीरसाहेबजूका वर्णन	२६८-२८१
७६	पीपाभक्तका वर्णन	२८२-३०५
८१	धनाभक्तका वर्णन	३०६-३०८
८२	सेनाभक्तजूका वर्णन	३०९-३१०
८३	पद्मनाभजूका वर्णन	३११
८४	तत्वाजीवाजूका वर्णन	३१२-३१४
८५	माधवदासजूका वर्णन	३१५-३२६
८७	रघुनाथगुसांईजूका वर्णन	३२७-३२८
८८	नित्यानंदजूका वर्णन	३२९
८८	कृष्णचैतन्यजूका वर्णन	३३०-३३२
९०	केशवभट्टजूका वर्णन	३३३-३३७
९१	श्रीभट्टजूका वर्णन....	३३८-३३९
९२	कायस्थतिपुरदासजूका वर्णन	....३४०-३४३
९४	श्रीविठ्ठलजूका वर्णन	३४४-३४७
९५	भाईउभयमाथुरजूकावर्णन	३४८-४५४
९७	हरिरामजूका वर्णन	३५५
९८	श्रीनारायणभट्टजूका वर्णन	...३५६

पत्र.	विषय.	कबित्त.
९८	बंगालदेशभक्तजूकावर्णन	३५७–३६३
१००	हरिवंशगुसांईजूकावर्णन	३६४-३६६
१०१	हरिदासजूका वर्णन	३६७
"	व्यासभक्तजूकावर्णन....	३६८–३७३
१०३	श्रीजीवगुंसाइजूका वर्णन	३७४
"	श्रीगोपालभट्टगुसांईजूकावर्णन	३७५
१०४	अलिभगवानजूका वर्णन	३७६
१०४	विठ्ठलविपुलजूका वर्णन	३७७
"	जगन्नाथानेश्वरीजूका वर्णन	३७८
"	श्रीलोकनाथगुसांईजूका वर्णन	३७९
१०५	श्रीमधुगुसांईजूका वर्णन....	३८०
१०५	श्रीकृष्णदासब्रह्मचारीजूका वर्णन	३८१
"	श्रीकृष्णदासपंडितजूका वर्णन	३८२
"	भूगर्भगुसांईजूका वर्णन	३८३
१०६	रसिक मुरारिदासजूका वर्णन	३८४–३९३
१०८	सधनाभक्तजूका वर्णन	३९४–३९७
१०९	श्रीगुसांईकाशीश्वरजूकावर्णन	३९८
११०	खोजीजूका वर्णन....	३९९–४००
११०	रांकाबांकाजूका वर्णन	४०१–४०३
१११	लड्डुभक्तजूका वर्णन	४०४
"	श्रीसंतभक्तजूका वर्णन	४०५
११२	त्रिलोकभक्तजूका वर्णन	४०६–४०८
११३	प्रतापरुद्र गजपतिजूका वर्णन	४०९
"	श्रीगोविंदस्वामीकावर्णन	४१०–४१४
११५	गुंजामालीजूका वर्णन	४१५–४१६
११६	गणेशदेरानीजूकावर्णन	४१७–४१८
११६	नरबाहनजूका वर्णन	४१९
११७	गोपालभक्तका वर्णन	४२०–४२१
११८	लाखाभक्तका वर्णन	४२२–४२८
११९	नरसीभक्तका वर्णन	४२९–४५५
१२५	माधवभक्तका वर्णन	४५६
१२६	अंगदभक्तका वर्णन	४५७–४६४
१२८	चतुर्भुजराजाका वर्णन	४६५–४७०
१२९	मीराबाईका वर्णन	४७१–४८०
१३२	पृथ्वीराजराजाजूका व०	४८१-४८५
१३३	जैमलजूका वर्णन....	४८६–४८
१३३	मधुकरशाहजूका वर्णन....	४८८
१३४	रामराजाजूका वर्णन	४८९
	राजाराम अभिराम दोऊका वर्णन	४९०
१३५	किशोरभक्तका वर्णन	४९१–४९२
१३६	चतुर्भुजदासका वर्णन	४९३–४९६
१३७	संतदासका वर्णन....	४९७
१३८	सूरदास मदनमोहनका वर्णन	४९८–५०२
१३९	श्रीमुरारिदासका वर्णन	५०३–५०७
१४०	तुलसीदासजीका वर्णन	५०८–५१८
१४४	गोकुलनाथजूका वर्णन	५१९–५२१
१४६	बनवारीदासका वणन	५२२
,,	गदाधरभट्टका वर्णन	५२३–५३०
१४८	कर्मानंदका वर्णन	५३१
,,	कोल्हअल्हका वर्णन	५३२–५३६
१४९	श्रीनारायणदासका वर्णन	५७३
१५०	पृथ्वीराजका वर्णन	५३८–५४०
१५१	सीवाभक्तका वर्णन	५४१
,,	रत्नावतीबाईका वर्णन	५४२–५५८
१५५	पारीखभक्तका वर्णन	५५९–५६०
१५६	नारायणभक्तका वर्णन	५६१–५६२
१५७	जैतारनभक्तका वर्णन	५६३
	चतुरीनगनस्वामीजूकावर्णन	५६४–५६६

पत्र.	विषय.	कबित्त
१५८	केवलकुवाजूका वर्णन	५६७–५७५
१६१	तुंबरभगवानदासकाव०	५७६–५७७
१६२	हरिदासवणिकका वर्णन	५७८–५७९
१६३	बांबोली गोपालकाव०	५८०–५८३
१६४	करमेतीबाईका वर्णन	५८४–५९१
१६६	गोविंदभक्तका वर्णन	५९२
,,	गंगग्वालभक्तका वर्णन	५९३
१६८	प्रेमदासका वर्णन	५९४–५९९
१७०	केवलरामका वर्णन	६००
१७१	नरवरराजाका वर्णन	६०१–६०३
१७३	हरिदासभक्तका वर्णन	६०४–६१०
१७४	कृष्णदाससुनारका वर्णन	६११
१७५	श्रीप्रबोधानंदसरस्वती गुसांई-जूका	६१२
१७६	कृष्णदासजूका वर्णन	६१३
१७७	गदाधरदासका वर्णन	६१४–६१७
१७८	नारायणदासकावर्णन	६१८–६१९
”	भगवानदासका वर्णन	६२०
१८०	नामदीपकुँवरिका वर्णन	६२१–६२२
१८१	गिरिधरग्वालका वर्णन	६२३
१८१	रामदासभक्तका वर्णन	६२४–६२५
१८२	भगवंतभक्तका वर्णन	६२६–६२९
१८४	फलश्रुति दोहा	२०३–२१४
१८५	टीकाकर्ताके गुरुदेवका वर्णन	२३५
१८६	भक्तमालमाहात्म्य	....१–२
१८७	प्रमाणिका छंद	....१–८
१८७	ग्रन्थसमाप्ति	....१–२

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

अथ श्रीभक्तमाल।

भक्तिरसबोधिनी टीकासहित।

टीकाकर्ताका मंगलाचरण तथा आज्ञा निरूपण।

क०—महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरणजूके चरणको ध्यान मेरे नाम मुख गाइये ॥ ताही समय नाभाजूने आज्ञा दई लई धारि टीका बिस्तार भक्तमालको सुनाइये ॥ कीजिये कबित्तबंध छंद अति प्यारो लगै जगै जगमाहिं कहि बानी बिरमाइये ॥ जानों निजमति ऐपै सुन्यो भागवत शुक द्रुमनि प्रवेश कियो ऐसेही कहाइये ॥ १ ॥

टीकाका नाम तथा स्वरूपवर्णन।

क०रचि कबिताई औ सचाई सुखदाई लगै निपट सुहाई पुनरुक्ति ले मिटाई है ॥ अक्षरमधुरताई अनुप्रास यमकाई अति छबि छाई मोद-झरीसी लगाई है ॥ काब्यकी बड़ाई निजसुख न भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढ़कै सुनाई है ॥ हृदै सरसाई जोपै सुनिये सदाई यह भक्तिरसबोधिनी सुनाम टीका गाई है ॥ २ ॥

अथ भक्तिस्वरूपवर्णन।

क०—श्रद्धाई फुलेल औ उबटनो श्रवण कथा मैल अभिमान अंग अंगनि छुटाइये ॥ मनन सुनीर अन्हवाय अँगुछाय दया नवनि बसन प्रन सोंधो ले लगाइये ॥ आभरण नाम हरि साधुसेवा कर्ण फूल मानसी सुनथ संग अंजन बनाइये ॥ भक्ति महारानीको शृंगार चारु बीरी चाह रहे जो निहारि लहे लाल प्यारी गाइये ॥ ३ ॥

अथ भक्तिपंचरसवर्णन।

क०–शान्ति दास्य सख्य बातसल्य औ शृंगार चारु पांचो रस सार बिसतार नीके गाय हैं ॥ टीकाको चमतकार जानोगे बिचारि मन इनके स्वरूपमें अनूप ले दिखाय हैं ॥ जिनके न अश्रुपात पुलकित गात कभू तिनहूको भावसिंधु बोरि सो छकाय हैं ॥ जोलौं रहे दूरि रहे विमुखता पूरि हियो होइ चूर चूर नेक श्रवण लगाय हैं ॥ ४ ॥ पंच रस सोई पंचरंग फूल थाके नीके पीयके पैरायबेको रचिके बनाई है ॥ वैजयंती दाम भाववती अलि नाभा नाम ल्याई अभिराम श्याममति ललचाई है ॥ धारी उर प्यारी क्यों हू करत न न्यारी अहो देखो गति न्यारी ढरि पाँयनिको आई है ॥ भक्तिछबिभार ताते नमित शृंगार होत होत बश लखे जोई याते जानि पाई है ॥५॥

अथ सतसंगप्रभाववर्णन।

क०–भक्ति तरु पौधा ताहि बिघ्नडर छेरिहूको बारदे विचारवारि सींच्यो सतसंगसों ॥ लग्योई बढ़न गोदा चहुँदिशि कढ़नसो चढत आकाश जस फैल्यो बहुरंगसों ॥ संतउर आलबाल शोभित विशाल छाया जिये जीवजाल ताप गए यों प्रसंगसों ॥ देखो बढवार जाहि अजाहूकी शंका हुती ताही पेड़ बँधे झूलैं हाथी जीते जंगसों ॥ ६ ॥

अथ नाभाजूका वर्णन।

क०–जाको जो स्वरूप सो अनूप ले दिखाइ दियो कियो जो कबित्तपटमिहिंमिध्य लाल है ॥ गुण पै अपार साधु कहे अंक चारिहीमें अर्थ बिसतार कविराज टकसाल है ॥ सुनि संतसभा झूमि रही अलिश्रेणी मानो घूमिरही कहे यह कहाधौं रसाल है ॥ सुने हैं अगर अब जानेमें अगर सही चोवा भए नाभा औ सुगंध भक्तमाल है ॥७॥

अथ भक्तमालस्वरूपवर्णन।

क०–बड़े भक्तिमान निशि दिन गुणगान करें हरें जगपाप जाप यो परिपूर है ॥ जानि सुख मानि हरि संतसनमान सचे बचेऊ जग-

त रीति प्रीति जानि मूर है ॥ तेऊ दुराराध कोऊ कैसेके अराधिसकै समझ्यो न जात मन कंप भयो चूर है ॥ शोभित तिलक भाल माल उर राजै तौपै विना भक्तमाल भक्तिरूप अतिदूर है ॥ ८ ॥

दोहा-भक्त भक्ति भगवंत गुरु,चतुर नाम वपु एक॥
इनके पदवन्दन करे,नाशैं विघ्न अनेक॥१॥

टीका-विशेषलक्षण ।

क०-हरिगुरुदासनसों सांचो सोई भक्त सही गही एक टेंक फिरि उरते न टरी है ॥ भक्तिरसरूपको स्वरूप यहै छबिसार चारु हरिनाम लेत अश्रुवनि झरी है ॥ वही भगवंत संतप्रीतिको बिचार करे धरे दूरि ईशताहू पांडवनिसों करी है ॥ गुरु गुरुताईकी सचाई ले दिखाई जाहि गाई श्रीपै हरिजूकी रीति रंगभरी है ॥ ९ ॥

अथ आज्ञावर्णन ।

दोहा-मंगल आदि बिचारि यह,वस्तु न और अनूप॥ हरिजनकेयश गावते,हरिजन मंगलरूप ।२।संतन मिलिनिर्णय कियो,मथि पुराण इतिहास॥भजबेको दोई सुघर,केहरि केहरिदास३ अग्रदेव आज्ञादई,भक्तनको यश गाव॥भवसागरकेतरनको, नाहिंन आनउपाव४

टी०क०-मानसी स्वरूपमें लगेहैं अग्रदासजू वे करत बयार नाभा मधुर सँभारसों ॥ चढ्यो है जहाजपै जु शिष्य एक आपदामें कर्यो ध्यान सऱ्यो मन छूट्यो रूपसारसों ॥ कहत समर्थ गयो बोहित बहुत दूरि आवो छबिपूरि फिरि ढरो ताहि ढारसों ॥ लोचन उघारिकै निहारि कही बोल्यो कौन वही जौन पाल्यो शीथ दै दै सुकुमारसों ॥ १० ॥ अचिरज दयो नयो इहांलों प्रवेश भयो मन सुख छयो जान्यो संतनप्रभावको ॥ आज्ञा तब दई यहै भई

तोपै साधुकृपा उनहीको रूप गुण कहो हियभावको ॥ बोल्यो कर जोरि याको पावत न ओर छोर गाऊं रामकृष्ण नाहिं पाऊं भक्तदावको ॥ कहि समुझाई वेई हृदै आय कहे सब जिन ले दिखाइ दियो सागरमें नावको ॥ ११ ॥

अथ नाभाजूकी आद्यावस्थावर्णन।

टी०क०हनूमानवंशहीमैं जनम प्रसिद्ध जाको भयो दृगहीन सो नवीन बात धारिये ॥ उमर बरष पांच मानिकै अकालआच मातु बन छोरि गई बिपति बिचारिये ॥ कील्ह औ अगर ताही डगर दरश दियो लियो यों अनाथ जानि पूँछि सो उचारिये ॥ बड़े सिद्ध जल ले कमंडलुसों सींचे नैन चैन भयो खुले चक्षु जोड़ीको निहारिये ॥ १२ ॥ पाँय परि आँसू आय कृपा करि संग ल्याय कील्हआज्ञा पाय मंत्र अगर सुनायो है ॥ गलते प्रगट साधुसेवा सो बिराजमान जान अनुमान ताहि टहल लगायो है ॥ चरण प्रक्षाल संत शीथसों अनंद प्रीति जानि रसरीति ताते हृदै रंग छायो है ॥ भई बढवार ताको पावे कौन पारावार जैसो भक्तरूप सो अनूप गिरा गायो है ॥ १३ ॥

छप्पय-जय जय मीन बराह कमठ नरहरि बलि बामन परशुराम रघुबीर कृष्ण कीरति जगपावन ॥ बुद्ध कलंकी व्यास पृथू हरि हंस मन्वंतर ॥ यज्ञ ऋषभ हयग्रीव ध्रुव वरदेन धन्वंतर ॥ बदरीपति दत्त कपिलदेव, सनकादिक करुणा करो ॥ चौबीस रूप लीला रुचिर, अग्रदासउर पद धरो ॥ ५ ॥

टी०क०-जेते अवतार सुखसागर न पारावार करैं बिसतार लीला जीवनि उधारको ॥ जाहि रूपमाहिं मन लगै जाके पगे तिहिं जगै हिये भाग वही पावे क्यों न पारको ॥ सबही हैं नित्य ध्यान करत हिप्रकाशै चित्त जैसे रंक पावै वित्त जो पै जाने सारको ॥ केशनि कुटिलताई ऐसे मीन सुखदाई अगरसुरीति भाई बसो उर हारको ॥ १४ ॥

छप्पय–अंकुश अंबर कुलिश कमल यवध्वजा धेनु-पद ॥ शंख चक्र स्वस्तीक जंबुफल कलश सुधाह्रद॥ अर्धचंद्र षट्कोण मीन बिंदु ऊरधरेषा । अष्टकोण त्रिकोण इंद्रधनु पुरुष विशेषा ॥ सीतापतिपद नित बसत एते मंगलदायका ॥ चरणचिन्ह रघुवीरके संतन सदा सहायका ॥ ६ ॥

टी०क०–संतनसहायकाज धारे नृपराज राम चरणसरोज-नमें चिन्ह सुखदाइये ॥ मन है मतंग मतवारो हाथ आवे नाहिं ताके लिये अंकुश ले धाऱ्यो हिये धाइये ॥ शठता सतावे शीत तातेही अंबर धऱ्यो हऱ्यो जनशोक ध्यान कीन्हे सुखदाइये ॥ ऐ-सेही कुलिश पापपर्वतके फोरिबेको भक्तिनिधि जोरिबेको कंज मन ल्याइये ॥ १५ ॥ सुनो यवहेतु सदा दाता सिद्धविद्याहीको सुमति सुगति सुखसंपतिनिवास है ॥ छिनमें सभीत होत कलिकी कुचाल देखि ध्वजा सो विशेष जानो अभैको विश्वास है ॥ गोप-दसो होय भवसागर नागरजन जोपै नैन हियेमें लगावे मिटे त्रास है ॥ कपट कुचाल मायाजाल सबै जीतबेको दरको दरश किये होत अनायास है ॥ १६ ॥ कामहू निशाचरके मारबेको चक्र धऱ्यो मंगल कल्याणहेत स्वस्तिकहु मानिये ॥ मांगलिक जंबुफल चारहुको फल मनकामना अनेक विधि पूर्ण नित ध्यानिये ॥ कलश सुधाको सर भऱ्यो हरिभक्तिरस नैनपुटपान कीजे जीजे मन आनिये ॥ भक्तिको बढावे औ घटावे तीन तापनको अर्धचंद्र धारण ये कारण है जानिये ॥ १७ ॥ विषय भुजंग बलमीक तन-मांहि बसे दासको न डसे ताते यत्न अनुसऱ्यो है ॥ अष्टकोण षट्कोण औ त्रिकोण यंत्र किये जिये जोई जानि जाके ध्यान उर भऱ्यो है ॥ मीन बिंदु रामचंद्र कीन्हो बसिकर्ण पाय ताहीते नि-

काय जनमन जात हऱ्यो है ॥ संसारसागरको न पारावार पावे ताते ऊर्ध्व रेखा दासनको सेतुबंध कऱ्यो है ॥ १८ ॥ धनु पदमाहिं धऱ्यो हऱ्यो शोक ध्यानिनको मानिनको माऱ्यो मान रावणादि साखिये ॥ पुरुषविशेष पदकमल बसायो राम हेतु सुनो अभिराम श्याम अभिलाखिये ॥ सूधो मन सूधो बैन सूधी करतूत सब ऐसो जन होय मेरो याहिको जु राखिये ॥ जोपै बुधिवंत रसवंत गुण संपतिमैं करि हिये ध्यान हरिनाम मुख भाखिये ॥ १९ ॥

छप्पय–विधि नारद शंकर सनकादिक कपिलदेव मनु भूप॥नरहरिदास जनक भीष्मरु बलि शुक मुनि धर्मस्वरूप॥ अंतरंग अनचुर हरिजूके जो इनको यश गावे॥आदि अंतलों मंगल तिनके श्रोता बक्ता पावे॥ अजामील प्रसंग यह,निर्णय परम धर्मको जान ॥ इनकी कृपा और पुनि समुझे,द्वादश भक्तप्रधान॥७॥

टी०क०–द्वादश प्रसिद्ध भक्त राजकथा भागवत अतिसुखदाई नानाबिधि करि गाये हैं ॥ शिवजीकी बात एक बहुधा न जाने कोउ सुनि सरसाने हिये भाव उरझाये हैं ॥ सीताके वियोग राम बिकल बिपिन देखि शंकर निपुण सतीवचन सुनाये हैं ॥ कैसे ये प्रवीन ईश कौतुक नवीन देखो मनेउ करत अंग वैसेही बनाये हैं ॥ २० ॥ सीताको स्वरूप वेष लेशहु न फेरफार रामजू निहारि नेकु मनमें न आई है ॥ तब फिरि आयकै सुनाय दई शंकरको अति दुख पाय बहुविधि समुझाई है ॥ इष्टको स्वरूप धऱ्यो ताते तनु परिहऱ्यो पऱ्यो बड़ो शोच मति अतिभरमाई है ॥ ऐसे प्रभुभावपगे पोथिनमें जगमगे लगे मोको प्यारे यह बात रीझि गाई है ॥ २१ ॥ चले मग जात उभै खरे शिव दीठि परे करे परनाम हिये भक्ति लागि प्यारी है ॥ पारब-

ती पूँछे किये कौनको जु कहो मोसों दीसउ न जन कोउ तबलों उचारी है ॥ बरष हजार दश बीते जहां भक्त भयो नयो और व्हैहै दूजे ठौर बीते धारी है ॥ सुनिकै प्रभाव हरिदासनसों भाव बढ़्यो रह्यो कैसे जात चढ़्यो रंग अति भारी है ॥ २२ ॥

अथ अजामीलजूका वर्णन ।

क०–धर्यो पितु मातु नाम अजामील सांचो भयो कियो अजामील छोटी तिया शूद्रजातकी ॥ कियो मद्यपान सो सयान गहि दूरि डर्यो मार्यो तन वाहिसों जु कीनो लैके पातकी ॥ करि परिहास काहु दुष्टने पठायो साधु आय गृह देखि बुद्धि आय गई सातकी ॥ सेवा करि सावधान संतनि रिझाय लियो नारायण नाम धर्यो गर्भबाल बातकी ॥२३॥ आय गह्यो काल मोहजालमें लपटि रह्यो महाविकराल यमदूतहू दिखाइये ॥ वही सुत नारायण नाम जो कृपाकै दियो लियो सो पुकारि सुर आरति सुनाइये ॥ सुनतहि पारषद आये वाहि ठौर दौरि तोरि डारे पाश कह्यो धर्म समुझाइये ॥ हारलैं बिडारे जाय पतिपै पुकारे कही सुनो बजमारे मति जावो हरि गाइये ॥ २४ ॥

छप्पय–विष्वक्सेन जय विजय प्रबल बल मंगलकारी ॥ नंद सुनंद सुभद्र भद्र जगआमयहारी ॥ चंड प्रचंड विनीत कुमुद कुमुदाक्ष करुणालय॥शील सुशील सुसेन भावभक्तन प्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपति प्रीणन प्रवीण मह, भजनानंद भक्तानि हद॥मोचित्तवृत्ति नित तहँ रहो, जहँ नारायणपारषद ॥ ८ ॥

टी०क०–पारषदमुख्य कहे षोड़श स्वभावसिद्ध सेवाहीकी ऋद्धि हिये राखि बहु जोरिकै ॥ श्रीपति नारायणके प्रीणन प्रवीण महा ध्यान करे जन पाले भावदृग कोरिकै ॥ सनकादि दियो श्राप प्रेरिकै दिवायो आप प्रगट व्है कह्यो पियो सुधा मींजि

घोरिकै ॥ गहि प्रतिकूलताई जोपै यही मन माई याते रीति हद गाई धरि रंग बोरिकै ॥ २५ ॥

छप्पय-कमला गरुड़ सुनंदआदि षोडशप्रभुपदराति॥ (हनूमंत) जांबुवंतसुग्रीवबिभीषण शबरीखगपति॥ ध्रुव उद्धव अंबरीषविदुरअक्रूर सुदामा ॥ चंद्रहास चित्रकेतु ग्राह गजपांडवनामा ॥ कौषारवकुंतीवधू, पटऐंचतलज्जाहरी॥ हरिवल्लभसबप्रारथों,जिनपदरज आशा धरी ॥ ९ ॥

टी०क०-हरिके जे वल्लभ हैं दुर्लभ भुवनमांझ तिनहीकी पदरेणुआशा जिय करी है ॥ योगी यती तपी तासों मेरो कुछ काज नाहिं प्रीतिपरतीति रीति मेरी मति हरी है॥कमला गरुड जांबवान् सुग्रीवादि सबै स्वादरूप कथा जाकी पोथिनमें धरी है ॥ प्रभुसों सचाई जग कीरति चलाई अति मेरे मन भाई सुखदाई रसभरी है ॥ २६ ॥

अथ हनूमानजूका वर्णन ।

टी०क०-रतन सार सागर उधार किये लिये हित चायके बनाय माला करी है ॥ सब सुखसाज रघुनाथ महाराजजूको भक्तसो बिभीषणजू आनि भेंट धरी है ॥ सभाहीकी चाह अवगाह हनुमान गरे डारि दई सुधि भई मति अरबरी है ॥ राम बिन काम कौन फोरि मनी दीने डारि खोलि त्वचा नामहिं दिखायो बुद्धि हरी है ॥२७

अथ बिभीषणजूका वर्णन ।

भक्ति जो बिभीषणकी कहे ऐसो कौन जन तोपै कछु कहि जात सुनो चित लायके ॥ चलत जहाज परी अटक बिचार कियो कोउ अंगहीन नर दियो ले बहायके ॥ जाय लग्यो टापू ताहि राक्षसनि गोद लिये मोदभरि राजापास गये किलकायके ॥ देखत सिंहासनते कूदि परे नैन भरि याहिके अकार राम देख भाग पायके ॥ २८ ॥

रचि सो सिंहासनपै लै बैठारे ताहि छिन राक्षसनि रीझ देत मानि शुभ घरी है॥ चाहत मुखारबिंद अतिहि आनंदभरी ढरकत नैन नीर टेक टाढ़ो छरी है ॥ तऊ न प्रसन्न होत छिन छिन छीन जोति हूजिये कृपाल कहो मेरी मति डरी है ॥ करो सिंधुपार मेरे यहि सुखसार दिये रतन अपार ल्याए वाही ठौर फिरी है ॥ २९ ॥ रामनाम लिखि शीसमध्य धरि दियो याके यही जलपार करे भाव सांचो पायो है ॥ ताही ठौर बैठ्यो मानो नयो और रूप भयो गयो जो जहाज सोई फिरि करि आयो है ॥ लियो पहिंचानि पूँछ्यो सबसों बखान कियो हियो हुलसायो सुनि विनैकै चढ़ायो है ॥ पर्‍यो नीर कूदि नेकु पाप न परस कर्‍यो हर्‍यो मन देखि रघु-नाथनाम भायो है ॥ ३० ॥

अथ शिवरीजूका वर्णन ।

क०—बनमें रहत नित सिवरी कहत सब चहति टहल साधु तन न्यून-ताई है ॥ रजनीके शेष ऋषि आश्रम प्रवेश करी लकरीन बोझ धरी आवे मन भाई है ॥ न्हाइबेको मग झारी कांकरिन बीनि डारी बेगि उठि जाइ नेकु जाति न लखाई है ॥ उठत सबार कहें कौन धौं बुहारि गयो भयो हिये शोच कोऊ बड़ो सुखदाई है ॥ ३१ ॥ बड़ेई असंग वे मतंग रसरंगभरे धरे देखि बोझ कह्यो कौन चोर आयो है ॥ करे नित चोरी अहो गहो वाहि एक दिन बिना पाए प्रीति वाकी मन भरमायो है ॥ बैठे निशि चौकि देत शिष्य सब सावधान आइ गई गहि लई काँपै तन नायो है॥देखतहि ऋषि जलधारा चली नैननतै बैननसों कह्यो जात कहा कछु पायो है॥ ३२ ॥ दीठिहू न सोंही होत मानि तन गोत छोत परी जाय सोच सोत कैसेकै निकारिये ॥ भक्तिको प्रताप ऋषि जानत निपट नीके केऊ कोटि विप्रताई यापै वारि डारिये॥ दियो बास आश्र-ममें श्रवणमें नाम दियो कियो मुनि रोष सेवा कीनी पाति न्यारिये॥

शिवरीसों कह्यो तुम रामदरशन करो मैं तो परलोक जात आज्ञा प्रभु पारिये ॥ ३३ ॥ गुरुके वियोग हिये दारुण ले शोग दिये जियो नहिं जात तौपै रामआस लागी है ॥ न्हायबेके घाट निशि जातही बुहारि सब भई यों अबार ऋषि देखि व्यथा पागी है ॥ छयो गयो नेकु बहु खीझत अनेक भांति करिकै विवेक गयो न्हान यह भागी है ॥ जलसों रुधिर भयो नाना कृमि भरि गयो नयो पायो शोच तऊ जाने न अभागी है ॥ ३४ ॥ ल्यावे बन बेर लागी रामकी औसेर फल चाखे धरि राखे फेरि मीठे उन्हीं योग हैं ॥ मारगमें रहे जाइ लोचन बिछाइ कभू आवें रघुराई दृग पावें निजभोग हैं ॥ ऐसेही बहुत दिन बीते मग जोवतहिं आइ गए औचकहि मिटे सब सोग हैं ॥ जोपै तन न्यूनताई आई सुधि छीपि जाई पूँछे आप स्योरि कहां ठाढ़े और लोग हैं ॥३५॥ पूँछि पूँछि आए तहा शिवरीको स्थान जहां कहां वह भागवती है देखों दृग प्यासे हैं ॥ आय गई आश्रममें जानिकै पधारे आप दूरिहिते साष्टांग करि चक्षु भासे हैं ॥ हबकि उठाय लई व्यथा तन दूरि गई नई नीर झरी नैन परे प्रेमप्यासे हैं ॥ बैठे सुख पाय फल खायकै सराय वेई कह्यो कहा कहों मेरे मगदुःख नासे हैं ॥ ३६ ॥ करतहैं शोच सब बैठे ऋषि आश्रममें जलको बिगार सो सुधार कैसे कीजिये ॥ आवत सुने हैं बनपथ रघुनाथ कहूँ आवें जब कहि याको भेद कहि दीजिये ॥ इतनेही मांझ सुनि स्योरीके बिराजे आनि गयो अभिमान चलो पग गहि लीजिये ॥ आए खुनसाय कहि नीरको उपाय कहो गहो पग भीलनिके स्वच्छ तन भीजिये ॥ ३७ ॥

अथ खगपति जटायुजूका वर्णन ।

क०–जानकी हरण कियो रावण मरणकाज सुनि सीताबानी खगराज दौरि आयो है ॥ बड़ीये लराई लीन देह बारि फोरि दीन राखे प्राण राम मुख देखबो सुहायो है ॥ आए आप गोद सीस

धारि दृगधार शींच्यो देइ सुधि देइ गति तनहु जरायो है ॥ दशरथतात मानि कियो जलदान यह अति सनमान निजरूप धाम पायो है ॥ ३८ ॥

अथ अंबरीषजूका वर्णन।

क०—अंबरीष भक्तकी जु रीस कोऊ करै और बड़ो मतिबौर क्योंहूं जात नहीं भाषिये ॥ दुरवासा ऋषि सीख सुनी नहिं काहू साधु मानि अपराध शिर जटा खेंचि नाखिये ॥ लेइ उपजाइ कालकृत्या विकरालरूप भूप महाधीर रह्यो ठाढ़ो अभिलाषिये ॥ चक्र-दुःख मानिकै कृशानुतेज राख करी परी भीर ब्राह्मणको भागवत साखिये ॥ ३९ ॥ भाज्यो दशो दिशो सब लोक लोकपालपास गयो नयो तेज चक्र चून किये डारे हैं ॥ ब्रह्मा शिव कही यह टेव तुम बुरी करी दासनिको भेद नहिं जानैं वेद धारे हैं ॥ पहुँचे बैकुंठ जाइ कह्यो दुःख अकुलाइ हाइ हाइ राखो प्रभु खरो तन जारे हैं ॥ मैं तो हूं आधीन तीन गुनको न मान मेरे भक्तवात-सल्य गुण सबहीको टारे हैं ॥ ४० ॥ मोको अति प्यारे साधु इनको अगाध मन करयों अपराध तुम सह्यो कैसे जात है ॥ धाम धन वाम सुत प्राण तन त्याग करे ढरे मेरी ओर निशि भोर मोर बात है ॥ मेरेउ न संतबिन और कछू साँची कहों जावे वाही ठौर जाते मिटैं उतपात हैं ॥ बड़ेई दयालु सदा दीनप्रतिपाल करैं न्यूनता न धरैं काहू भक्ति गात गात है ॥ ४१ ॥ व्हे करि निराश ऋषि आयो नृपपास चल्यो गर्वसों उदास पग गहे दीन भाख्यो है ॥ राजा लाज मानि मृत्यु कहि सनमान करयो टरयो चक्र और कर जोरि अभिलाख्यो है ॥ भक्तन सकाम कभू कामना न चाहत हैं चाहत हों विप्र दूरि करो दुःख चाख्यो है ॥ देखिकै बिकलताई सदा संतसुखदाई आई मनमांझ सब तेज

ढाँकि राख्यो है ॥ ४२ ॥ एक नृपसुता सुनि अंबरीषभक्तिभाव भयो हिये भाव ऐसो वर करि लीजिये ॥ पितासों निशंक व्हैके कही पति कियों मैंही विनै मानिमेरी बेगि चिठ्ठी लिखि दीजिये ॥ पाती लेके चल्यो विप्र क्षिप्र उहि पुरी गयो नयो चाव जान्यो तौपै कैसे तीय धीजिये ॥ कहो तुम जाइ रानी बैठी सत आय मोको बोल्यो न सुहाय प्रभुसेवामांझ भीजिये ॥ ४३ ॥ कह्यो नृपसुता सो जु लीजिये जतन कौन पौन जिमि गयो आवो काम नहीं बियाको ॥ फिरिकै पठायो सुख पायो मैं तो जान्यो यहै बड़ो धरमज्ञ वाके लोभ नहीं तियाको ॥ बोली अकुलाइ मन भक्तिहिं रिझाइ लियो कियो पति मुख नहिं देखों और पियाको ॥ जाइकै निशंक तुम बात यह कहो मेरी चेरी जो न करो तौपै लेहु पाप जियाको ॥ ४४ ॥ कहि विप्र जाय सुनि चाय भई राय गयो दयो ले खड्ग यासों फेरा फेरी लीजिये॥ भयो जु विवाह उतसाह कहूँ मात नाहिं आइ पुर अंबरीष देखि छबि भीजिये ॥ कह्यो नवे मंदिरमैं झारिकै बसेरा देवो देवो सब भोग विभौ नाना सुख कीजिये ॥ पूरब जनम कोऊ मेरे भक्तिगंध हुती जाते मनबंध पायो यहै मान धीजिये ॥ ४५ ॥ रजनीके शेष पतिभौनमैं प्रवेश कियो लियो प्रेमसाथ ढिग मंदिरके आइये ॥ बाहरि टहल पात्र चौका करि रीझि रही गही कौन जाय जामें होत न लखाइये ॥ आवतहि राजा देखि लगै न निमेष क्योंहूँ कौन चोर आयो मेरी सेवा ले चुराइये ॥ देखि दिन तीन फिरि चीन्हिकै प्रबीन कही ऐसो मन जौपै प्रभुमाथे पधराइये ॥ ४६ ॥ लई बात मानि मानो मंत्र ले सुनायो कान होतही बिहान सेवा नीकी पधराई है ॥ करत शृंगार फिरि आपही निहारि रहे लहे नहीं पार दृग झरीसी लगाई है ॥ भई बढ़वार राग भोगसों अपार भाव भक्ति बिसतार रीति पुर सब छाई है ॥ नृपहु सुनत अब लागी चोप देखबेकी आए तत-

काल मति अति अकुलाई है ॥ ४७ ॥ हरे हरे पाँव धरे पौरिया न मने करे खरे अरबरे कब देखों भागभरीको ॥ गए चलि मंदिरलों सुंदरी न सूंघि अंग रंग भीजि रहे द्दग लाइ रहे झरीको ॥ बीन ले बजावै गावै लालन रिझावै त्यों त्यों अति मन भावै कहै धन्य यह घरीको ॥ द्वारपै रह्यो न जाय गई ललचाइ ढिग भई उठि ठाढी देखि राजा गुरु हरीको ॥ ४८ ॥ वैसेही बजावो बीन तानन नवीन लेकै झीन स्वर कान परे जात मति खोइये ॥ जैसे रंग भीजि रही कही सो न जात मोपै तोपै मन नैन चैन कैसे करि गोइये॥करिकै अलापचारी फेरिकै सँवारी तान आइ गयो ध्यान रूप ताहीमांझ भोइये ॥ प्रीति रसरूप भई रीति सब बीति गई नहीं कछु रीति अहो जामें नहीं सोइये ॥ ४९ ॥ बात सुनि रानी और राजा गण नई ठौर भई शिर मोर अब कौन वाकी सरी है ॥ हमहुँ ले सेवा करें पति मति बश करैं धरैं नित ध्यान विषैबुद्धि राखि धरी है ॥ सुनिकै प्रसन्न भयो अति अंबरीष ईश लागी चोप फैलि गई भक्ति घर घरी है ॥ बढ़ै दिन दिन चाव ऐसोई प्रभाव कोऊ पलटे स्वभाव अहो आनंदको भरी है ॥ ५० ॥

अथ विदुरजीका वर्णन ।

क०—न्हातहि विदुरनारि अंगनि प्रक्षाल करि आय गण द्वारकृष्ण बोलिकै सुनायो है ॥ सुनतहि सुरसुधि डारि लै निडरि मानो राख्यो मद भरि दौरि आनिकै चितायो है ॥ डारि दियो पीत पट कटि लपटाइ लियो हियो सकुचायो बेष वेगही बनायो है ॥ बैठी ढिग आइ केरा छीलि छिलका खवाइ आयो पति खीज्यो दुःख कोटि गुनो पायो है ॥ ५१ ॥ प्रेमको बिचारि आप लागे फलसारदेन चैन पायो हिये नारी बड़ी दुःखदाई है ॥ बोले रीझि श्याम तुम कीन बड़ो काम तौपै स्वाद अभिराम कैसी बरुत मैं न पाई है ॥

तिया सकुचाइ कर काटि डारों हाय प्राणप्यारेको खवाइ छीलि छिलकानि भाई है ॥ हितहीकी बात दोऊ कोऊ पार पावै नाहिं नीके ले लड़ावै सोई जाने यह गाई है ॥ ५२ ॥

अथ सुदामाजूका वर्णन ।

क०—बड़ो निहकाम सेर चूनहू न धामढिग आइ निजभाम प्रीति हरिसों जनाई है ॥ सुनि शोच पर्‍यो हियो खरो अरबर्‍यो मन गाढ़ो लेके कर्‍यो बोल्यो हांजू सरसाई है ॥ जावो एक बार वह बदन निहारि आवो जोपै कछू पावो ल्यावो मोको सुखदाई है ॥ कही भली बात सात लोकमैं कलंक ह्वैहै जानियत याही लिये कीन्ही मित्रताई है ॥ ५३ ॥ तिया सुनि कहै कृष्णरूप क्यों न चहै जाइ दहै दुःख आपही सो बचन सुनाए हैं ॥ आई सुधि प्यारेकी बिचारे मति डारे सब धारे मग पग झूमि द्वारावति आए हैं ॥ देखिके विभूति सुख उपज्यो अभूत कोऊ चल्यो मुखमाधुरीके लोचन तिसाए हैं ॥ डरपत हियो ड्योढ़ी लागि मन गाढ़ो कियो लियो कर गहि चाह तहां पहुँचाए हैं ॥ ५४ ॥ देखे श्याम आयो मित्र चित्रवत रहे नेकु हितको चरित्र दौरि रोइ गरे लागे हैं ॥ मानो एक तन भयो ल्यो ऐसे छाति लाइ नयो यह प्रेम छुटे नाहीं अंग पागे हैं ॥ आई दुबराई सुधि मिलनि छुटाई तातें आने जल रानी पाँव धोए भाग जागे हैं ॥ सेज पधराई गुरुचरचा चलाई सुखसागर बुड़ाई आप अति अनुरागे हैं ॥ ५५ ॥ चिरवा छिपाए कांख पूँछे कहा ल्याए मोको अति सकुचाए भूमि तकैं दृग भीजे हैं ॥ खैंचि लई गांठि मूठी एक मुखमांझ दई दूसरी यों लेत स्वाद पाइ आप रीझे हैं ॥ गह्यो कर रानी सुखसानी प्यारो वस्तु पायो बाँटि मानी श्रीसुदामा प्रेमरंग धीजे हैं ॥ श्यामजू बिचारि दीन्ही संपति अपार बिदा भये पै न जानी सार बिछुरन छीजे हैं ॥ ५६ ॥ आए निजग्राम यह अति अभि-

राम भयो भयो पुरद्वारिकासो देखि मति गई है ॥ तिया रँगभीनी संग सतनि सहेली लीनी कीनी मनुहारि यों प्रतीति उर भई है ॥ वहै हरिध्यान रूप माधुरीको पान तासों राखैं निजप्रान जाके प्रीति रीति भई है ॥ भोगकी न चाह ऐसे तन निरवाह करें टरे सोई चाल सुखजाल रसमई है ॥ ५७ ॥

अथ चंद्रहासजूका वर्णन।

क॰—हुतो नृप एक ताको सुत चंद्रहास भयो परी यों विपत्ति धाई लाई और पुर है ॥ राजाको दिवान ताके रही घर आनि बाल आपने समान संग खेलै रस दुर है ॥ भयो ब्रह्मभोज कोऊ ऐसोई संयोग बन्यो आये वे कुमार जहां विप्रनको सुर है ॥ बोलि उठे सबै तेरी सुताको जू पति यहै हुवो चाहै जानि सुनि गयो लाज धुर है ॥ ५८ ॥ पर्‌यो शोच भारी कहा करों यों बिचारी अहो सुता जो हमारी ताको पति ऐसो चाहिये ॥ डारो याहि मारि याको यह है बिचार तब बोलि नीचजन कह्यो मारो हिय दाहिये ॥ लैके गए दूरि देखें बालछबि पूरि हमयोनि परै धूरि दुःख ऐसो अवगाहिये ॥ बोले अकुलाय तोहिं मारेंगे सहाय कौन माँगों एक बात जब कहो तब चाहिये ॥ ५९ ॥ मानि लीनो बोल वे कपोलमधि गोल एक गंडकीको सुत काढि सेवा नीकि कीनी है ॥ भयो तदाकार यों निहार सुखभार भरे नैननकी कोरहिसों आज्ञा वध दीनी है ॥ गिरे मुरझाइ दया आई कछु भाइ भरे ढरे प्रभु ओर मति आनंदसों भीनी है ॥ हुती छठी आंगुरी सुकाटि लई दूषणहु भूषणहु भयो जाइ कहि साँच चीनी है ॥ ६० ॥ वहै देश भूमिमें रहत लघु भूप और और सुख सब एक सुतचाह भारी है ॥ निकस्यो विपिन आनि देखि याहि मोद मानि कीनी खगछांह घेरे मृगपति सारी है ॥ दौरिकै निशंक लियो पाइ निधि रंक जियो

कियो मनभयो सो बधायो श्रीय बारी है ॥ कोऊ दिन बीते नृप भये चित्त चिंते दियो राजको तिलक भाव भक्ति बिसतारी है ॥ ६१ ॥ रहे जाके देश सो नरेश कछु पावे नाहिं बांह बल जोर दियो सचिव पठाइकै ॥ आयो घर जानि कियो अतिसनमान सो पिछानि लियो वहै बाल मार्‍यो छलछाइकै ॥ दई लिखि चीठी जाहु मेरे सुत हाथ दीजो कीजो वही बात जाको आयो लेखि खाइकै ॥ गए पुरपास बाग सेवा मति पाग करि भरि दृग नींद नेकु सोयो सुख पाइकै ॥ ६२ ॥ खेलती सहेलिनसों आई वाही बागमाझ करी अनुराग भई न्यारी देखि रीझी है ॥ पागमधि पाती छबिमाती झुकि खैंचि लई बाँचि खोलि लिख्यो विष देन पिता खीझी है ॥ विषया सुनाम अभिराम दृग अंजनसों विषया बनाई मन भाई रसभीजी है ॥ आई मिलि आलिनमें लालनको ध्यान हिये पिये मद मानो ग्रह आई जब धीजी है ॥ ६३ ॥ उठ्यो चंद्रहास जिहि पास लिख्यो ल्यायो आयो देखि मन भायो गाढे गरेसों लगायो है ॥ देइ कर पाती बात लिखी मो सुहातो बोलि विप्र घरी एक मांझ ब्याह उघरायो है ॥ करी ऐसी रीति डारे बड़े नृप जीति श्रीय देत गई बीति चाव पारपै न पायो है ॥ आयो पिता नीच सुनि घूम आई मीच मानों बानो लखि दूलहको शूल सरसायो है ॥६४॥ बैठ्यो ले एकांत सुत करी कहा भ्रांत सब कह्यो सो वृतांत कर पाती ले दिखाई है ॥ बांचि आंच लागी मैं तो बड़ोई अभागी तोपै मारो मतिपागी बेटी रांड़हू सुहाई है ॥ बोलि नीच जात बात कही तुम जावो मठ आवै तहां कोऊ मारि डारो-मोहिं भाई है ॥ चंद्रहास-जूको भाष्यो देवि पूजि आवों आजु मेरी कुलपूज सदा रीति चलि आई है ॥ ६५ ॥ चलेई करन पूजा देशपति राजा कहि मेरे सुत नांही राज वाहीको दीजिये ॥ सचिवसुवन सो जु कह्यो तुम ल्यावो जावो पावो नाहिं फेरि समै अब काम कीजिये ॥ दौन्यो सुख पाइ

चाइ मगहिमें लियो जाइ दियो सो पठाइ नृप रंगमांझ भीजिये ॥ देवीअपमानते न डरो सनमान करो जात मारि डार्यो या सों भाख्यों भूप लीजिये ॥ ६६ ॥ काहु आनि कही सुत तेरो मार्‍यो नीचनने सींचनि शरीर जल दृग झरी लागी है ॥ चल्यो ततकाल देखि गिर्‍यो व्है बिहाल सीस पाथरसो फोर्‍यो मर्‍यो ऐसोई अभागी है ॥ सुनि चंद्र-हास चलि बेगि मठपास आय ध्याय पग देवताके काटि अंग रागो है ॥ कह्यो तेरो दोषी याहि क्रोध करि मार्‍यों मैंही उठैं दोउ दीजे दान जिये बड़भागी है ॥ ६७ ॥ कर्‍यो ऐसो राज सब देश भक्त राज कियो ढिगको समाज ताकी बात कहा भाखिये ॥ हरि हरि नाम अभि-राम धाम धाम सुने और काम कामना न सेवा अभिलाखिये ॥ काम क्रोध लोभ मद आदि लेके दूरि किये जिये नृप पाई ऐसो नैननिमें राखिये ॥ कही जिती बात आदि अंतलों सुहात हिये पढ़ै उठि प्रात फल जैमिनि है साखिये ॥ ६८ ॥

अथ समुदायका वर्णन ।

क०–कौषारव नाम जो बखान कियो नाभाजूने मैत्रेय अभिराम ऋषि जानि लीजे बातमें ॥ आज्ञा प्रभु दई जाहु विदुर है भक्त मेरो करो उपदेश रूप गुण गात गातमें ॥ चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत ख्यात जाते पलट्यो जनम प्रतिकूल फल घातमें ॥ अक्रूर ध्रुव आदि भए सब भक्त भूप उद्धवसे प्यारे नीके ख्यात पात पातमें ॥ ६९ ॥

अथ कुंतीजूका वर्णन ।

क०–कुंतीकरतूति कैसे करै कौन भूत प्राणी माँगत विपत्ति जासों भाजें सब जन है ॥ देख्यो मुख चाहौं लाल देखे बिन हिये साल हूजिये कृपालु नहिं दीजे बास बन है ॥ देखि बिकुलाई प्रभु आंखि भरि आई फिरि घरहिको ल्याई कृष्ण प्राण तन धन है ॥ श्रवण वियोग धुनि तनक न रह्यो गयो भयो वपु न्यारो अहो एही साँचोपन है॥७०॥

अथ द्रौपदीजूका वर्णन।

क०-दौपदी सतीकी बात कहै ऐसा कौन पटु खेंचतही पट पट कोटिगुने भए हैं॥ द्वारिकाके नाथ कहि बोली जब साथ हुते द्वारिकासों फिरि आए भक्त बानि नए हैं॥ गये दुर्वासा ऋषि बनमें पठाये नीच धर्मपुत्र बोले बिनै आवो पन लए हैं॥ भोजन निबारि तिय आनि कही शोच परचो चाहे तन त्यागूं कह्यो कृष्ण कहूं गए हैं॥७१॥ सुन्यो भागवतीको बचन भक्ति भाव भरचो करचो मन आए श्याम पूज्यो हियकाम है॥ आवतहि कही मोहिं भूँख लागी देवो कछु महा सकुचाए माँगे प्यारो नहि धाम है॥ विश्वके भरनहार धरे हैं अहार अजू हमसों दुरावो कहि बानी अभिराम है॥ लग्यो शाकपत्र पात्र जलसंग पाइ गए पूरण त्रिलोकी विप्र गनै कौन नाम है॥ ७२ ॥

छप्पय-योगेश्वर श्रुतदेव अंग मुचुकुंद प्रियव्रत जेता पृथू परीक्षित शेष सूत शौनक परचेता॥ शतरूपा त्रिसुता सुनिति सति सबहि मदालस॥यज्ञपत्नि व्रजनारि कीय केशव अपने बस॥ ऐसे नर नारी जिते तिनहींके गाऊं जसै ॥ पदपंकज वांछौं सदा, जिनके हरि उर नित बसैं॥ १० ॥

टी०क०-जिनहीके हरि उर नित बसैं तिनहींकी पदरेणु चैन देन आभरण कीजिये॥ योगेश्वर आदि रसस्वादमें प्रवीण महा विप्र श्रुतदेव ताकी बात कहि दीजिये ॥ आये हरि घर देखि गयो प्रेम भर हियो ऊंचो कर करि पट फेरि मति भीजिये॥ जिते साधु संग तिन्हें बिनय प्रसंग कियो कियो उपदेश मोसों बढ़ि पांव लीजिये ॥ ७३ ॥

छप्पय-प्राचीनबर्हि सत्यव्रत रहूगण सगर भगीरथ॥ वाल्मीकि मिथिलेश गए जे जे गोविंदपथ॥ रुक्मागद

हरिचंद भरत दधीचि उदारा ॥ सुरथ सुधन्वा शि-बिरु सुमति अति बलिकी दारा ॥ नील मोरध्वज ताम्रध्वज, अलर्क कीरति राचि हौं ॥ अंघ्रीअंबुज पांसुको जन्म जन्म हौं याचिहौं ॥ ११ ॥

टी०क०—जनम जनमको न मेरे कछु शोच अहो संतपदकंजरेणु सीसपर धारिये ॥ प्राचीनबर्हिक आदि कथा परसिद्ध जग उभै बालमीक बात चितते न टारिये ॥ भए भील संग भील ऋषिसंग ऋषि भए रामदर्शन पाय लीला बिसतारिये ॥ जिन्हे जग गाइ क्योंहूं सकै न अघाइ चाइ भाइ भरि हियो भरि नैन भरि डारिये ॥ ७४ ॥

अथ श्वपच वाल्मीकिजूका वर्णन।

क०—हुतो वाल्मीक एक श्वपच सुनाम ताको श्यामल प्रगट कियो भारतमें गाइये ॥ पांडवनिमधि मुख्य धर्मपुत्र राजा आप कीनो यज्ञ भारी ऋषि आये भूमि छाइये ॥ ताको अनुभाव शुभ शंखसों प्रभाव कहे जोपै नहिं बाजे तौ अपूरणता आइये ॥ सोई बात भई वह बाज्यो नाहि शोच परयो पूँछयो प्रभुपास याकी न्यूनता बताइये॥७५॥बोले कृष्णदेव याको सुनो सब भेव तौपै नीके मानि लेव बात दूरि समझाइये ॥ भाग-वत संत रसवंत कोऊ जेंयो नाहिं ऋषिन समूह भूमि चहूं दिशि छाइये॥ जोपै कहो भक्त नाहि नाहि कैसे कहो गहो ग्रास एक ओर कुल जा-तीसों बहाइये ॥ दासनके दास अभिमान किन बास कहूं पूरणकी आस तौपै ऐसो लै जिवाँइये ॥ ७६ ॥ ऐसो हरिदास पुरआसपास दीसे नांहिं बास बिन कोऊ लोक लोकनमें पाइये ॥ ते रंई नगरमांझ निशि दिन भोर साझ आवै जाइ तौपै कहूं बात न जनाइये ॥ सुनि सब चौंकि परे भाव अचिरजभरे हरे मन नेन अजू बेगिही बताइये ॥ कहा नाम कहा ठाम जहां हम जाय देखें लेखें करि भाग धाय पाँय लपटा-

इये ॥ ७७ ॥ जिते मेरे साधू कभू चाहें न प्रकाश भयो करों जु प्रकाश मानें महादुःखदाइये ॥ मोको परयो शोच यज्ञपूरणकी लोच हिये लिये वाको नाम जनि गाम तजि जाइये ॥ ऐसे तुम कहो जामें रहो न्यारे प्यारे सदा हमहिं लिवाय ल्याय नीकेके जिंवाइये ॥ जावो वाल्मीकि घर बड़ो अव्यलीक साधु कियो अपराध हम दियो जो बताइये ॥ ७८ ॥ अर्जुन औ भीमसेन चले इन मित्रनको अंतर उघारि कह्यो भक्तिभाव दूर है ॥ पहुँचे भवन जाय चहूँ दिशि फिरे आय परे भूमि झूमि घर देख्यो छबिपूर है ॥ आये नृपराजनको देखि तजे काजनको लाजनसों कांपि कांपि भयो मन चूर है ॥ पाँवनको धारिये जू जूंठनि ले डारिये जू पाप गृह टारिये औ कीजे भाग भूर है ॥ ७९ ॥ जूंठनि ले डारे सदा द्वारको बुहारों नाहिं औरको निहारों अजू यही साचोपन है ॥ कहो कहि जेंवो कछु पाछे ले जिंवावो हमें जानि गई रीति भक्ति भाव तुमतन है ॥ तब तो लजानो हिये कृष्णपै रिसानो नृप चाहो सोई ठानो मेरे संग कोऊ जन है ॥ भोरही पधारो अब यही उर धारो और भूलि न बिचारो कही भले जोपै मन है ॥ ८० ॥ कही सब रीति सुनि धर्मपुत्र प्रीति भई करी लै रसोंई कृष्ण द्रौपदी सिखाई है ॥ जेतिक प्रकार सब व्यंजन सुधारि करो आजु तेरे हाथनकी होती सफलाई है ॥ ल्याय जा लिवाय कहे बाहिर जिंवाय देवो कहि प्रभु आप ल्यावो अंक भरि भाई है ॥ आनिकै बैठायो पाकशालामें रसाल ग्रास लेत बाज्यो शंख हरि दंडकी लगाई है ॥ ८१ ॥ सीथ सीथ प्रति क्यों न बाज्यो कछु लाज्यो कहा भक्तको प्रभाव तूं न जानत यों जानिये ॥ बोल्यो अकुलाइ जाइ पूँछो अजू द्रौपदीको मेरो दोष नाहिं यह आप मन आनिये ॥ मानि साँच बात जाति बुद्धि आइ देखि याहि सबहि मिलाई मेरी चातुरी बिहा-

नियै ॥ पूँछेते कही है बालमीकमें मिलायो याते आदि प्रभु पायें पाऊं स्वाद उमानिये ॥ ८२ ॥

अथ रुक्मागदजूका वर्णन।

क०—रुक्मागद बाग शुभ गंध फूल पागि रहे करि अनुराग देव-वधू लेन आवहीं ॥ रह गई एक काँटो चुभ्यो पग बैंगनको सुनि नृप मालीपास आए सुख पावहीं ॥ कहो को उपाय स्वर्गलोकको पठाय दीजे करे एकादशी जल धेरे कर जावहीं ॥ व्रतको तो नाम इहि ग्राम कोउ जाने नहीं कीनो व्है अजान काल्हि लावो गुन गावहीं ॥ ८३ ॥ फेरी नृप डौंड़ी सुनि बनिककी लौंड़ी भूखि रही ही कनोड़ी निशि जागि उन मारिये ॥ राजा ढिग आनि करि दियो व्रतदान भई यों तिय उड़ानि निजलोकको पधारिये ॥ महिमा अपार देखि भूपने विचारि याको कोउ अन्न खाय ताहि बांधि मारि डारिये ॥ याहिके प्रभाव भाव भक्तिको बिस्तार भयो नयो चोज सुनो सब पूरी ले उधारिये ॥ ८४ ॥ एकादशीव्रतकी सँचाई ले देखाई राजा सुताकी निकाई सुनो नीके चित्त लाइके ॥ पिता घर आयो पति भूँखने सतायो अति माँगे तियापास नहीं दियो यह भाइके ॥ आजु हरिवासर सो तासर न कोऊ पूजे डर कहा मीचको यों मानि सुख पाइके ॥ तजे उन प्राण पाए बेगि भगवान बधू हिये सरसान भई कह्यो पन गाइके ॥ ८५ ॥

अथ समुदायका वर्णन।

क०—सुनो हरिचंदकथा बिथा बिन द्रव्य दियो तथा नहिं राखी बेंच्यो सुत तिया तन है ॥ सुरथ सुधन्वाजुसों दोषके करत मरे शंख औ लिखित विप्र भयो मैलो मन है ॥ इंद्र औ अगनि गए शिबिपैं परीक्षा लेन काटि दियो मांस रीझि साँचो जान्यो पन है ॥ भरत दधीचि आदि भागवतबीच गाए सबनि सुहाए,जिन दियो तन धन है ॥ ८६॥

अथ बलिकी दारा विंध्यावलीजीका वर्णन ।

क०–विंध्यावलि तियासी न देखी कहूं तिया नैन बांध्यो प्रभु पिया देखि कियो मन चौगुनो ॥ करि अभिमान दान देन बैठ्यो. तुमहीको कियो अपमान मैं तो मान्यो सुख सौगुनो ॥ त्रिभुवन छीनि लियो दियो बैरी देवतानि प्राणमात्र रहे हेरि आन्यो नहिं औगुनो ॥ ऐसी भक्ति होइ जोपै जागै रहै सोई अहो रहै भवमांझ तौपै लागै नहीं भौंगुनो ॥ ८७ ॥

अथ मोरध्वजजूका वर्णन ।

क०–अर्जुनके गर्व भयो कृष्ण प्रभु जानि लयो दियो रसभारी याहिं रोग ज्यों मिटाइये ॥ मेरे एक भक्त आहि तोको ले दिखाऊँ ताहि भये विप्रवृद्ध संग बाल चलि जाइये ॥ पहुँचत भाष्यो जाइ मोरध्वज राजा कहां बेगि सुधि देवो काहू बात या जनाइये ॥ प्रभुसेवा करो नेकु रहो पाँव धरो जाइ कहो तुम बैठो कहि आगसी लगाइये ॥ ८८ ॥ चले अनखाय पाय गहि अटकाय जाय नृपको सुनाय ततकाल दौरि आये हैं ॥ बड़ी कृपा करी आजु फरी चाहबेलि मेरी निपट न बेल फल खायो जाते पाये हैं ॥ दीजे आज्ञा मोहिं सोई कीजे सुख लीजे वही पीजे रसबानि मेरे नैन ले सिराये हैं ॥ सुनि क्रोध गयो मोद भयो सो परीक्षा हिये लिये चित्त चाव ऐसे बचन सुनाये हैं ॥ ८९ ॥ देवकी प्रतिज्ञा करो करी जू प्रतिज्ञा हम जाही भांति सुख तुह्मे सोई मोको भाई है ॥ मिल्यो मग सिंह इहि बालकको खाये जात कही खावो मोहिं नहिं याहि सुखदाई है ॥ काहू भाँति छोड़ों नृप आधो जो शरीर आवै तोहिं याहि तजों कहि बात यों जनाई है ॥ बोलि उठी तिया अरधांगी मोहिं जाइ देवो पुत्र कहे मोको लेवो और सुधि आई है ॥ ९० ॥ सुनो

एक बात सुत तिया ले करौंत गात चीरें धीरे भीरे नाहिं पीछे उन भाखिये ॥ कीनी वाही भांति अहो नासा लगि आयो जब ढरयो दृग नीर भीर बाकरी न चाखिये॥चले अनखाय गहि पाँय सो सुनाय बैन नैन जल आयो अंग काम किहि नाखियें ॥ सुनि भरि आयो हियो निजतनय श्याम कियो दियो सुखरूप बिथा गई अभिलाखिये ॥११॥ मोपै तो न दीयो जाइ निपट रिझाइ लियो तऊं रीझि हिये बिना मेरे हिये साल है ॥ माँगो बर कोट चोट बदलो न चूकत है सूखत है मुख सुधि आए वही हाल है ॥ बोल्यो भक्त राज तुम बड़े महाराज कोऊ थोरेई करत काज मानो कृतजाल है ॥ एक मोको दीजे दान दियो जू बखानि वेगि साधूपै परीक्षा जिन करो कलिकाल है ॥ १२ ॥

अथ अलर्कजूका वर्णन।

अलरक कीरतिमें राचो नित साँचो हिये किये उपदेशहू न छूटै विषैवासना ॥ माताजू मदालसाकी बड़ियै प्रतिज्ञा सुनो आवे जो उदर मांझ फेरि गर्भ आसना ॥ पतिको निहारो ताते रह्यो छोटो कारो वाको लेगये निकासि मिलि काशी नृपशासना ॥ मुद्रिका उघारि औ निहारि दत्तात्रयजूको भये भवपार करि प्रभुकी उपासना ॥ १३ ॥

छप्पय–ऋभु इक्ष्वाकू ऐल गाधि रघु अंग शतधन्वा ॥ अमूर्ति अरु रंतिदेव उत्तंक भूरिदेव वैवस्वतमन्वा ॥ नहुष ययाति दिलीप पुरुष यदु गुह मान्धाता ॥पिप्पल निमि भारद्वाज दक्ष शरभंग संघाता॥ संजय शमीक उत्तानपाद, याज्ञवल्क्य जग यशभरे तिन चरणधूरि भूरि मो शिर, जे जे हरिमाया तरे॥

अथ रंतिदेवजूकी वर्णन।

क०–अहो रंतिदेव नृप संतहि दुष्यंतवंश अतिहि प्रशंस सो आका-

शवृत्ति लई है ॥ भूँखेको न देखि सके आवे सो उठाइ देत नेत नहिं करे भूँखे देह छीन भई है ॥ चालीस औ आठ दिन पीछे जल अन्न आयो दियो विप्र शूद्र नीच श्वान यह नई है ॥ हरिहिं निहोर उनमांझ तब आये प्रभु भाये जगदुःख जिते भोगो भक्ति छई है ॥ १४ ॥

अथ गुहरामजूका वर्णन ।

क०—भील नीको राजा गुह राम अभिराम प्रीति भयो बनवास मिल्यो मारगमें आइकै ॥ करो यह राज जू विराज सुख दीजे मोको बोले चैनसाज तज्यो आज्ञा पितु पाइकै ॥ दारुण वियोग अकुलात दृग अश्रुपात पीछे लोहू जात वह सकै कौन गाइकै ॥ रहे नैन मूंदि रघुनाथ बिन देखे कहा अहो प्रेमरीति मेरे हिये रही छाइकै ॥ १५ ॥ चौदह बरष पाछे आये रघुनाथ नाथ नाथके जे भील कहे आए प्रभु देखिये ॥ बोल्यो अब पाऊँ कहां होति न प्रतीति क्योंहूं प्रीति करि मिले राम कही मोको पेखिये ॥ परसि पिछाने लपटाने सुखसागर समाने प्राण पाये मानो भाल भाग लेखिये ॥ प्रेमकी जो बात क्योंहूं बानीमें समात नहीं अति अकुलात कहो कैसे कै बिशेखिये ॥ १६ ॥

छप्पय—कवि हरि करभाजनै भक्तिरत्नाकर भारी ॥ भारी अंतरिक्ष अरु चमस अनन्यता पधति उघारी॥ प्रबुध प्रेमकी राशि भूरिदा आविरहोता॥ पिप्पल द्रुमिल प्रसिद्ध भवाब्धि पारके पाता॥ जयंतीनंदन जगतके त्रिबिधतापआमयहरण॥ निमि अरुनव योगेश्वर पाद त्राणकी हो शरण १३।श्रवण परीक्षितसुमति व्यास सावक कीरतन॥ सुठि सुमिरन प्रह्लाद प्रथुपूजा कमला चरन निमन॥ वंदन सुफलकसुवनदास दंपतीकपीश्वर।

सख्यत्व पार्थ समर्प्पण आत्म बलीधर ॥ उपजीवी इन नामके, एते त्राता अगतिके ॥ पदपराग करुणा करो, जे नियंता नवधा भक्तिके ॥ १४ ॥

अथ परीक्षितजूका वर्णन ।

टी०क०-श्रवणरसिक कहूं सुने न परीक्षितसे पानहू करत लागै कोटि गुणी प्यास है ॥ मुनिमनमांझ क्योंहू आवत न ध्याव-तहू वही गर्भमांझ देखि आयो रूपरास है ॥ कही शुकदेवजूसों टेव मेरी लीजे जानि प्राण लागे कथा नहीं तक्षकको त्रास है ॥ कीजिये परीक्षा उर आनि मति सानी अहो बानी बिरमानी जहां जीवन निरास है ॥ ९७ ॥

अथ श्रीशुकदेवजूका वर्णन ।

टी०क०-गर्भते निकसि चले बनहीमें कियो बास व्याससे पिताको नहिं उत्तरहु दियो है ॥ दशमश्लोक सुनि गुनि मति हरि गई लई नई रीति पढ़ि भागवत लियो है ॥ रूप गुण भर सह्यो जात कैसे करि आए सभा नृप ढरि भीज्यो प्रेमरस हियो है ॥ पूंछे भक्त भूप ठौर परे भौंर जाइ गाइ उठे जबै मानो अबै रंगझर कियो है ॥ ९८ ॥

अथ प्रल्हादजूका वर्णन ।

क०-सुमिरण साँचो कियो लियो देखि सबहीमें एक भगवान कैसे काटे तरवार है ॥ काटियो खडग जल बोरी सकती है जाकी ताहि-को निहारे चहुं ओरसों अपार है ॥ पूंछेते बतायो खंभ तहांही दिखायो रूप प्रगट अनूप भक्तबानिहिसों प्यार है ॥ दुष्ट डारयो मारि गरे आँतें लई डारि तऊ क्रोधको न पार कहा कियो यों वि-चार है ॥ ९९ ॥ डरे शिवआदि सब देख्यो नहीं क्रोध ऐसो आ-वत न ढिग कोउ लक्ष्मीहूको त्रास है ॥ तबतो पठायो प्रहलाद अहलाद महा अहो भक्ति भाव पग्यो आयो प्रभुपास है ॥ गोदमें

उठाइ लियो सीसपर हाथ दियो हियो हुलसायो कहि बानी विनै-रास है ॥ आई जग दया लागी परी श्रीनृसिंहजूको अरचो यों छु-टावो कर्यो माया ज्ञाननाश है ॥ १०० ॥

अथ श्वफल्कसुवन अक्रूरजीका वर्णन ।

चले अक्रूर मधुपुरीते बिसूरि नैन चली जलधारा कब देखों छबि-पूरको ॥ सगुन मनावे एक देखिबोई भावे देहसुधि बिसरावे लोट्यो लखि पगपूरको ॥ बंदन प्रवीन चाह निपट नवीन भई दई शुकदेव कहि जीवनकी मूरको ॥ मिले रामकृष्ण झिले पाइकै मनोरथको हिये दृग रूप किये चूर चूर चूरको ॥ १०१ ॥

अथ बलिराजाजूका वर्णन ।

दियो सर्वस्व करि अति अनुराग बलि पागि गयो हियो प्रहलाद सुधि आई है ॥ गुरु भरमावे नीति कहि समझावे बोलि उरमें न आवे किती भीत उपजाई है ॥ कह्यो जोई कियो सांचो भाव-पन लियो अहो दीनो डर हरिहूने मति न चलाई है ॥ रीझे प्रभु रहे द्वार भये बश हार मानि श्रीशुक बखानी प्रीतिरीति सोई गाई है ॥ २ ॥

छप्पय–शंकर शुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना॥ विष्वक्सेन प्रह्लाद बलिरु भीष्म सु जग जाना॥ अर्जुन ध्रुव अंबरीष बिभीषण महिमा भारी॥ अनुरागी अक्रूर सदा उद्धव अधिकारी॥ भगवतभक्त उच्छिष्टकी, कीर-ति कहत सुजान॥ हरिप्रसाद रसस्वादके, भक्त इते पर-धान॥ १५। अगत्स्य पुलस्त्य पुलह च्यवन वसिष्ठ सौभ-रि ऋषि॥ कर्दम अत्रि ऋचीक गर्ग गौतम व्यास ऋषि॥ लोमश भृगु दालभ्य अंगिरा शृंगिप्रकाशी॥ मांडव्य वि-श्वामित्र दुर्वासा सहस्र अट्ठाशी॥ याज्ञवल्क्य जामदग्नि

मर्यादसि कश्यप परवत पाराशर पदरज धरों॥ध्यान चतुर्भुज चित्त धर्‍यो,तिन्हे शरण हौं अनुसरों॥१६॥ ब्रह्म विष्णु शिवलिंगपद्म स्कंद विस्तारा॥वामन मीन वराह अग्नि अरु कूर्म उदारा ॥ गरुड नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त श्रवण शुचि॥ मार्कंड ब्रह्माण्ड कथा नाना उपजे रुचि ॥ परम धर्म श्रीमुखकथित, चतुरश्लोकी निगम तत ॥ साधन साधि सत्रह पुराण, फलरूपी श्रीभागवत ॥ १७॥ मनुस्मृति आत्रेय वैष्णवी हारित यामी ॥ याज्ञवल्क्य अंगिरा शनैश्चर समृतक नामी॥ कात्यायनि शांडिल्य गौतमी वशिष्ठ दाषी ॥ सुरगुरु आशा तापी पराशर क्रतमुनि भाषी ॥ आशा पाश उदार धीर, परलोक लोक साधनसो ॥ दस आठ स्मृति जिन उच्चरी, तिनपदसरासिज भाल सो॥१८॥ सृष्टि विजयी जयंत नीतिपर शुचि रविनीता ॥ राष्ट्रवर्धन निपुण सुराष्ट्र परम पुनीता॥ अशोक सदा आनंद धर्मपालक तत्ववेता ॥ मंत्रीवर्य सुमंत चतुर्युग मंत्री जेता॥ अनायास रघुपति प्रसन्न, भवसागर दुस्तर तरें॥ पावें भक्ति अनपायिनी, जे रामसचिवसुमिरण करें ॥१९॥ दिनकरसुत हरिराज वालि बछ केशरि औरस॥ दधिमुख द्विविद मयंद रीछपति सम कोपौरस ॥ उल्का सुभट सुसेन दरीमुख कुमुद नील नल ॥ शरभंग गै गवाक्ष पनस गंधमादन अतिबल॥ पद्म अठारह यूथपाल, रामकाज भट भीरके ॥ शुभ दृष्टि

दृष्टि मोपर करो, जे सहचार रघुबीरके ॥२०॥ धरानंद ध्रुवनंद तृतीय उपनंद सुनागर ॥ चतुर्थ तहां अभिनंद नंद सुखसिंधु उजागर ॥ सुनंद पशुपाल निर्मल निश्चय अभिनंदन ॥ करमा धरमानंद अनुज विदित वल्लभ जगवंदन। आसपास वा बगरके, जहां बिहरत पशुपशु छंद ॥ ब्रज बड़े गोप पर्जन्यके, सुत नीके नव नंद ॥ २१ ॥ नंद गोप उपनंद ध्रुव धरा नंद महरि यशोदा ॥ कीरतिदा वृषभानुकुँवरि सहचरि विहरति मन मोदा ॥ मधुमंगल सुबल सुबाहु भोज अर्जुन श्रीदामा ॥ मंडलि ग्वाल अनेक श्यामसंगी बहुनामा ॥ घोषनिबासनकी कृपा सुर नर वांछित आदि अज अज ॥ बाल वृद्ध नर नारी गोप, हौं अर्थी उन पादरज ॥२२॥ रक्तक पत्रक अवर पत्र सबही मन भावे ॥ मधुकंठी मधुवर्त रसाल विशाल सुहावे ॥ प्रेमकंद मकरंद सदा आनंद चंद्रहासा ॥ पयद बकुल रसदान शारदा बुद्धि प्रकासा ॥ सेवासमै विचारिकै, चारु चतुर चितकी लहैं ॥ ब्रजराज सुवन संग सदन वन, अनुग सदा ततपर रहैं ॥२३॥ प्लक्ष शाल्मली बहुत राजऋषि ॥ कुश पवित्र पुनि क्रौंच कौन महिमा जाने लषि ॥ शाक विपुल बिस्तार प्रसिद्ध नामी अतिपुष्कर ॥ पर्वत लोकालोक ओक टापू कंचन धर ॥ हरिभृत्य बसत जे जे जहां, तिनसों नितप्रति काज ॥ सप्तद्वीपमें दास जे, ते मेरे शिरताज ॥२४ ॥ इलावर्त आधीश

संकर्षण अगुग सदाशिव ॥ रम्यक मछ मनु दास हि-
रणमय कूर्म अर्यम इव॥ कुरु वराह भूभृत्य वर्ष हरि
नृसिंह प्रहलादा ॥ किंपुरुष राम कपि भरत नारायण
वीणानादा ॥ भद्राश्व ग्रीव भद्रश्रवा, केतुमाल कम-
ला अनूप ॥ मध्यद्वीप नवखंडमें,भक्त जिते मम भूप
॥ २५ ॥ नारायणको बदन निरंतर नाहीं देखें ॥ प-
लक परै जो बीच कोटि युग जात न लेखें ॥ तिनके
दर्शनकाज गये तहां वीणा धारी ॥ श्याम दई कर
सेन उलटि अब नहिं अधिकारी ॥ नारायण आ-
ख्यान दृढ़, तहां प्रसंग नाहिन तथा ॥ श्वेतद्वीपमें
दास जे. श्रवण सुनो तिनकी कथा ॥ २६ ॥

टी०क०–श्वेतद्वीपवासी सदा रूपके उपासी गए नारद विलासी उपदेशआश लागी है ॥ दई प्रभुसैन जिन आवो इहि ऐन दृग देखो सदा चैन मति अति अनुरागी है ॥ फिरे दुख पाइ जाइ कही श्रीवैकुंठनाथ साथ लिये चलि लखो भक्ति अंग पागी है ॥ देख्यो एक सर खग रह्यो ध्यान धरि ऋषि पूँछे हरि कहौ कह्यो बड़ो बड़भागी है॥३॥ बरष हजार बीते भए नाहिं चित चितै प्यासोई रहत तौपै पानी नहिं पीजिये ॥ पावै जो प्रसाद जब जीभसो सवाद लेत लेत नहीं और याकी मति रसभीजिये ॥ लीजै बात मानि जलपान करि डारि दियो लियो चोंच भारि दृगभरि वुद्धि धीजिये ॥ अचरज देखि चष लगे न निमेष क्योहूं चहूँ दिशि फिर्‌यो अब सेवा याकी कीजिये ॥ ४॥ चलो आगे देखौ कोउ रहे न परेखो भाव भक्ति करि लेखो गए द्वीप हरि गाइये ॥ आयो एक जन धाइ आरति समै बिहाइ खैंचि लिये प्राण फेरि बधू याकी आइये ॥ वही इन कही पति देखे नहीं मही पर्‌यो

हर्यो याको जीव तन गिर्यो मन भाइये ॥ ऐसे पुत्र आदि आये संचि हितमें दिखाये फेरिकै जिंवाये ऋषि गाये चित लाइये ॥ १०५ ॥

छप्पय–इलापुत्र मुख अनंत अनंतकीरति विस्तारत॥पद्मशंकु पण प्रगट ध्यान उरते नहिं टारत॥अश्रुकमल बासुकी अजित आज्ञाअनुवर्ती ॥ कर्कोटक तक्षक सुभद्र सेवा शिर धर्ती ॥ आगमोक्ता शिवसंहिता, अगर एकरस भजनरति ॥ उरग अष्टकुल द्वारपाल, सावधान हरिधाम थिति॥२७॥श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु ॥ विष्णुस्वामी वोहित्त सिंधु संसारपार कर ॥ मध्वाचारय मेघ भक्ति सर ऊसर भरिया॥ निंबादित्य आदित्य कुहर अज्ञान जु हरिया॥ जनम करम भागवत धरम. संप्रदाय थापी अघट॥ चौबीस प्रथम हरि वपु धरे, त्यों चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट ॥ २८ ॥

अथ निंबादित्यजूका वर्णन।

टी०क०–निंबादित्य नाम जाते भयो अभिराम कथा आयो एक दंडी ग्राम न्योतो करि आए हैं ॥ पाकको अबार भई संध्या मानि लई यति रतिहु न पाऊं बेद बचन सुनाए हैं ॥ आंगनेमें निंब तापै आदित दिखायो वाहि भोजन करायो पाछे निशि चिन्ह पाए हैं ॥ प्रगट प्रभाव पेखि जान्यो भक्तिभाव जग दाँव पाइ नाव पर्यो हर्यो मन गाएहैं॥६॥

दोहा–रमापति रामानुज, विष्णुस्वामि त्रिपुरारि ॥
निंबादित्य सनकादिक,मधुकर गुरुमुख चारि॥ २९

छप्पय–विष्वक्सेन मुनिवर्य्य सपुन शठकोप प्रनीता ॥ बोपदेव भागवत लुप्त उधर्यो नवनीता ॥ मंगल

मुनि श्रीनाथ पुंडरीकाक्ष परमयश ॥ राममिश्र रसराशि प्रगट परताप परांकुश ॥ यामुन मुनि रामानुज, तिमिरहरण उदय भान॥संप्रदायशिरोमणि सिंधुजा, रच्यो भक्तिवितान॥३०॥गोपुर व्है आरूढ़ ऊंच स्वर मंत्र उचारयो ॥ सूते नर परे जागि बहत्तरि श्रवणनि धारयो ॥ नित नेई गुरु देव पद्धति भई न्यारी न्यारी॥ कुरु तारक शिष्य प्रथम भक्ति वपु मंगलकारी ॥ कृपणपाल करुणासमुद्र, रामानुजसम नहिं बियो ॥ सहस्रास्य उपदेश करि, जगत उद्धारण जतन कियो ॥ ३१

टी०क०–आस्य सो वदन नाम सहस्र हजार मुख शेषअवतार जानो वही सुधि आई है ॥ गुरुउपदेश मंत्र कह्यो नीके राख्यो अंत्र जपतहि श्यामजूने मूरति दिखाई है ॥ करुणानिधान कहि सब भगवान पावे चढ़ि दरवाजे सो पुकारयो धुनि छाई है ॥ सुनि शिष लियो यों बहत्तरिहि सिद्ध भये नये भक्ति चोज यह रीति लेके गाई है ॥ ७ ॥ गये नीलाचल जगन्नाथजूको देखिबेको देख्यो अनाचार सब पंडा दूरि किये हैं ॥ संग ले हजार शिष्य रंगभरी सेवा करें धरें हिये भाव गूढ़ दरसाइ दिये हैं ॥ बोले प्रभु वेई आवें करें अंगीकार मैं तो प्यारहीको लेत कभू औगुन न लिये हैं ॥ तऊ दृष्टि कीनी फिरि कही नहिं कान कीनी लीनी वेदबानी विधि कैसे जात छिये हैं ॥ ८ ॥ जोरावर भक्तसों बसाइ नहीं कही किती रतिहू न ल्यावे मन चोज दरसायो है ॥ गरुड़को आज्ञा दई सोई मानि लई उन शिष्यनसमेत निजदेश छोंड़ि आयो है ॥ जागिके निहारे ठौर और ही मगन भये दये यों प्रगट करि गूढ़भाव पायो है ॥ वेई सब सेवा करैं श्याममन हरैं सदा सांचो प्रेम हियेमाहिं प्रभुजू दिखायो है ९

छप्पय–श्रुतप्रज्ञ श्रुतदेव ऋषभ पुहकर ऋभु ऐसे॥ श्रुतिधामा श्रुतिउदधि पराजित वामन जैसे॥रामानुज गुरुबंधु विदित जग मंगलकारी॥ शिवसंहिता प्रणीत ज्ञान सनकादिक सारी॥ इंदिरापद्धति उदरधी, सभा साखि सारंग कहे॥ चतुर महंत दिग्गज चतुर, भक्ति भूमि दाबे रहे॥ ३२॥ मालाधारी मृतक बह्यो सरितामें आयो॥ दाहकृत्य ज्यों बंधु न्योति सब कुटुंब बुलायो॥ नाक सकोचहिं विप्र हरिते हरिजन आये॥ जेंवत देखे सबनि जात काहू पाये॥ लालाचारज लक्षधा, प्रचुर भई महिमा जगति श्रीआचारज जामातकी, कथा सुनत हरि होइ रति॥ ३३॥

टी०क०–आचारजको जामात बात ताकी सुनो नीकेकरि पायो उपदेश संत बंधुकरि मानिये॥ कीजे कोटिगुणी प्रीति तौपै नवनीतरीति ताते इति करो याते घट तीन आनिये॥ मालाधारी तनु साधु सरितामें बह्यो आयो ल्यायो घर फेरिकै विमान सब जानिये॥ गावत बजावत ले नीरतीर दाह कियो हियो दुख पायो सुख पायो समाधानिये॥ ११०॥ कियो सो महोछो ज्ञाति विप्रनको न्योतो दियो लियो मानि आयो नाहिं शंका दुःखदाइये॥ भये एक ठौर माया कीन्हे सब बौरे कछु कहे बात औरे मरी देही बही आइये॥ याते नहिं खात वाकी जानत न न जाति पांति बड़ो उतपात घर ल्याइ जाइ दाइये॥ मग अवलोकि उत परचो सुनि शोक हिये जिये आइ पूँछे गुरु कैसेकै निवाइये॥ १११॥ चले श्रीआचारज ये वारिजवदन देखि करिहि साष्टांग बात कहि सो जनाइये॥ जावो निहशंक वे

प्रसाद कौन जाने रंक जानि जे प्रभाव आवे बेगि दुखदाइये ॥ देखे नभ भूमिद्वार ऐहै निराधार जन बैकुंठनिवासी पाति ढिग व्हैके आइये ॥ इन्है अब जाने देवो जिनि कछु कहो अहो गहो करो हाँसी जब घर जाइ खाइये ॥ ११२ ॥ आय देखि पारषद गयो गिरि भूमि सद हद करी कृपा यह जानि निजजनको ॥ पायो लै प्रसाद स्वाद कहि अहलाद भयो नयो लयो मोद जान्यो सांचो संतपनको ॥ बिदा व्है पधारे नभमगमें सिधारे विप्र देखत बिचारे द्वार बिथा भई मनको ॥ गयो अभिमान आनि मंदिर मगन भयो नयो दृगलाज बीनि बीनि लेत कनको ॥ ११३ ॥ पाये लपटाये अंग धूरिमें लुटाये कहे करो मन भाये और दीन बहु भाख्यो है ॥ कही भक्तराज तुम कृपामैं समाज पायो गायो यों पुराणनमें रूप नैन चाख्यो है ॥ छांड़ो उपहास अब करो निजदास हमैं पूजे हिये आस मन अति अभिलाख्यो है ॥ किये परशंस मानो हंस ये परम कोऊ ऐसे जस लाखभांति घर घर राख्यो है ॥ ११४ ॥

छप्पय–गुरु गमन कियो परदेश शिष्यनि स्वर्धुनी दृढ़ाई ॥ एक मंजन नित पान एक हृदवंदन कराई ॥ गुरुगंगामें प्रवेश शिष्यको बेगि बुलायो ॥ विष्णुपदी भय जानि कमलपत्रनपर धायो ॥ पादपद्म तादिन प्रगट, सब प्रसन्न मुनि परमरुचि ॥ श्रीमारग उपदेश-कृत, श्रवण सुनो आख्यान शुचि ॥ ३४ ॥

टी०क०–देववधुनीतीर सो कुटीर बहु साधु रहे रहे गुरु भक्त एक न्यारो नहीं व्हे सके ॥ चले प्रभु गांव जिन तजो बलि जांउ कहि करो दास सेवा गंगामेंही कैसे छ्वै सके ॥ क्रिया सब कूप करे विष्णुपदी ध्यान धरे रोसभरे संतश्रेणी भाव नहीं भ्वै सके ॥ आये ईश जानि दुःख मानि सो बखान कियो आनि मन जानि बात अंग कैसे

ध्वै सके ॥ ११५ ॥ चले ले अन्हान संग गंगामें प्रवेश कियो रंगभरी बोले सो अँगोछा बेगि ल्याइये ॥ करत बिचार शोचसागर न पावे पार गंगाजू प्रगट कह्यो कंजनपै आइये ॥ चल्योई अधर पग धरे सो मधुर जाय प्रभुहाथ दियो लियो तीर भीर छाइये ॥ निकसत धाय चाय पाँय लपटाय गये बड़ोई प्रताप यह निशि दिन गाइये ॥११६॥

छप्पय–देवाचारज द्वितीय महा महिमा हरियानंद॥ तस्य राघवानंद भये भक्तनको मानद ॥ पत्रावलंब पृथिवी करि काशी स्थाई॥चारि वरण आश्रम सबहोको भक्ति दृढ़ाई॥ तिनके रामानंद प्रकट,विश्वमंगल जिहिं वपु धर्‍यो ॥श्रीरामानुजपद्धति प्रताप, अवनि अमृत व्है अनुसर्‍यो॥ ३५ ॥ अनंतानंद कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावात नरहरि॥ पीपा भावानंद रैदासधना सेन सुर सुरकी घर हरि॥औरौ शिष्य प्रशिष्य एकते एक उजागर॥ विश्वमंगल आधार भक्ति श्रद्धाके आगर॥बहुत काल बपु धारिकै.प्रणतजननको पार दियो॥ श्रीरामानंद रघुनाथज्यों,द्वितीय सेतु जगतरण कियो ॥३६॥ योगानंद गयेश करम चंद अल्ह पैहारी सारी॥ रामदास श्रीरंग अवधि गुण महिमा भारी ॥ तिनके नरहरि उदित मुदित मोहामंगल तन॥ रघुवर यदुवर गाइ विमल कीरति संच्यो धन ॥ हरिभक्ति सिंधुवेलारचे, पाणिपद्म जा शिर दिये॥ अनंतानंदपद परसिकै, लोकपाल सेते भये ॥ ३७ ॥

श्रीरंगजूका वर्णन।

टी०क०-द्यौसा एक गांव तहां श्रीरंग सुनाम हुतो बनिक सरावगी की कथा ले बखानिये॥ रहतो गुलाम गयो धर्मराजधाम उहां भयो बड़ो दूत कही अरे सुन बानिये॥ आए बनिजारे लैन देखि तू दिखावै चैन बैलश्रृंगमध्य बैठि मारे पहिंचानिये॥ बिन हरिभक्ति सब जगतकी यही गति भयो हरिभक्त श्रीअनंतपद ध्यानिये॥११७॥ सुतको दिखाइ देत भूत नित सूख्यो जात पूँछे कही बात जाइ वाकी ठौर सोयो है॥ आयो निशि मारिबेको धायो यह रोषभरचो देवो गति मोको उन बोलिकै सुनायो है॥ जातिको सुनार परनारीलगि प्रेत भयो लयो तेरो शरण मैं ढूंढ़ि जग पायो है॥ दियो चरणामृत ले, कियो दिव्यरूप वाको अतिहि अनूप सुनो भक्तिभाव गायो है॥ ११८॥

छप्पय-जाके शिर कर धर्‌यो तासु करतर नहिं आड़यो॥अर्प्यों पद निर्वाण सोइ निर्भय करि छांड़यो॥ तेजपुंज बल भजन महामणि ऊरधरेता॥ सेवत चरणसरोज राइ राना भुवि जेता॥महिमा बंश दिनकर उदै संतकमल हिय सुख दियो॥ निर्वेद अवधि काल कृष्णदास, अनपरिहरि पयपान कियो॥ ३८॥

अथ पैहारीजूका वर्णन।

टी०क०-जाके शिर कर धरचो तातर न ओड़चो हाथ दीनो बड़ो बर राजा कुल्कोजू साखिये॥ परवतकंदरामें दरशन दियो आनि दियो भाव साधु हरिसेवा अभिलाखिये॥ गिरी जो जलेबी थारमाँझ ते उठाई बाल भयो हियसाल बिन अरपित चाखिये॥ लैकरि खड्ग ताको मारन उपाय कियो जियो संतओट फिरि मोलकरि राखिये॥११९॥ नृपसुत भक्त बड़ो अबलौं बिराजमान साधुसनमानमें न दूसरो बखा-

नियै ॥ संतवधूगर्भ देखि उभै पनवारे दिये कही गर्भ इष्ट मेरो ऐसी उर आनियै ॥ कोऊ भेखधारी सो ब्योहारी पददासनको कही कृपा करो कहा जाने और प्रानियै ॥ तोपै तजि दया क्रिया देखि जग बुरो होत जोत बहु दई दाम राम मति सानियै ॥ १२० ॥

छप्पय–कील्ह अगर केवल चरणव्रत हठी नारायण॥ सूरज पुरुषा पृथु त्रपुर हरिभक्तिपरायण ॥ पद्मनाभ गोपाल टेक टीला गदाधारी॥ देवा हेम कल्याण गंगा गंगासम नारी॥विष्णुदास कन्हर गंगा, चांदन सब हरिभजनपर॥पैहारी परसादते शिष्य सबै भये पारकर ॥३९॥ रामचरण चित बनै रहत निशिदिन लै लगी ॥ सर्वभूत शिर नामित सूर भजनानंदभागी ॥ सांख्ययोगमन सुदृढ़ कियो अनुभौ हस्तामल॥ब्रह्मरंध्र करि गौन भयो हरितन करणीबल ॥ सुमेरदेवसुत जगविदित, भू विस्तार्‍यो विमल यश॥ गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यों कील्ह करण नहिं कालवश ॥ ४० ॥

अथ सुमेरदेवजूका वर्णन ।

टी०क०–श्रीसुमेरदेव पिता सो वे गुजरात हुते भयो तनपात सो विमान चढ़ि चले हैं ॥ बैठे मधुपुरी कील्ह मानसिंहराजाढिग देखे नभ तात उठि कही भले भले हैं ॥ पूंछे नृप बोले कासों कैसेकै प्रकाशो कहो कह्यो हठपरे सुनि अचिरज रले हैं ॥ मानुष पठाये सुधि ल्याये सांच आंच लागी करी जू साष्टांग बात मानि भाग फले हैं ॥१२१॥ऐसे प्रभु लीन नहीं कालके आधीन बात सुनिये नवीन चाहै रामसेवा कीजिये ॥ धरीही पिटारी फूलमाल हाथ डार्‍यो तहां ब्याल कर काट्यो कह्यो फेरि काढ़ि लीजिये ॥ ऐसे ही कटायो बार तीनि

हुलसायो हियो कियो न प्रभाव नेकु सदा रस पीजिये ॥ करिकै समाज साधुमध्य यों बिराजमान तजे दशो द्वार योगीथके सुनि जीजिये॥१२२

छप्पय–सदाचार ज्यों संत प्रीति जैसे करि आये॥ सेवा सुमिरण सावधान राघव चित लाये ॥ प्रसिद्ध वागसों प्रीति स्वहस्तकृत करत निरंतर ॥ रसना निर्मल नाम मनहुँ वरषत धाराधर ॥ कृष्णदास कृपा करि भक्तिदत्त मन वच क्रम करि अटल दियो ॥ श्री-अग्रदास हरिभजनबिन काल वृथा नहिं बीतयो ॥४१

अथ अग्रदासजूकी बाग प्रीतिप्रसंगका वर्णन।

टी०क०–दरशनकाज महाराज मानसिंह आयो छायो बागमांझ बैठे द्वार द्वारपाल हैं ॥ झारके पतौवा गए बाहिर ले डारिबेको देखी भीर भार रहे बैठिये रसाल हैं ॥ आये देखि नाभाजू साष्टांग नति करि ठाढे भरि जल आँखी चले अश्रुवनिजाल हैं ॥ राजा मग चाहि हारि आनिकै निहारि नैन जानि आपजाति भये दासनि दयाल हैं ॥१२३॥

छप्पय–उच्छृंखल अज्ञान जिते अनईश्वरवादी ॥ बौद्ध कुतर्की जैन और पाखंडहि आदी ॥ विमुखनि-को दियो दंड ऐंचि सन्मारग आने ॥ सदाचार-की सींव विश्वकीरतिहिं बखाने ॥ ईश्वरअंश अवतार महीमें, मर्यादा मांडी अघट ॥ कलियुग धर्मपालक प्रगट, आचारज शंकर सुभट ॥ ४२ ॥

अथ शंकराचार्यजूका वर्णन।

टी०क०–विमुखसमूह लैकै किये सनमुख श्याम अति अभिराम लीला जग बिसतारी है ॥ सेवरा प्रबल वास केवराज्यों फैलि रहे गहे नहिं जाहिं वादी शुचि बात धारी है ॥ तजिकै शरीर काहू नृपमें प्रवेश

कियो दियो करि ग्रंथ मोहमुद्गर भारी है ॥ शिष्यनसों कह्यो कभू देहमें आवेश जानो तबहीं बखानो आय सुनि कीजे न्यारी है ॥१२४॥ जानिकै आवेश तन शिष्यने प्रवेश कियो रावलेमै देखि सो सुश्लोक ले उच्चारयो है ॥ सुनतहि तज्यो तन निजतन आय लियो कियो सो प्रणाम दासपन पूरो पारयो है ॥ सेवरा हराये बादी आये नृपपास उच्च छतपर बैठि एक मायाफंद डारयो है ॥ जल चढ़ि आयो नाव भाव ले दिखायें कहें चढो नही बूड़े आप कौतुकसों धारयो है ॥ १२५ ॥ आचारज कही यों चढावो इनि सेवरानि राजाने चढाये गिरे टूक उड़ि गये हैं ॥ तब तो प्रसन्न नृप पाँव परयो भरयो कह्यो जोई करयो धर्म यह भागवत लये हैं ॥ भक्तिहिं प्रचार पाछे मायावाद डारि दीनी कीनो प्रभु कह्यो किते विमुख हूं भये हैं॥ ऐसे सो गंभीर संत धीर वह रीति जानें प्रीतिहिमें सानें हरिरूप गुणमये हैं ॥ १२६ ॥

छप्पय–बालदशा विठ्ठल पानी जाके पय पीयो ॥ मृतक गऊ जिवाइ परचो असुरनको दीयो ॥ सेज सलिलते काढ़ी पहिले ही जैसी होती ॥ देवल उलटो देखि सकुचि रहे सबही सोती ॥ पंढरीनाथ कृत अनुगज्यों छानि स्वकर छाई घासकी ॥ नामदेवप्रतिज्ञा निर्वही, ज्यों त्रेता नरहरि दासकी ॥ ४३ ॥

टी॰क॰–छीपा वामदेव हरिदेवजूको भक्त बड़ो ताकी एक बेटी पतिहीन भई जानिये ॥ द्वादश वरषमांझ भयो तब कही पिता सेवा सावधान मन नीके करि आनिये ॥ तेरे जे मनोरथ हैं पूरण करण एही जोपै दत्तचित्त व्हैकै मेरी बात मानिये ॥ करत टहल प्रभु बेगिही प्रसन्न भये कीनी कामवासना सुपोखि उन मानिये ॥ १२७॥ विधवाको गर्भ ताकी बात चली ठौर २ दुष्टशिरमौर नीकी भई मन भाइये ॥ चलत चलत वामदेवजूके कान परी करी निरधार प्रभु आप

अपनाइये ॥ भयो जू प्रगट बाल नाम नामदेव धरचौ करचो मनभायां सब संपति लुटाइये ॥ दिन दिन बढ़चो कछू औरै रंग चढ़चो भक्तिभाव अंग मढ़चो कढ़चो रूप सुखदाइये ॥ १२८ ॥ खेलत खिलौना प्रीतिरीति सब सेवाहीकी पढ़ पहिरावे पुनि भोगको लगावही ॥ घंटा ले बजावे नीके ध्यान मन लावे त्यों त्यों अति सुख पावे नैन नीर भरि आवही ॥ बार बार कहे नामदेव वामदेव जूंसों देवो मोहिं सेवामांझ अतिही सुहावहीं ॥ जाऊं एक गाँव फिरि आऊं दिन तीन मध्य दूधको पिवावो मत पीवो मोहिं भावहीं ॥१२९॥ कौन वह बेर जेहि बेर दिन फेर होय फेर फेर कहे वह बेर नहीं आइये ॥ आई वह बेर ले कराहीमाँझ हेरि दूध डारचो युग सेर मन नीकेके बनाइये ॥ चोपनकी ढेर लागी निपट औसेरे दृग आवे नीर घेरि जिनि गिरे बूंटि जाइये ॥ माता कहे टेर करि बड़ी तैं अबेर अब करो मति झेर अजू चितदै औटाइये ॥ १३० ॥ चल्यो प्रभुपास से कटोरा छबिरास तामें दूध सो सुवास मध्य मिश्री ले मिलाइये ॥ हियमें हुलास निजअज्ञताकोत्रास तौपै करे जौपै दास मोहिं महासुखदाइये ॥ देख्यो मृदुहास कोटि चांदनीको भास कियो भावको प्रकाश मति अति सरसाइये ॥ प्यायवेकी आश करि ओट कछु भरचो श्वास देखिकै निराश कह्यो पियोजू अघाइये ॥ १३१ ॥ ऐसे दिन बीते दोय राखी हिये बात गोय रह्यो निशि सोय तौपै नीद नहीं आवही ॥ भयो जु सबार फिरि वैसेही सुधार लियो हियो कियो गाढ़ो जाय धरचो पीवो भावही ॥ बार बार पीयो कहूं अब तुम पीयो नाहिं आवै भोर नाना गरे छूरी दे दिखावही ॥ गहि लियो कर जिनि करे ऐसी पीयो मैं तो पीबेको ले गई नेकु राखो सदा पावही ॥ १३२ ॥ आये वामदेव पाछे पूँछे नामदेवजूसों दूधको प्रसंग अतिरंगभर भाखिये ॥ मोसों न पिछानि दिन दोई हानि भई जब मानि डर प्राण तज्यो चा-

हो अभिलाखिये ॥ पियो सुख दियो जब नेकु राखि लियो मैं तो जियो सुनि बातैं कहि प्यायो कौन साखिये ॥ धख्यो पै न पीयै अख्यो प्यायो सुख पायो नाना यामें ले दिखायो भक्तबसरस चाखिये॥१३३॥ नृप सो मलेछ बोलि कही मिले साहिबको दीजिये मिलाय करामात दिखराइये ॥ होय करामात तोपै काहेको कसब करें भरें दिन तोपै बाटी संतनसों खाइये ॥ ताहीके प्रताप आप इहांलो बुलाय हमै दीजिये बिदाई गाइ घर चलि जाइये ॥ देह ले ज़िवाँइ गाइ सहजसुभाइहिमें अति सुख पाइ पाइ पख्यो मन भाइ ये ॥ १३४ ॥ लेवो देश गांव जाते मेरो कछु नाव होइ चाहिये न कछु दई सेज मणिमई है ॥ धरि लई सीस दियो संग दशबीस नर नाहीं करि आय जलमांझ डारि दई है ॥ भूप सुनि चौंकि पख्यो ल्यावो फेरि आय कहो कही नेकु आनिकै दिखावो कीजे नई है ॥ जलते निकासि बहुभांति गहि डारि तट लीजिये पिछानि देखि सुधि बुधि गई है ॥ १३५ ॥ आनि पख्यो पाँय प्रभुपासते बचाय लीजे कीजे एक बात कभू साधु न दुखाइये ॥ लई यह मानि फेरि कीजिये न सुधि मेरी लीजिये गुननि गाइ मंदिरले जाइये ॥ देखि द्वार भीर पगदा कटि बाँधी धीर सी करसों उछीर करि चाहे पद गाइये ॥ देखि लीन वेई काहु दीनी पांच सात चोट कीनी धका धकी रीस मनमें न आइये ॥ १३६ ॥ बैठे पिछवार जाइ कीनी जु उचित यह लीनी जो लगाइ चोट मेरेमन भाइये ॥ कान देके सुनो अब चाहत न और कछू ठौर मोको यह नित नेम पद गाइये ॥ सुनतहि आनि करि करुणा बिकल भए फेरो द्वारईते गहि मंदिर फिराइये ॥ जेतिक वे सोती मोती आबसी उतरि गई भई हिये प्रीति गहे पाँव सुखदाइये ॥ १३७ ॥ औंचकहि घरमांझ सांझही अगिनि लागी बड़ो अनुरागी ताहि गई सोऊ डारिये ॥ कहे अहो नाथ सब कीजिये जु अंगीकार हँसे सुकुमार हरि मोहिंको निहारिये ॥ तुह्मरो भवन और आइ कौन सके इहां भये यों प्रसन्न छानि छाई आ

प सारिये ॥ पूँछे आनि लोग कौन छाई हो छवाइ लीजे दीजे जोई भावे तन मन प्राण वारिये ॥ १३८ ॥ सुनो और परिचै जे आये न कबित्त माझ भई माता क्यों न जौ मतिपागी है ॥ हुतो एक शाह तुलादानको उछाह भयो दयो पुर सबै रह्यो नामदेव रागी है ॥ ल्यावो जू बुलाइ एक दोई तो फिराइ दिये तीसरेसों आय कहा कहो बड़भागी है ॥ कीजिये जू कछु अंगीकार मेरो भलो होय तेरो भयो भलो दीजे जौपै आस लागी है ॥ १३९ ॥ जाके तुलसी है ऐसे तुलसीके पत्रमांझ लिख्यो आधो राम नाम यासों तोल दीजिये ॥ कहा परिहास करो ढरो व्है दयाल देखि होत कैसो ख्याल याको पूरो करो रीझिये ॥ ल्यायो एक कांटो ले चढ़ायो पात सोनासंग भयो बड़ो रंग सम होत नाहिं छीजिये ॥ लई सो तराजू तासों तुले मन पांच सात जाति पाँतिहूको धन धरयो पै न धीजिये ॥ १४० ॥ पर्यो शोच भारी दुःख पावें नरनारी नामदेवजू विचारी एक और काम कीजिये ॥ जिते व्रतदान और स्नान किये तीरथमें करिये संकल्प यापै जल डारि दीजिये ॥ करेउ उपाइ पातपला भूमि छांड़े नाहिं रहे वे खिसाय कह्यो इतनोई लीजिये ॥ लेके कहां धरें सरवरहू न करें भक्ति भाव सो ले भरें हिये मति अति भीजिये ॥ १४१ ॥ कियो रूप ब्राह्मणको दूबरो निपट अंग भयो हिहे रंग व्रत परिचैको लीजिये ॥ भई एकादशी अन्न मांगत बहुत भूँखो आजु तो न देहों भोर चाहो जितो लीजिये ॥ कर्यो हठ भारी खिलि दोउ ताको सोर पर्यो समझावे नामदेव याको कही कीजिये ॥ बीते याम चारि मरि रहे यों पसारि पाँव भाव पै न जाने देह हत्या नहिं छीजिये ॥ १४२ ॥ रचिकै चिताको विप्र गोद लेके बैठे जाइ दियो मुसकाइ मैं परीक्षा लीनी तेरी है ॥ देखि सो सचाई सुखदाई मन भाइ मेरे भये अंत्रध्यान परे पाँय प्रीति हेरी है ॥ जागरणमांझ हरिभक्तनको प्यास लगी गये लेन जल प्रेत आनि कीनी फेरी है ॥ फेंदते

निकासी ताल गायो पद ततकाल बड़ेई कृपाल रूप धरयो छबि-ढेरी है ॥ १४३ ॥

छप्पय–प्रचुर भयो तिहुँ लोक गीतगोविंद उजागर ॥ कोक काव्य नवरस न सरस शृंगारको सागर॥ अष्टपदी अभ्यास करै तिहि बुद्धि बढ़ावे ॥ राधारसण प्रसन्न सुनत निश्चय तहँ आवे ॥ संतसरोरुहखंडको, पद्मावति सुखजनक रवि ॥ जयदेव कवि नृपचक्कवै, खंडमंडलेश्वर आन कवि ॥ ४४ ॥

अथ जयदेवजूका वर्णन ।

टी०क०–किंदुबिल्लगाम तामें भये कविराज राज भरयो रसराज हियो मन मन चाखिये ॥ दिन दिन प्रति रूख रूखतर जाइ रहे गहे एक गुदरी कमंडलुको राखिये ॥ कही देवै विप्रसुता जगन्नाथ देवजूको भयो जब समै चल्यो दैन प्रभु माखिये ॥ रसिक जैदेवनाम मेरो ईश-रूप ताहि देवो ततकाल अहो मेरी कही साखिये ॥ १४४ ॥ चल्यो द्विज तहां बैठे कविराज राज अहो महाराज मेरी सुता यह लीजिये ॥ कीजिये विचार अधिकार बिस्तार जाके ताहीको निहारि सुकुवाँरि यह दीजिये ॥ जगन्नाथ देवजूकी आशा प्रतिपाल करो ढरो मति धरो हिये नातो दोष भीजिये ॥ उनको हजार सोहैं हमको पहार एक ताते फिरि नात्ये तुम कहा कहि खीजिये ॥ १४५ ॥ सुतासों कहत तुम बैठि रहो याही ठौर आज्ञा शिर मौर मेरी नहीं जाति टारी है ॥ चल्यो अनखाइ समझाइ हारे बातनसों मन तू समझ कहा कीजे सोच मारी है ॥ बोलि द्विजबालकीसों अपनो बिचार करो धरो हिये ज्ञान मोपै जात न संभारी है ॥ बोली कर जोरि मेरो जोर न चलत कछु चाहो सोइ करो यह बरि फेरि डारी है ॥ १४६ ॥ जानी जब भई तिया कियो प्रभु जोर मोपै तोपै एक झोपरीकी छाया करि लीजिये ॥

भई तब छाया श्याम सेवा पधराइ लई नई एक पोथी मैं बनाऊं मन कीजिये ॥ भयो जो प्रगट गोत सरस गोविंदजूको मानमें प्रसंग शीश मंडन सो दीजिये ॥ यह एक पद मुख निकसत शोच पर्यो धर्यो कैसे जात लाल लिख्यो मति रीझिये ॥ १४७ ॥ नीलाचल धाम तामें पंडित नृपति एक करी यहि नाम धरी पोथी सुखदाइये ॥ द्विजन बुलाइ कही बोली लै प्रसिद्ध करो लिखि लिखि पढ़ो देश देशनि चलाइये ॥ बोले मुसकाइ विप्र क्षिप्र सो दिखाइ दई नई यह कोउ मति अति भरमाइये ॥ धरी दोउ मंदिरमें जगन्नाथदेवजूके दीनी यह डारि वाहि हार लपटाइये ॥ १४८ ॥ पर्यो शोच भारी नृप निपट खिसानो भयो गयो उठि सागरमें बूड़ो वहो बात है ॥ अति अपमान कियो कियो मैं बखान सोई सोई जात कैसे आंच लागी गात गात है ॥ आज्ञा प्रभु दई मत बूड़ तू समुद्रमांझ दूसरो न ग्रंथ ऐसो वृथा तनपात है ॥ द्वादश सुश्लोक लिखि दीजे सर्ग द्वादशमें ताहि संग चले जाकी ख्याति सब पात है ॥ १४९ ॥ सुता एक मालीकी जू बैंगनकी बारीमांझ तोरे बनमाली गावे कथा सर्ग पांचकी ॥ डोलैं जगन्नाथ पाछे काछे अंग मिहीं झँगा आछे कहि घूमे शुद्धि आवे ब्रह्म आंचकी ॥ फट्यो पट देखि नृप पूँछी अहो भयो कहा जानत न हम अब कहो बात सांचकी ॥ प्रभुहिं जनाय मन भाय मेरे वही गाथा ल्याय यहि बलकीको पालकीमें नाजकी ॥ १५० ॥ फेरी नृप डोड़ी यह औड़ी बात जानि महा कही राजा रंक पढ़े नीकी ठौर जानिकै ॥ अक्षर मधुर और मधुर स्वरनहीसों गावे जब लाल प्यारीढिग हिले मानिकै ॥ सुनि यह रीति एक मुगलने धारि लई पढ़े चढ़े घोरे आगे श्यामरूप ठानिकै ॥ पोथीको प्रताप स्वर्ग गावत हैं देववधू आपही जू रीझ लिख्यो निजकर आनिकै ॥ १५१ ॥ पोथी तो बात सब कही मैं सुहात हिये सुनो और बात जामैं अति अधिकाइये ॥ गाँठिमें मुहर

मग चलतमें ठग मिले कहो कहां जात जहां तुम चलि जाइये ॥ जानि लई बात खोलि द्रव्य पकराई दियो लियो चाहो जोई जोई सोई मोको ल्याइये ॥ दुष्टनि समुझि कहि कीनी इन विद्या अहो आवें जो नगर इन्हे बेगि पकराइये ॥१५२॥ एक कहे डारो मारि भलो है विचार यही एक कहे मारो मत धन हाथ आयो है ॥ जोपै ले पिछान कहो कीजिये निदान कहा हाथ पाँव काटि बड़े गाड पधरायो है ॥ आयो तहां राजा एक देखिके विवेक भयो छयो उजियारो औ प्रसन्न दरशायो है ॥ बाहिर निकासि मानो चंद्रमा प्रकाशराशि पूँछ्यो इतिहास कह्यो ऐसो तन पायो है ॥ १५३ ॥ बड़ई प्रभाववान सकै को बखानि अहो सेर कोउ भूरि भाग दरशन कीजिये॥पालकी बैठाइ लिये किये सब ठूँठ नीके जीके भाय भये कछु आज्ञा मोहिं दीजिये ॥ करो हरिसाधुसेवा नाना पकवान मेवा आवे जोई संत तिन्हे देखि देखि भीजिये ॥ आए वेई ठग माला तिलक चिलक किये किलकिकै कहि बड़े बंधु लेखि हीजिये ॥१५४॥ नृपति बुलाय कहि हिये हरि भाय भरे ढरे तेरे भाग अब सेवाफल लीजिये ॥ गयो ले महलमांझ टहल लगाये लोग लागे होन भोग जिय शंका तन छीजिये ॥ माँगे बार बार बिदा राजा नहिं जान देत अति अकुलाय कही स्वामी धन दीजिये ॥ देके बहु भांति सो पठाए संग मानसहू आवे पहुँचाय तब तुमपर रीझिये ॥ १५५ ॥ पूँछे नृप नर कोउ तुह्मरी न सखर जिते आए साधु ऐसी सेवा नहीं भई है ॥ स्वामीजीसों नातो कहा कहो हम खाइ हाहा रखियो दुराइ यह बात अति नई है ॥ हुते एक ठौर नृप चाकरीमें तहां इन कीयोई बिगार मारि डारो आज्ञा दई है॥राखे हम हितू जानि ले निदान हाथ पांच वाहीके इसान अब हम भरि लई है ॥ १५६ ॥ फाटि गई भूमि सब ठग वे समाय गये भये वे चकित दौरि स्वामीजूपै आए हैं ॥ कही जिती बात सुनि गात गात काँपि उठे हाथ पांव मींढ़े भये ज्योंके त्यों सुहाए हैं ॥ अचिरज दोउ नृप पास जा प्रकाश किये जिये एक सु-

नि आए वाही ठौर धाए हैं ॥ पूँछे बार बार सीस पाँयनपै धारि रहे कहिये उघारि कैसे मेरे मन भाए हैं ॥ १५७॥ राजा अति अर गही कही सब बात खोलि निपट अमोल यह संतनको वेश है ॥ कैसो अपकार करे तऊ उपकार करें ढरें रीति आपनी ही सरस सुदेश है ॥ साधुता न तजे कभू जैसे दुष्ट दुष्टता न यही जानि लीजे मिले रसिकनरेश हैं ॥ १५८ ॥ गये जा लिवाय लोग कबिराज राज तिया कियो ले मिलाप आप रानी ढिग आई है ॥ मार्‍यो एक भाई वाको भई यों भौजाई सती कोऊ अंग काटी कोउ कूदि परी धाई है ॥ सुनतहिं नृपवधु निपट अचंभो भयो इनके न भयो फिरि कहि समुझाई है ॥ प्रीतिकी न रीति यह बड़ी विपरीति अहो छुटे तन जब प्रिया प्राण छुटि जाइये ॥ १५९ ॥ ऐसी एक आप कही राजा-सो यो यूं बात कही लेके जावो बाग स्वामी नेकु देखो प्रीतिको ॥निपड बिचारी बुरी देत मेरे गरे छूरी तिया हठ मानि करी वैसेही प्रतीतिका॥ आनि कहे आप पाँय कहि यहि भांति आय बैठी ढिग प्रिया देखि लोटि गई रीतिकी ॥ बोली भक्तवधू अजू वे तो हैं बहुत नीके तुम कहा औचकहीं पावति हो भीतिको ॥ १६० ॥ भई लाज भारी पुनि फेरिकै सँवारी दिन बीति गए कोऊ जब तब वही कीनी है ॥ जानि गई भक्तवधू चाहति परीक्षा लियो कही अजू पाय सुनि तजी देह भीनी है ॥ भयो मुख श्वेत रानी राजा आए जानि यह रचि चिता जरों मति भई मेरी हीनी है ॥ भई सुधि आपको सु आए वेगि दौरि इहां देखि मृत्युप्राय नृप कह्यो मेरी दीनी है ॥ १६१ ॥ बोल्यो नृप अजू मोहिं जरे इव तन अब सब उपदेश लैके धूरिमें मिलायो है ॥ कह्यो बहु भांति तौपै आवति न शांति कहूं गाई अष्टपदी सुर दियो तन ज्यायो है॥ लाज निको मार्‍यो राजा चाहे अपघात कियो जियो नहिं जात भक्तिलेशहु न आयो है ॥ करि समाधान निजग्राम आये किंदुलि जैसो कछु सुन्यो यह परचो ले गायो है ॥१६२॥ देवधुनीसौंत हो अठा-

र कोस आश्रमते सदाई स्नान करें धरें योग्यताईको ॥ भयो तन वृद्ध तऊ छांड़ें नहीं नित्य नेम प्रेम देखि भारी निशि कही सुखदाईको ॥ आवो जिनि ध्यान करो करो मति हठ ऐसे मानी नहीं आऊँ मैही जानो कैसे आईको ॥ फूले देखो कंज जब कीजिये प्रतीति मोरी भई वाही भाँति सेवै अबलों सुहाईको ॥ १६३ ॥

छप्पय-तीनि कांड एकत्व सानि कोउ अज्ञ वखानत ॥ कर्मज्ञानी ऐंचि अर्थको अनरथ ठानत ॥ परमहंससंहिता विदित टीका विस्तार्‍यो ॥ पटशास्त्र अविरुद्ध वेसंमतहि विचार्‍यो ॥ परमानंदप्रसादते, माधव स्वकर सुधारि दियो ॥ श्रीधर श्रीभागवतमें, परम धरम निरयो ॥ ४५ ॥

अथ श्रीधरजूका वर्णन।

टी०क०-पंडितसमाज बड़े बड़े भक्तराज जेते भागवतटीका करि आपसमें रीझिये ॥ भयोजू विचार काशीपुरी अविनाशो-मांझ सभाअनुसार जोई सोई लिखि दीजिये ॥ ताको तो प्रमाण भगवान बिंदुमाधोजू हैं साधो यह बात धरि मंदिरमें लीजिये ॥ धरे सब जाइ प्रभु स्वकर बनाइ दियो कियो सर्वोपरि ले चल्यो मति धीजिये ॥ १६४ ॥

छप्पय-करुणामृत सुकवित्त उक्ति अनुचिष्ट उचारी ॥ रसिकजननि जीवनि हृदै हावलिधारी ॥ हरिपकरायो हाथ बहुरि तहँ लियो छुटाई॥कहा भयो कर छुटे बँधो जो हियते जाई ॥ चिंतामणिसँग पाइकै व्रजवधूकेलि वरणी अनूप ॥कृष्णकृपाको पर प्रगट. बिल्वमंगल मंगलस्वरूप ॥ ४६ ॥

अथ बिल्वमंगलजूका वर्णन।

टी०क०–कृष्णावेणा तीर एक द्विज मतिधीर रहे व्है गयो अधीर संग चिंतामणि पाइकै ॥ तजी लोकलाज हिये वाहीको जु राज भयो निशिदिन काज वहैं रहे घर जाइकै ॥ पिताको सराध नेकु रह्यो मन साधि दिन शेषमें आवेश चल्यो अति अकुलाइकै ॥ नदी चढ़ि रही भारी तौपै न अबारी नाव भावभर्यो हियो जियो जात नँघि जाइकै ॥ १६५ ॥ करत विचार बारिधारमें न रहे प्राण याते भली धारि मित्रसनमुख जाइये ॥ परे कूदि नीर कछुसुधि न शरीरकी है वही एक पीर कब दरशन पाइये ॥ पैयत न पार तन हारि भयो बूड़िबेको मृतक निहारि मानि नाव मन भाइये ॥ लगेई किनारे जाय चले पग धाय चाय आय पट लागे निशि आधी सो बिहाइये ॥ १६६ ॥ अजगर घूमि झूमि भूमिको परस कियो लियेई सहारो चढ्यो छातपर जायकै ॥ ऊपर किंवार लगे पर्यो कूदि आंगनमें गिर्यो यों गरत रागि जागि सोर पायकै ॥ दीपक कराइ जू वै देखि बिल्वमंगल हैं बड़ोई अमंगल तू कियो कहर आयकै ॥ जल अन्हवाय सूखे पट पहिराय हाय कैसे करों आय जल पार द्वार धायकै ॥ १६७ ॥ नवका पठाइ द्वार लाव लटकाई देखि मेरे मन भाई मैंतो तबै लई जानिकै ॥ चलो देखें अहो यह कहा धौं प्रलाप करै देख्यो विषधर महा खिझि अपमानिकै ॥ जैसो मन मेरे हाड़ चामसों लगायो तैसो श्यामसों लगावे तौपै जानिये सयानिकै ॥ मै तो भये भोर भजों युगलकिशोर अब तेरी तुहीं जाने चाहो करो मन मानिकै ॥ १६८ ॥ खुलि गईं आखें अभिलाखे रूप माधुरीको चाखे रस रंग औ उमंग अंग न्यारिये ॥ बीन ले बजाइ गाइ विपिन निकुंज क्रीड़ा भयो सुखपुंज जोपै कोटि विषै वारिये ॥ बीति गई राति प्रात चले आप आपको जू हिये वही जाय दृग नीर भरि डारिये ॥ सोमगिरि नाम

अभिराम गुरु कियो आनि सकै को वखानि लाल भुवन निहारिये ॥१६९॥ रहे सो बरस रससागर मगन भये नये २ चोजके ले श्लोक पढ़ि जीजिये ॥ चले वृन्दावन मन कहे कब देखों जाइ आइ मगमांझ एक ठौर मति भीझिये ॥ परयो बड़ो सोर दृगकोरके न चाहे काहू तहां सर तिया न्हाति देखि आंखें रीजिये ॥ लगे वाके पाछे काछे कांछेकी न सुध कछू गई घर आछे रहे द्वार तन छीजिये ॥ १७० ॥ आयो वाको पति द्वार देखे भागवत ठाढ़े बडो भागवत पूंछि वधू सो जनाइये ॥ कही जू पधारो पांव धारो गृह पावनको पावनि पखारों जल ढारों सीस भाइये ॥ चले भौनमांझ मन आरति मिटायबेको गायबेको जोई रीति सोइ कै बताइये ॥ नारिसों कह्यो हो तू सिंगार करि सेवा कीजे लीजे यूं सुहाग यामे वेगि प्रभु पाइये ॥ १७१ ॥ चली यों सिंगार करि थारमें प्रसाद लैकै ऊंची चित्रसारी जहां बैठे अनुरागी हैं ॥ झनक मनक जाइ जोरि कर ठाढ़ि रही गही मति देखि देखि न्यून वृत्ति भागी हैं ॥ कही युग सुई ल्यावो ल्याइ दई लई हाथ फोरि डारी आंखें अहो बढीए अभागी हैं ॥ गई पतिपास श्वास भरत न बोलि आवे बोलि दुख पाय आए पाँय परे रागी हैं ॥ १७२ ॥ कियो अपराध हम साधुको दुखायो अहो बड़े तुम साधु हम नाम साधु धरयो है ॥ रहो अजू सेवा करो करी तुम सेवा ऐसी जैसी नहिं काहू मांझ मेरो सन हरयो है ॥ चले सुख पाइ दृग भूतसे छुटाइ दिये हियेहीकी आंखिनसों अबे काम परयो है ॥ बैठे बनमध्य जाइ भूँखे जानि आप आइ भोजन कराइ चलो छाबा दिन ढऱ्यो है ॥ ॥ १७३ ॥ चले ले गहाइ कर छाया घन तरुवर चाहत छुटायो हाथ छोडे कैसे नीको है ॥ ज्यों ज्यों बल करे त्यों त्यों तजत न एऊ अरे लियो ई छुटाइ गह्यो गाढ़ो रूपहीको है ॥ ऐसेही करत वृन्दावन घन आइ लियो पियो चाहे रस सब जग लागे फीको है ॥ भई

उतकंठा भारी आये श्रीविहारी लाल मुरली बजाइकै सुकियो भयो जीकी है ॥१७४॥ खुलि गए नयन ज्यों कंज रवि उदै भए देखि रूप-राशि बाढी कोटिगुनी प्यास है ॥ मुरली मधुर सुर राख्यो मदभरी मानो ढरी आइ काननमें आननमें भास है ॥ मानिकै प्रताप चिंतामणि मनमांझ भई चिंतामणि जेती आदि बोले रस रास है ॥ करुणामृत ग्रंथ हृदै ग्रंथिको बिडारि डारै बांधे रसग्रंथ पंथ युगल प्रकाश है ॥ १७५ ॥ चिंतामणि सुन्यो बनमांझ रूप देख्यो लाल व्है गई निहाल आइ नेह नातो जानिकै ॥ उठि बहुमान कियो दियो दूध भात दोना दे पठावे नित हरि हेतुजन मानिकै ॥ लियो कैसे जाय तुह्मै भायसों दियो जो प्रभु ले हों नाथहाथसों जो देहैं सनमा-निकै ॥ बैठे दोऊ जन कोऊ पावै नहीं एक कन रीझे श्याम घन दीनो दूसरो हू आनिकै ॥ १७६ ॥

छप्पय–भागवतधर्म उतंग आनधर्म अनन देखा ॥ पीतरपटतर बिगत निकष ज्यों कुंदनरेषा ॥ कृष्ण-कृपाकहि बेल फलित सतसंग दिखायो ॥कोटिग्रंथको अर्थ तेरह विरंचनमें गायो ॥ महासमुद्र भागवतते, भक्तिरत्नराजी रची ॥ कलिजीव जंजाली कारणे, विष्णुपुरी बड़ि निधि सची ॥ ४७ ॥

अथ विष्णुपुरीजूका वर्णन ।

टी०क०–जगन्नाथक्षेत्रमांझ बैठे महाप्रभूजू वे चहूं और भक्तभूप भीर अति छाई है ॥ बोले विष्णुपुरी पुरी काशी मध्य रहे जाते जानि-यत मोक्ष चाह नीकी मन आई है ॥ लिखि प्रभु चीठी आप मणिग-णमाला एक दीजिए पठाइ मोहिं लागत सुहाई है ॥ जानि लई बात निधि भागवत रत्नदाम दई पठै आदि मुक्ति खोदिकै बहाई है॥१७७॥

छप्पय–नाम त्रिलोचन शिष्य सूर शशिसदृश उजागर॥ गिरा गंगउनहारि काव्यरचना प्रेमाकर॥ आचारज हरिदास अतुल बल आनंद दायन॥ तिहिं मारग वल्लभ बिदित प्रभुपद्धतिपरायन ॥ नवधा प्रधानसेबा सुदृढ़, मन बच क्रम हरिचरण रति ॥वि-ष्णुस्वामीसंप्रदाय दृढ़ ज्ञानदेव गंभीरमति ॥ ४८ ॥

अथ ज्ञानदेवजूका वर्णन ।

टी०क०–विष्णुस्वामीसंप्रदाय बड़ोई गंभीरमति ज्ञानदेव नाम ताकी बात सुनि लिजिये॥ पिता गृह त्यागि आइ ग्रहण संन्यास कियो दियो बोल रूठ तिया नहीं गुरु कीजिये ॥ आई सुनि वधू पाछे कह्यो जान्यो मिथ्यावाद भुजनि पकरि मेरेसंग करि दीजिये ॥ ल्याई सो लिवाय जाय अतिहि रिसाय दियो पातिमेंते डारि रहे दूरि नहिं छीजि-ये॥ १७८ ॥ भए पुत्र तीन तामें मुख्य बड़ो ज्ञानदेव जाकी कृष्णदेव जूसों हियकी सचाई है॥ वेद न पढ़ावे कोऊ कहे सब ज्ञाति गई लई करि सभा अहो कहा मन आई है॥ उनसों ब्रह्मत्व कहि श्रुतिअधिकार नांहि बोल्यो यों निहारि पढ़े भैंसा ले दिखाई है ॥ देखि भक्ति-भाव चाव भयो आनि गहे पांव कियोई सुभाव वही गही दीनताई है॥१७९॥

अथ त्रिलोचनजूका वर्णन ।

क०–भए उभै शिष्य नामदेव श्रीत्रिलोचनजू सूरशशिन्याई कियो जगमें प्रकाश है॥ नामाकी तो बात सुनि आए सुनो दूसरेकी सुनेई बनत भक्तकथा रसरास है॥ उपज्यो बणिककुल सेवे कुल अच्युतको तोपै नहीं बनें एक तिया रहै पास है॥ टल्हुवा न कोइ साधु मनहीकी जानि लेत यही अभिलाष सदा दासनिको दास है॥१८०॥ आए प्रभु टहलुआरूप धरि द्वारपर फटी एक कामरी पन्हैया टूटी पाँई है॥निक-सत पूंछे अहो कहांते पधारे आप बाप महतारी और देखिये न घाई

है।।बाप महतारी मेरे कोऊ नाहिं साची कहों गहों मै बहल जोपै मिलत सुभाइ है ।। अनमिल बात कौन दीजिये जनाइ वह खाऊं पांच सात शेर उठत रिसाइ है ।। १८१ ।। चारोंही बरनकी जु रीत सब मेरे हाथ साथ होन चाहों करो नीके मन लाइकै ।। भक्तनकी सेवा सो तो करत जनम गयो नयो कछु नाही डारे बरस बिताइकै ।। अंत्रजामी नाम मेरो चेरो भयो तेरो हौं तो बोल्यो भक्तभाव खावो निशंक अघाइकै ।। कामरी पन्हैयां सब नई करि दई और मीड़िकै न्हवायो तन मैलको छुटाइकै ।। १८२ ।। बोल्यो घरदासीसों तू रहे यानी दासी होइ देखि यों उदासी देत ऐसो नहीं पावनो ।। खाइ सो खावावो सुख पावो नित्त नित हिये जिये जगमाहि जौलों मिलि गुण गावनो ।। आवत अनेक साधु भावत टहल हिय लिये चाव दाबे पाँव सवनि लड़ावनो ।। ऐसेही करत मास तेरह बितीत भए गए उठि आप नेकु बातको चलावनो।। १८३ ।। एक दिन गईही परोसिनकै भक्तवधू पूंछि लई बात अहो काहेको मलीन है ।। बोली मुसकाय वे टहलुवा लिवाय ल्याय क्योंहू न अघाय खोट पीसि तन छीन है ।। काहूसों न कहो यह गहो मनमांझ एरी तेरीसों सुनैगो जोपै जात रहे भीन है ।। सुनि लई यही नेकु गए उठि हुती टेंक दुखहु अनेक जैसे जल बिन मीन है ।। १८४ ।। बीते दिन तोन अन्न जल करि हीन भये ऐसो सो प्रवीण अहो फेरि कहां पाइये।।बड़ी तू अभागी बात काहेको कहन लागी रागी साधुसेवामें जू कैसे करि ल्योइये।। भई नभ बानी तुम खावो पीवो पानी यह मैंही मति ठानी मोको प्रीति रीति भाइये।। मै तो हौं आधीन तेरे घरहीमें रहो लीन जोपै कहो सदा सेवा करिबेको आइये ।। १८५ ।। कीने हरिदास मैतो दासहू न भयो नेकु बड़ो उपहास मुख जगमें देखाइये ।। कहे जन भक्त कहा भक्ति हम करी कहो अहो अज्ञताई रीति मनमें न आइये ।। उनकी

तो बात बनि आवे सब उनहींसौं गुनहीको लेत मेरे औगुन छिपाइये॥ आये घरमांझ तऊ मूढ़ मैं न जानि सक्यो आवै अब क्यों हूं धाय पाँय लपटाइये ॥ १८६ ॥

अथ श्रीवल्लभाचार्यजूका वर्णन ।

क०—हियेमें सरूप सेवा करि अनुराग भरे ढरे और जीवनिके जीवनको दीजिये ॥ सोइ ले प्रकाश घर घरमे विलास कियो अतिहि हुलास फल नैननको लीजिये ॥ चातुरीअवधि नेकु आतुरी न होती क्यौंहू चहूं दिशि नाना राग भोग सुख कीजिये ॥ वल्लभजू नाम लियो पृथु अभिराम रीति गोकुलमें धाम जानि सुनि मति रीझिये ॥ १८७ ॥ गोकुलके देखिबेको गयो एक साधु सूधो गोकुल मगन भयो रीति कछु न्यारिये ॥ छोकरके वृक्षपर बढ़वा झुलाइ दियो कियो जाय दरशन सुख भयो भारिये ॥ देखे आइ नाहीं प्रभु फेरि आप पास आयो चितसों मलिन देखि कहि जानि हारिये ॥ वैसोई सरूप कैई गई सुधि बोल्यो आनि ललिये पिछानि कह्यो सेवा नित धारिये ॥१८८॥ खुलि गईं आंखें अभिलाखें पहिचाँनि कीजे दीजे जू बताइ मोहिं पाऊं निजरूप है॥कही जावो वाही ठौर देखो प्रेम लखो हिये लिये भाव सेवा करो मारग अनूप है ॥ देखिकै मगन भयो लयो उर धारि हरि नैन भरि आये जान्यो भक्तिको स्वरूप है॥निशिदिन लग्यो पग्यो जग्यो भाग पूरन हो पूरन चमतकार कृपा अनुरूप है॥१८९॥

छप्पय—भक्तदास इक भूप श्रवण सीताहर कीनो॥ मार मार करि खड्ग वाजि सागरमें दीनो ॥ नरसिंहको अनुकरण होइ हिरनाकुस माऱ्यो ॥ वहै भयो दशरथहि राम बिछुरत तन डाऱ्यो ॥ कृष्णदास बांधे सुनत, तिहि छिन दीने प्रान ॥ संतसाखि जाने सबै, प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान ॥ ४९ ॥

अथ भक्तदास भूपनाम कुलशेखरजूका वर्णन।

कबित्त–संतसाखि जाने कलिकालमें प्रगट प्रेम बड़ाई असत जाके भक्तिमें अभाव है॥ हुतो एक भूप रामरूप ततपर महा रामहीकी लीला गुण सुनै करि भाव है॥ विप्रसों सुनावें सीता चोरि कौन गावे हियो खरो भरि आवे वह जानत सुभाव है॥ परचो द्विज दुखी निजसुवन पठाइ दियो जाने न सुनायो भरमायो कियो धाय है॥ १९०॥ मारि मारि मार करि खडग निकासि लियो दियो घोडो सागरमे सो आवेश आयो है मारो॥ यहि काल दुष्ट रावण बिहाल करो पावनिको देखों सीताभाव दृढ़ छायो है॥ जानकीरमण दोऊ दरशन दियो आनि बोले बिन प्राण कियो नीच फल पायो है॥ सुनि सुख भयो गयो शोक हृदे दारुण जो रूपकी निहारनि यों फेरिकै जिवायो है॥ १९१॥

अथ लीलानुकरण तथा रतिवंती बाईजूका वर्णन।

कबित्त–नीलाचल धाम तहां लीलानुकरण भयो नरसिंह धरि सांचे मारि डारचो है॥ कोऊ कहै द्वेष कोऊ कहत आवेश तौ पै करो दशरथ कियो भाव पूरो पारचो है॥ हुती एक बाई कृष्णरूपसों लगाई मति कथामें न आई सुत सुनि कह्यो धारचो है॥ बांधे जसुमति सुनि और भई गति करि दई साँची रति तन तज्यो मानो वारचो है॥ १९२॥

छप्पय–हौं कह कहौं बनाइ बात सबही जग जाने॥ करते दोनो भयो श्याम सौरभ मन माने॥ छपन भोगतें पहिल खीच करमाकी भावे॥ सिलपिल्लेके हेत कुँवरिपै हरि चलि आवे॥ भक्तनिहित सुत विष दियो, भूप नारि प्रभु राखि पति॥ प्रसाद अवज्ञा जानिकै, पाणि तज्यो एकै नृपति॥ ९०॥

अथ श्रीपुरुषोत्तमवासी महाराजजूका वर्णन।

टी०क०–प्रसादकी अवज्ञाते तज्यों नृप कर एक करिकै विवेक सुनो जैसे बात भई है ॥ खेले भूप चौपरको आयो प्रभुभुक्तशेष दाहिनेमें पाँसे बाएँ छुयो मति गई है ॥ लेगये रिसायकै फिराय महादुख पाय उठ्यो नरदेव गृह गयो सुनि नई है ॥ लियो अनसन हाथ तज्यो एहि छिन तब साँचो मेरो पन बोलि विप्र पूँछि लई है ॥ १९३ ॥ काटे हाथ कौन मेरो रह्यो गहि मौन यातैं पूंछत सचिब कहा बिथा सो बिचारिये ॥ आवे एक प्रेतमों दिखाई नित देत निशि डारके झरोखा कर सोर करे भारिये ॥ सोऊ ढिग आइ रहो आपको छिपाइ जब डारे पानि आनि तबहीसों काटि डारिये ॥ कही नृप भले चौकी देतमें घुमायो भूप डार्‍यो उठि आयो छेदि ज्यारो कियो वारिये ॥ १९४ ॥ देखिकै लजानों कहा कियो में आयानो नृप कही प्रेत मानो यही प्रभुसों बिगारिये ॥ कही जगन्नाथ देव ले प्रसाद जावों उहां ल्यावो हाथ बोवो बाग सोई उर धारिये ॥ चले तहा धाइ भूप आगे मिल्यो आइ हाथ निकस्यो लगाइ हिये भयो सुख भारिये ॥ ल्याय कर फूल ताके भये फूल दोनाके जू नितहि चढ़त अंग गंध हरि प्यारिये ॥ १९५ ॥

अथ श्रीकरमाबाईजूका वर्णन।

क०–हुती एक बाई ताको करमा सुनाम जानि विना रीति भाति भोग खीचरी लगावही ॥ जगन्नाथ देव आप भोजन करत नीके जिते लागें भोग तामें यह अति भावही ॥ गयो तहां साधु मानि बडे अपराध करे भरे बहु श्वास सदाचार लै सिखावहीं ॥ भई यों अबार देखे खोलिकै किंवार जोपै जूंठनि लगी है मुख धोए विना आवहीं ॥ १९६ ॥ पूंछे प्रभु भयो कहा कहिये प्रगट खोलि बोलिहू न आवे हमें देखि नई रीति है ॥ कर्मा सुनाम एक खीचरी खवावै

मोहिं मैंहू नित्य पाऊ जाइ जानि सांची प्रीति है ॥ गयो मेरो संत रीति भांतिसो सिखाइ आओ मत सो अनंत विन जाने यों अनीति है ॥ कही वाही साधुसों जु साधि आओ वही बात जाइकै सिखाई हिये आई बड़ी भीति है ॥ १९७ ॥

श्रीसिलपिल्ले कुंवरि उभय बाईजूका वर्णन।

क०-सिल्लपिल्ले भक्त उभै बाई सोई कथा सुनो एक नृपसुता एक सुता जिमीदारकी ॥ आए गुरु घर देखि सेवाढिग बैठी जाइ कही ललचाइ पूजा कीजै सुकुमारकी ॥ दियो शिला ट्रक लेके नाम कहि दियो वही कीजिये लगाइ मन मति भवपारकी ॥ करत करत अनुराग बढ़ि गयो भारी बड़िये विचित्र रीति यही शोभासारकी ॥ १९८ ॥ पाछिले कबित्तमांझ दुहुनिकी एक रीति अब सुनो न्यारी न्यारो नीके मन दीजिये ॥ जिमीदारसुता ताके भये उभै भाई रहे आपसमैं वैर गांव मारचो सबै छीजिये ॥ तामें गई सेवा इन बड़ोई कलेश कियो जियो नहिं जात खानपान कैसे कीजिये ॥ रहे समुझाइ याहि कछु न सुहाइ तब कहा जाइ ल्यावो तेरे दोऊ सम धीजिये॥१९९॥ गई वाही गांव जहां दूसरो जु भाई रहे बैठे हो आथाईमांझ कही वही बात है ॥ लेवो जु पिछानि तहां बैठे एक ठौर प्रभु बोलि उठचो कोउ बोलिलीजे प्रीति गात है ॥ भई आंखि राती लगी फटबेको छाती सो पुकारी स्वर आरतसों मनो तनपात है ॥ हिये आइ लागे दुख सब दूरि भागे कोऊ बडे भाग जागे घर आई न समात है ॥ २०० ॥ सुनो नृपसुता बात भक्ति गात गात पगी भगी सब बिषै वृत्ति सेवा अनुरागी है ॥ व्याही हि विमुखघर आयो लेन वहै वर खरी अरबरी कोइ चित्त चिंता लागी है॥ करि दई संग भरी आप-नेही रंग चली अलीहू न कोऊ एक वही जासों रागी है ॥ आयो ढिग पति बोलि कियो चाहै रति याकी और भई गति मति आवो बिथा

पागी है ॥ २०१ ॥ कौन वह बिथा ताको कीजिये जतन बेगि बड़ो उदबेग नेकु बोली सुख पीजिये ॥ बोलिबो जो चाहो तोपे चाहो हरिभक्ति हिये बिन हरिभक्ति मेरे अंग जिनि छीजिये ॥ आयो रोस भारी अब मनमै बिचारी वा पिटरीमें जु कछु सोई लेके न्यारो कीजिये ॥ करी वही बात मूसि जलमांझ डारि दई नई भई ज्वाला जियो जात नहिं खीजिये ॥२०२॥ तज्यो जल अन्न अब चाहत प्रसन्न कियो होत क्यों प्रसन्न जाको सरवसु लियो है ॥ पहुँचे भवन आइ दई सो जताइ बात गात अति छीन देखि कहा हठ कियो है ॥ कहे सोई करें अब परें पाँइ तेरे हम बोली जब वेई आवें तोही जात जियो है॥२०३॥आए वाही ठौर भौर आइ तनु भूमि गिरयो ढरयो जल नैन सुर आरति पुकारी है ॥ भक्तिवश श्याम जैसे कामवश कामी न धाइ लगे छातीसों जु संगसों पिटारी है ॥ देखि पति सासु आदि जगतविवाद मिट्यो वादिही जनम गयो नेक न संभारी है ॥ किये सब भक्त हरि साधु सेवा माँझ पगे जगे कोऊ भाग घर वधू यों पधारी है ॥ २०४ ॥

अथ भक्तनहितसुत विष दियो इन उभय बाईजीका वर्णन।

टी०क०—भक्तनिके हित सुत विष दियो एउ उभे बाई बात नीके करि खोलिके बताइये ॥ भयो एक भूप ताके भक्तहू अनेक आवें आयो भक्त भूप तासों लगनि लगाइये ॥ नितहि चलत तोपै चलन न देत राजा बितयो बरष मास कहे भोर जाइये ॥ गई आस टूटि तन छूटिबेकी रीति भई लई बात पूंछी रानी सब ले जनाये ॥ २०५ ॥ दियो सुत विष रानी जानी नृप जीवें नाहिं संत हैं स्वतंत्र सोई इन्हे कैसे राखिये ॥ भये विनभोर वधू सोर करि रोइ उठी भोइ गई रावलमें सुनि साधु भाखिये ॥खोलि डारी कटिपन भवन प्रवेश कियो लियोदेखि बालकको नीलतनु साखिये ॥ पूंछ्यो भूप तियासों जु साँच कहो कियो

कहा कही तुम चल्यो चाहो नैन अभिलाखिये ॥ २०६ ॥ छाती खोलि रोयो क्योंहू बोलिहू न आवे मुख सुख भयो भारी भक्ति-रीति कछु न्यारिये ॥ जानिउ न बात जाति पांतिको विचार कहा अहो रससागर सो सदा उर धारिये ॥ हरिगुण गाय साखि संतनि बताय दियो बालक जिवाय लागी ठौर वह प्यारिये ॥ संगके पठाय दिये रहे जेवे भीजे बोले आप जाऊं जो न मारिके बिडारिये ॥ २०७ ॥ सुनों चित लाय बात दूसरी सुहाय हिये जिये जगमाहिं जौलौं संतसंग कीजिये ॥ भक्त नृप एक सुता ब्याही सो अभक्त महा जाके घरमांझ जन नाम नहि लीजिये ॥ पल्यो साधुसीधेसों शरीर दृग रूपपले जीभ चरणामृतके स्वादहीसों भीजिये ॥ रह्यो कैसे जाय अकुलाय न बसाय कछु आवे पुर प्यारे तब विष सुत दीजिये ॥ २०८ ॥ आये पुर संत आय दासीने जनाय कही सही कैसे जात सुत विष लेके दियो है ॥ गए वाके प्राण रोइ उठी किल कानि सब भूमि गिरे आनि टूक भयो जात हियो है ॥ बोलि अकुलाय एक जीबेको उपाय जोपै कियो जाय पिता मेरे केऊ बार कियो है ॥ कहे सोई करे दृग भरे ल्यावो संतनको कैसे होत संत पूंछो चेरी नाम लियो है ॥ २०९ ॥ चली ले लिवाय चेरी बोलिबो लिखाय दियो देखिके धरणि परि पांय गहि लीजिये ॥ कीनी वही रीति दृग धारा मानो प्रीति संत करी यों प्रतीति गृह पावनको कीजिये ॥ चले सुख पाय दासी आगेही जनाय जाय आय ठाढी पौरि पांय गहे मति भीजिये ॥ कही हरे बात मेरे जानो पितु मात मै तो अंगमें न मात आजु प्राण वारि दीजिये ॥२१०॥ रीझि गये संत पीति देखिके अनंत कही होयगी जु वही सो प्रतिज्ञा तैं जु करी है ॥ बालक निहारि जानि विष निरधार दियो दियो चरणामृतको प्राणसंज्ञा धरी है ॥ देखत विमुख जाय पाय ततकाल

लिये किये तब शिष्य साधुसेवा मति हरी है ॥ ऐसे भूपनारी पति राखि सब साखि जन रहे अभिलाषि जोपै देखो याहि घरी है॥२११॥

छप्पय–रंगनाथको सदय करन बहु बुद्धि बिचारी ॥ कपटधर्म रचि जैन द्रव्यहित देह बिसारी॥हंस पकर-बेकाज बधिकबानो धरि आए ॥ तिलक दामकी स-कुच जानि तिहिं आप बँधाए ॥ सुतवध हरिजन देखिकै दै कन्या आददियो ॥ आशय अगाध दुहुं भक्तको, हरितोषण अतिशय कियो ॥ ५१ ॥

दोऊ मामाभानजेजूका वर्णन ।

टी०क०–ऐसे सो अगाध दोऊ भक्त मामा भाजनेको दियो प्रभु तोष ताकी बात चित धारिये ॥ घरते निकसि चले बनको विवेकरूप मूरति अनूप बिन मंदिर निहारिये ॥ दक्षिणमें रंगनाथ नाम अभिराम जाको ताको ले बनावे धाम काम सब टारिये ॥ धनको जतन फिरे भूमिपै न पायो कहूं चहूं दिशि हरि देख्यो भयो सुख भारियै॥२१२॥ मंदिर सरावगीको प्रतिमा सुपारसकी आरस न कियो वेद न्यूनहू बतायो है ॥ पावें प्रभु सुख हम नर्कही गये तो कहा धरक न आय जाय कानले फुकायो है ॥ ऐसे करि सेवा जासे हरि मति केवराज्यों सेवरासमाज सब नीकेके रिझायो है ॥ दियो सौंपि भार तब लेबेको विचार करे हरे कौन राह भेद राजानिपै पायो है ॥२१३॥ मामा रह्यो भीतर औ ऊपरसों भानजो है कलशभँवरकली हाथसों फिरायो है ॥ जेवरा ले फाँसी दियो मूरतिसो खेंचि लई और बार बहु आप नीके चढ़ि आयो है ॥ कियो हो जु द्वार तामैं फूलि तन फँसि बैठ्यो अतिसुख पाय तब बोलिकै सुनायो है ॥ काटि लेवो सीस ईश भेषकी न निंदा करे भरे अंकवार मन कीजिये सवायो है ॥ २१४ ॥ काटि लियो सीस ईश इच्छाको बिचार कियो जियो नहीं जात तऊ चाह मति पागी है॥ जोपै तनत्याग करों कैसे आशसिंधु तरों ढरों वाही ओर आयो तहां

नीम खुदी लागी है ॥ भयो शोक भारी हमै व्हैगई अबारी काहूं औरने विचारी देखें वही बड़भागी है ॥ भरि अँकवारी मिले मंदिर संवारी झिले खिले सुख पाइ नैन जाने जोइ रागी है ॥ २१५ ॥

अथ हंसप्रसंगजूका वर्णन।

कबित्त–कोढि भयो राजा किये जतन अनेक तोपै एकहु न लागै कह्यो हंसनि मँगाइये ॥ वधिक बुलाय कही बेगही उपाय करो जहां तहां ढूढि अहो इहां लगि लाइये ॥ कैसे करि ल्यावें वे तौ रहें मानसरमांझ ल्यावोगे छुटोगे तब जना चारि जाइये ॥ देखतही उड़िजात जातिको पिछानि लेत साधुसों न डरें जानि भेख ले वनाइये ॥ ॥ २१६ ॥ गए जहां हंस संतबानो सो प्रशंस देखि जानिकै बँधाये राजापास लेके आये हैं ॥ मानि मतिसार प्रभु वैद्यको स्वरूप धारि पूछिके बजार लोग भूपढिग लाये हैं॥काहेको मँगाये पक्षी आछी हम करें देह छोड़ि दीजे इन्हे कही नीठि करि पाए हैं ॥ औषधी पिसाय अंग अंगनि मलाइ किये नीके सुख पाइ कहीं उनिको छुटाए हैं ॥ २१७॥ लेवो भूमि गांव बलि जाउं या दयालुताके भाल भाग जाके ताको दरशन दीजिये ॥ पायो हम सब अब करो हरिसाधुसेवा मानुस जनम ताकी सफलता कीजिये ॥ करि ले निदेश देश भक्तिको विस्तार भयो हंसहित सार जानि हिये धरि लीजिये ॥ बधिक न जानि जासों खगनि प्रतीति कीनी ऐसो भेष छोंड़िये न राख्यो मति भीजिये ॥ २१८ ॥

अथ महाजन सदाव्रतीजूका वर्णन।

कबित्त–महाजन सुनो सदाव्रती ताके भक्तपण मनमें बिचार सेवा कीजे चित लाइकै ॥ आवत अनेक साधु निपट अगाध मत साधि लेत जैसी आवे सुबुद्धि मिलाइकै ॥ संत सुख मानि रहि गयो घरमाझ सदा सुतसो सनेह नित खेले संग जाइकै ॥ इच्छा भगवान मुख्य गौन लोभ जानि मारयो डारयो धूरि गाड़ि ग्रह आयो पछि-

ताइकै ॥ २१९ ॥ देखे महतारी मग बेटा कहां रह्यो पग बीते याम चारि तऊ धाममें न आयो है ॥ फेरी पुर डौंडी ताके संग संग आप लौंडी कह्यो यों पुकारि सुत कौने बिरमायो है ॥ बेगिही बताय दीजे अभरण दियो लीजे कही सो सन्यासी एहि मार्‌यो मन लायो है ॥ दई ले दिखाइ देह बोल्यो याको गहि लेह याहीने हमारो पुत्र हत्यो नीके पायो है ॥ २२० ॥ बोल्यो अकुलाय मैं तो दियो है बताय मोहिं देवो जू छुड़ाय नाहिं झूंठ कछु भाखिये ॥ लेवो मति नाम साधु जो उपाधि मेट्यो चाहो जावो उठि और कहूं मानि छोरि नाखिये ॥ आयकै विचार कियो जानि सकुचायो संत बोलि उठी तिया सुत देकै नीके राखिये ॥ पर्‌यो वधू पाँय तेरी लीजिये बलाय पुत्र शोकको मिटाय और खरी अभिलाखिये ॥ २२१ ॥ बोलि लियो संत सुता कीजिये जु अंगीकार दुख सो अपार काहू विमुखको दीजिये ॥ बोल्यो मुरझाय मैं तो मार्‌यो सुत हाय मोपै जियो हू न जाय मेरो नाम नहिं लीजिये ॥ देखो साधुताई धरी सीसपै बुराई जहां राई हू न दोष कियो मेरुसम रीझिये ॥ दई बेटी ब्याहि कही मेरो उर दाह मिटे कीजिये निबाह जगमाहि जौलौं लीजिये ॥ २२२ ॥ आप गुरु घर सुनि दीजे कौन सर बड़े सिद्ध सुखदाई साधुसेवा ले बताई है ॥ कह्यो सुत कहां आजुपायो कही कैसी भांति भांति को बखाने मीच जग लपटाई है ॥ प्रभुने परीक्षा लई सोई हमै आज्ञा दई चलिये दिखावों जहां देहको जराई है ॥ गए वाही ठौर शिरमोर हरिध्यान कियो जियो चल्यो आयो दासकीरति बढ़ाई है ॥ २२३ ॥

छप्पय–दारुमयी तरवार सारमै रची भुवनकी ॥ देवाहित सितकेश प्रतिज्ञा राखी जनकी॥कमध्वजके कपि चारु चितापर काष्ठ जु ल्याए॥जैमलके युद्धमाहिं

अश्व चढ़ि आपुन धाए ॥ घृतसहित भैंस चौगुनी, श्रीधर संग सायक धरन ॥ चारों युग चतुर्भुज सदा, भक्तगिरा साँची करन ॥ ५२ ॥

अथ भुवनचौहानजूका वर्णन ।

कबित्त–सुनो कलिकाल बात और है पुराणख्यात भुवन चौहान जहां रानाकी दुहाई है ॥ पट्टा जुग लाख खात सेवा अभिलाष साधु चल्यो सो सिकार नृप संग भीर छाई है ॥ मृगी पाछे परे करे टूक हुती गर्भिणी यों आइ गई दया कही काहेको लगाई है ॥ कहें मोको भक्त किया करों मैं अभक्तनिकी दारुतरवार धारों यही मन भाई है ॥२२४॥ और एक भाई तानें देखी तरवार दारु सक्यो न सँभारि जाइ रानाको सुनाई है ॥ नृप न प्रतीति करे करे यह सौंह नाना बाना प्रभु देखि तेज बात न चलाई है ॥ ऐसेही वरष एक कहत बितीत भयो कह्यो मोहिं मारि डारो जोपै मैं बनाई है ॥ करी गोंठ कुंड जाय पायके प्रसाद बैठे प्रथम निकासि आप सबनि दिखाई है ॥ २२५ ॥ क्रमसों निहारि कही भुवन विचारी कहा कह्यो चाहे दारु मुख निकसत सार है ॥ काढ़िके दिखाई मानों बिजुरी चम चमाई आई मनमांझ बोल्यो याको मारो भार हैं ॥ भक्त कर जोरिकै बचायो आजु मारिये क्यों कही बात झूंठ नहिं कीन्ही करतार है ॥ पटा दूना दून पावो मति मुजराको मैही घर आऊं होइ मेरो निसतार है ॥ २२६ ॥

अथ देवा पंडाजूका वर्णन ।

कबित्त–दरशन आयो राना रूप चतुर्भुजजूके रहे प्रभु पौढि हार सीस लपटाए हैं॥ बेगि दे उतारि करि लैकै गरे डारि दियो देखि धौरो बार कह्यो धौरे बार आए हैं॥ कहत तो कहिगई सही नहीं जात अब महिपति डारे मारि हरिपद ध्याए हैं॥अहो हृषीकेश करो मेरे लिये श्वेत-

केश लेशहु न भक्ति कही किये देखो छाए हैं ॥ २२७॥ मानि राजात्रास दुखरास सिंधु बढ़्यो हुतो सुनिकै मिठास बानी मानो फेरि जियो है ॥ देखे श्वेतबार जानि कृपा मो अपार करी भरी आंखें नीर सेवा लेश मैं न कियो है ॥ बड़ेई दयाल सदा भक्तप्रतिपाल करें मैं तो हों अभक्त तौ-पै सकुचायो हियो है ॥ झूंठे सनबंध हुते नांव लाजे मेरोई जू ताते सुख साजे यह दरसाइ दियो है ॥ २२८ ॥ आयो भोर राजा श्वेत बारसों निहारि रह्यो कह्यो केश काहूके ले पंडाने लागाए हैं ॥ ऐंचि लियो एक तामें खौंचिकै चढ़ाई नाक रुधिरकी धारा नृपअंग छिरकाए हैं ॥ गिरयो भूमि मूरछा व्है तनकी न सुधि कछु जाग्यो याम बीते अपराध कोटि गाए हैं ॥ यही अब दंड राज बैठे सो न आवे इहां अबलोहूं आनि मानि करे जो सिखाए हैं ॥ २२९ ॥

अथ कामध्वजजूका वर्णन ।

कबित्त–भए चारि भाई करें चाकरी वे रानाजूकी तामें एक भक्ति करे बनमें बसेरो है ॥ आयके प्रसाद पावे फेरि उठि जाय तहां कहे नेकु चलो तो महीना लीजे तेरो है ॥ जाके हम चाकर हैं रहत हजूर सदा मेरे तो जरावै कौन वही जाको चेरो है ॥ छूट्यो तन बन राम आज्ञा हनुमान आए कियो दाह धुवां लागे प्रेत पार नेरो है ॥ २३० ॥

अथ जैमलजूका वर्णन ।

कबित्त–मेरो तो प्रथम बास जैमल नृपति ताको सेवा अनुराग नेकु खटको न भावही ॥ करे घरा दश तामें कोऊ जो खबर देत लेत नहीं कान और ठौर मरवावहीं ॥ हुतो एक भाई वैरी भेद यह पाई लियो कियो आनि घेरो माता जाइके सुनावही ॥ करें हरि भली प्रभु घोरा असवार भए मारी फौज सब कहें लोग सचुपावहीं ॥ २३१ ॥ देखें हांके घोरा अहो कौन असबार भयो गयो आगे जब देखे वही वैरी परयो है ॥ बोल्यो सुख पाइ आज

सांवरो सिपाई को है एकलेही फौज मारि मेरो मन हरयो है॥ ताहि को दिखाइ देइ मेरे तरसत नैन बैननिसों जानि वही श्याम प्रभु ढरयो है॥ पूँछिके पठाई दियो वानें पन यहै लियो कियोई निदेश करे भली बुरो करयो है॥ २३२॥

अथ ग्वालभक्तजूका वर्णन।

कबित्त—भयो एक ग्वाल साधुसेवा सो रसाल करै परै जोई हाथ लेके संतनि खवावही॥ पायो पकवान मध्य भयो तब खायबेको आयबेकी ढील चोर भैंस सो चुरावही॥ जानिकै छिपाई बात मातासों वनाय कही दई विप्र भूखो घृत संग फेरि आवही॥ दिन है दिवारीको सु उनि पहिरायो हांस आइ घर जाम लिये रांभके सुनावहीं॥ २३३॥

अथ श्रीधरस्वामीजूकी आद्यावस्थावर्णन।

भागवतटीका करी श्रीधर सुजानि लेहु गेहमें रहत करें जगतव्योहार हैं॥चले जात मग ठग लगे कहैं कौन संग संग रघुनाथ मेरे जीवन अधार हैं॥ जाबि इन कोऊ नाहिं मारिबो उपाय करे धरे चाप बाण आवें वही सुकुमार हैं॥ आए घर ल्याए पूंछे श्याम सो स्वरूप कहां जानि वे तो पार किये आप डारयो भार है॥ २३४॥

छप्पय—निष्किंचन इकदा र तासुके हरिजन आए॥ विदित बटोही रूप भये हरि आप लुटाये॥ साखि देनको श्याम खुदै प्रभु आप पधारे॥रामदासके सदन राय रणछोर सिधारे॥ आयुधछत तन अनुगके,बलि बंधन अपु वपु धरे॥भक्तिनिसंग भगवान नित,ज्यों ग उ वछगोहन फिरे॥ ९३॥

अथ निष्किंचनभक्तजूका वर्णन।

कबित्त—भक्तनके संग भगवान ऐसे फिरयो करें जैसे बत्स संग फिरै नेहवती गाई है॥ हरिपाल नाम विप्रधाममें जनम लियो कियो अनु-

राग साधु दई श्रीलुटाई है ॥ केतिक हजार ले बजारके करज आए गरज न सरै कियो चोरीको उपाई है॥ विमुखको लेत हरिदासको न दुःख देत आए संत द्वार तियासंग बतराई है॥ २३५ ॥ बैठे कृष्ण रुक्मिणी महल तहां सोच परचो हऱ्यो मन साधु सेवा साहरूप कियो है॥ पूंछी चले कहां कही भक्त है हमारे एक मैहूं आऊं आवो आय जहां पूछि लियो है॥ अजू मग चल्यो जात बड़ो उतपात मधि कोऊ पहुँचावै देवो ले रुपैया दियो है॥ करो समाधान संत मैं लिवाइ जाऊं इन्हे जाइ बनमांझ देखि बहु धन जियो है॥ २३६ ॥ देखे जो निहारि माला तिलक न सदाचार होयँगे भंडार धन जोपै इतो ल्यायो है ॥ लीजिये छिनाय याहि बार कहै डारि देवौ दियो सब डारि छला छिंगुनिमें छायो है॥ अंगुरी मरोरि कही बडो तू कठोर अहो तोको कैसे छोडों संत जैवे मोको भायो है ॥ प्रगट दिखायो रूप सुंदर अनूप वह मेरो भक्त भूप लेके छातीसों लगायो है॥ २३७॥

अथ साखी गोपालजूका वर्णन।

कबित्त–गौड़देशवासो उभै विप्र ताकी कथा सुनो एक वैश्य वृद्ध जातिवृद्ध छोटो संग है॥ और और ठौर फिरि आप फिरि आए बन तब भयो दुखी कीन्ही टहल अभंग है॥ रीझ्यो बड़ो द्विज निजसुता तोको दई अहो रहो नहिं चाह मेरे लई बिनै रंग है॥ साखी दे गोपाल अब बात प्रतिपाल करो ढरो कुलग्राम भाम पूँछ्यो सो प्रसंग है ॥ २३८॥ बोल्यो छोटि विप्र क्षिप्र दीजिये कही जो बात तिया सुत कहें अहों सुता याके योग है ॥ द्विज कहे नाहिं कैसे करों मै तो देन कही कही भूलि भयो विथाको प्रयोग है॥ भई सभा भारी पूंछ्यो साखी नर नारी श्रीगोपाल वनवारी और कौन तुच्छ लोग है॥ लेवो जु लिखाइ जोदै साखी भरे आइ तोपै व्याहि बेटी दीजे लीजे करो सुख भोग है॥ २३९ ॥ आयो वृंदावन

वनवास श्रीगोपालजूसों बोल्यो चलो साखी देवो लई है लिखाइके ॥ बीते कैऊ याम तब बोले श्याम सुंदर जू प्रतिमा न चले तोपै बोले क्यों जु भाइके ॥ लागे जब संग युग सेर भोग धरो रंग आधे आध पावें चले नूपुर बजाइके ॥ ध्वनि तेरे कान परे पाछे जिनि दीठ करे करे रहौ वाही ओर कही मैं सुनाइके ॥ २४० ॥ गए ढिग गांव कही नेकु तो चिंता उर है चितएते ठाढ़े दियो मृदु मुसकायके ॥ ल्यावो जू बुलाय कह्यो आय देखो आय आप सुनतहि चौकी सब ग्राम आयो धायके ॥ बोलिके सुनाई साखी पूजि हिये अभिलाषी लाख लाख भाँति रंभ भरयो उर भायके ॥ आयो न सरूप फेरि बिनै करि राख्यो घेरि भूप सुखढेरि दियो अबलों बजायके ॥ २४१ ॥

अथ रामदास भक्तजूका वर्णन ।

क०–द्वारिकाके ढिग ही डाकौर एक गांव रहे रहे रामदास भक्त भक्तियाको प्यारिये ॥ जागरण एकादशी करै रणछोरजूके भयो तन वृद्ध आज्ञा दई नहिं धारिये ॥ बोले भरि आय तेरो आयबो सह्यो न जाय चलों घर धाय तेरे ल्यावो गाडी भारिये ॥ खिरकी जू मंदिरके पाछे तहां ठाढ़ी करौ भरौ अंकवारी मोको बेगही पधारिये ॥ २४२ ॥ करि वाही भांति आयो जागरण गाड़ो चढ़ि जानी सब वृद्ध भयो थकी पांवगति है ॥ द्वादशीकी आधीरात लेके चल्यो मोदगात भूषण उतारि धरे जाकी साँची रति है ॥ मंदिर उघारि देखें परी है उजारि तहां दौरी पाछे जानि देखें करी कौन मति है ॥ बापी पधराय होय जाय सुखपाय रह्यो गहो चल्यो जाय आनि मारयो धाव अति है ॥ २४३ ॥ देखें चहूँ दिशि गाड़ो कहूँ पै न पाये हरि पछतावो करि कहैं भक्तके लगाई है ॥ बोलि उठ्यो एक इहिओर यह गयो हुतो जाय देखें बावरीको लोहू लपटाई है ॥ दासको जू डारि चोट लई अंगमेंही नहीं मे तो

जाऊं बिजैमूरति बताई है ॥ मेरी सम सोनो लेहु कही जन तोलि देहु मेरे कहां बोल्यो वारी तियाको जिताई है ॥ २४४ ॥ लगे जब तोलिबेको बारी पाछे डारि दई नई गति भई पल उठे नाहिं बारीको ॥ तब तो खिसाने भए सबै उठि घर गए कैसे सुख पावें फिरचो मतिहि मुरारीको ॥ घरही बिराजे आप कह्यो भक्तिको प्रताप जाय करें जोपै फुरे रूप लाल प्यारीको ॥ बलिबंध नाम प्रभु बांधे बलि भयो तब आयुधको छत सुनि आए चोट मारीको ॥ २४५ ॥

छप्पय–जसुस्वामीके वृषभ चोरि व्रजबासी लाये॥ तैसेई दिये श्याम बरष दिन खेत जुताये ॥ नाभिज्यों नंददास मुई इक बच्छि जिवाई ॥ अंब अल्लको नये प्रगट जग गाथा गाई ॥ बारमुखीके, मुकुटको श्रीरंगनाथको शिर नयो॥बच्छहरण पीछे बिदित, सुनो संत अचरज भयो ॥ ५४ ॥

अथ जसूस्वामीजूका वर्णन।

टी०क०–जसूनाम स्वामी गंगायमुनाके मध्य रहे गहै साधुसेवा ताको खेती उपजावही ॥ चोरि गये बैल ताकी इनको न सुधि कछू तैसे श्याम हल जुते बैल मन भावही ॥ आए व्रजवासी पैठ वृषभ निहारि कही इन्हे कौन ल्यायो घर जाय देखि आवही ॥ ऐसे बार दोय चार फिरेहु न ठीक होत पूँछी पुनि ल्याय आय उन्है पै न पावही ॥ २४६ ॥ बड़ाइ प्रभाव देख्यो तैसे प्रभु बैल दियो भयो हिये भाव जाय पाँयनिमें परे हैं ॥ निपट अधीन दीन भाषी अभिलाषी जानि दयाके निधान स्वामी शिष्य लेके करे हैं ॥ चोरी त्यागि दई अति शुद्ध बुद्धि भई नई रीति गहि लई साधुपंथ अनुसरे हैं ॥ अन्न पहुँचावे दूध दही ले लड़ावे आवे संतगुण गावे वे अनंत सुख भरे है ॥ २४७॥

अथ नंददासजूका वर्णन।

टी॰क॰–निकट बरेली गांव तामें सो हवेली रहै नंददास विप्र भक्त साधुसेवारागी है॥ करें द्विज द्वेष तासों मुई एक बछिया ले डारि दई खेतमांझ गारी जकी लागी है॥ हत्याको प्रसंग करै संतजनहूसों लरै हिंदू सो न मारें यह बड़ोई अभागी है॥ खेतपर जाय वाहि लई है जिवाय देखि देखि परि पाँय भक्ति भाये मति पागी है ॥ २४८ ॥

अथ अल्लजूका वर्णन।

टी॰क॰–चले जात अल्ल मग लगो बाग दीठ परयो करि अनुराग हरिसेवा बिसतारिये॥ पके रहैं आंब मांगे मालीपास भोग लिये कहो लीजे कही झुंकि आई सब डारिये ॥ चलो दौरि राजा जहां जाइकै सुनाई बात गात भई प्रीति अलुटत पांव धारिये॥ आवतही लौटि गयो मैं तो जू सनाथ भयो दयो ले प्रसाद भक्तिभाव ले सँभारिये॥ २४९॥

अथ बारमुखीजूका वर्णन।

टी॰क॰–वेश्याको प्रसंग सुनो अति रसरंगभरयो मारयो घर धन अहो तौपै कौन कामको॥ चले मग जात जनु ठौर स्वच्छ आई मन छाई भूमि आसनसों लोभ नहीं दामको॥ निकसी झमकि द्वार हंससे निहारि सब कौन भाग जागे भेद नहीं मेरे नामको॥ मोहरनि पात्र भरि ले महंतआगे धरयो ढऱ्यो दृग नीर कहो भोग करी श्यामकी ॥ २५० ॥ पूँछी तुम कौन काके भौनमें जनम लियो कियो सुनि मौन महाचिंता चित्त धरी है॥ खोलिकै निशंक कहौ शंका जिनि आनौ मन कही बारमुखी तौपै आय पाँय परी है॥ भरयो है भंडार धन करो अंगीकार अब करिये बिचार जोपै तौपै यह मरी है॥ एक है उपाय हाथ रंगनाथजूको अहो कीजिये मुकुट जामें जाति मति हरी है ॥ २५१ ॥ विप्रहू न छुवैं जाको रंगनाथ

कैसे लेत देत हम हाथ तोको रहै इहां कीजिये ॥ कियोई बनाय सब घरको लगाय धन बनि ठनि चली हाथ मधि करि लीजिये॥संत आज्ञा पायके निशंक गई मंदिरमें फिरी यों सशंक दृग तिया धर्म भीजिये ॥ बोले आप याको ल्याय आय पहिराय जाय दियो पहिराय नयो सीस मति रीझिये ॥ २५२ ॥

छप्पय–बीच दिये रघुनाथ भक्तसँग ठगिया लागे ॥ निर्जन बनमें जाय दुष्टक्रम कियो अभागे ॥ बीच दिये सो कहां राम कहि नारि पुकारी ॥ आये शारंगपाणि शोकसागरते तारी ॥ दुष्ट किये निर्जीव सब, दास-प्राणसंज्ञा धरी ॥ और युगनते कमलनयन, कलियुग बहुत कृपा करी ॥ ५५ ॥

टी०क– विप्र हरिभक्त करि गौनो चल्यो तियासंग जाके दूनो रंग ताकी बात ले जनाइये ॥ मग ठग मिले द्विज पूँछे अहो कहा जात जहा तुम जावो यामें मन न पत्याइये ॥ पंथको छुटाय चाहैं बनमें लिवाय जाय कहैं अति सूधो पेड़ो उरमें न आइये ॥ बोले बीच राम तऊ हिये नेकु धकधकी कही उही भाम श्यामनाम कहां पाइये ॥ २५३ ॥ चले लागि संग अब रंगको कुरंग करौ तियापर रीझे भक्ति साँची इन जानी है ॥ गये बनमध्य ठग लोभलगि मार्‍यो विप्र क्षिप्र लेके चले वधू अति बिलखानी है ॥ देखै फिरि फिरि पाछे कहै कहा देखै मार्‍यो तब तो उचार्‍यो देखो वाहि बीच प्रानी है ॥ आये राम प्यारे सब दुष्ट मारि डारे साधु प्राण दे उबारे हित रति यों बखानी है ॥ २५४ ॥

छप्पय-तिलकदाम धरि कोय ताहि गुरु गोविंद जानै॥ षटदर्शनी अभाव सर्वथा घटकरि मानै ॥ भांड़ भक्त-

को भेष हाँसिहित भंडकुल ल्याये॥ नरपतिके दृढ़ नेम ताहिपै पाँव धुवाये॥ भांडभेष गाढ़े गह्यो, दरश परश उपजी भगति॥ एक भूप भागवतकी, कथा सुनत हरि होइ रति॥ ५६॥

टी॰क॰—राजा भक्तराज डोम भांड़ कौन काज होय भोग गई याके धन हरिको न दीजिये॥ आय भेष धारि ले पुजाय नाचैं देके तारि नृपति निहारि कही यों निहाल कीजिये॥ भोजन कराय भरि मोहरनि थार ल्याय आगे धरि बिनै करी अजू यह लीजिये॥ भई भक्तिराशि बोले आवै बास भावै नाहिं बाह गेह रहै कैसे चलै मति भीजिये॥२५५॥

छप्पय—हरिसुमिरण हरिध्यान आन काहू न जनावै॥ अलगनि इहि विधि रहै अंगना मरम न पावै॥ निद्रावश सो भूप वदनते नाम उचाऱ्यो॥रानी पतिपै रीझि बहुत वसु तापर वाऱ्यो॥ ऋषिराज शोचि कह्यो नारिसों, आजु भक्ति मेरी कुजी॥ अंतरनिष्ठ नरपाल इक, परम धर्म नाहिन धुजी॥ ५७॥

टी॰क॰—तिया हरिभक्त कहै पति मैं न भक्त पायो रहै मुरझायो मन शोच बढ्यो भारी है॥ मरम न जान्यो निशि सोवत पिछानो भाव विरहप्रभाव नाम निकस्यो बिहारी है॥ सुनतहि रानी प्रेमसागर समानी भोर संपति लुटाई मान्यो नृपति जियारी है॥ देखि उतसाह भूप पूँछ्यो सो निचाह कह्यो रह्यो तन ठौर नाम जीव यों बिचारी है॥ ॥ २५६॥ देखि तन त्याग पति भई और गति याकी ऐसे रतिवान मैं न भेद कछु पायो है॥भयो दुःख भारी सुद्धि बुद्धि सब टारी तब नेकु न बिचारी भावराशि हियो छायो है॥ निशि दिन ध्यान विरह प्रबल तजे

प्रान भक्तिरसखान रूप कापै जात गायो गायो है ॥ जाके यह होय सोय जानै रस भाये सब डारे मनि खोय यामें प्रगट दिखायो है ॥ २५७ ॥

छप्पय–अनुचर आज्ञा मांगि कह्यो कारजको जैहों ॥ आचारज इक बात तोहिं आयेते कैहों ॥ स्वामी रह्यो समाय दास दर्शनको आयो ॥ गुरुकी गिरा विश्वास फेर सब घरमैं ल्यायो ॥ शिषपन सांचो करनको, विभु सब सुनत सोई कह्यो ॥ गुरुगदित वचन शिष्य सत्य अति, दृढ़ प्रतीति गाढ़ो गह्यो ॥ ५८ ॥

अथ गुरुनिष्ठका वर्णन ।

टी०क०–बड़ो गुरुनिष्ठ कछु घटी साधु इष्ट जाने स्वामी संत पूज्य माने कैसे समझाइये ॥ नित्यही विचारे पुनि टारे पै उचारे नाहिं चल्यो जब रामतिको कही फिरि आइये ॥ शपथ दिवाई न जराइबेको दियो तन लायो यों फिराइ वहै बात जू जनाइये ॥ साँचो भाव जानि प्रान आइ सो बखान कियो करो भक्तसेवा करि वर्षलों दिखाइये ॥ २५८ ॥

छप्पय–सदाचार श्रुति शास्त्रवचन अविरुद्ध उचार्‍यो ॥ नीर क्षीर विवरन्न परमहंसनउर धार्‍यो ॥ भगवत्कृपाप्रसाद परमगति इहि तन पाई ॥ राजसिंहासन बैठि ज्ञातिपरतीति दिखाई ॥ वर्णाश्रमअभिमान तजि, पदरज वंदहिं जासुकी ॥ संदेहग्रंथखंडननिपुण, बाणी विमल रैदासकी ॥ ५९ ॥

अथ रैदासजूका वर्णन ।

टी०क०–रामानंदजूको शिष्य ब्रह्मचारी रहे एक गहे वृत्ति चुकटीकी कहे तासों बानियो ॥ करो अंगीकार सीधो कही दश बीरबार बरषे प्रबल धार तामे वापै आनियो ॥ भोगको

लगावे प्रभु ध्यान नहीं आवें अरे कैसे करि ल्यावे जाइ पूंछी नीच मानियो ॥ दियो श्राप भारी बात सुनी न हमारी घटि कुलमें उतारि देइ सोई याको जानियो ॥ २५९ ॥ माता दूध प्यावे याको छुयेउ न भावे सुधि आवे सब पाछिलि सुसेवाको प्रताप है ॥ भई नभ बानी रामानंद मन जानी बड़ो दंड दियो मानी बेगि आयो चल्यो आप है ॥ दुखी पिता मात देखि धाय लपटाय पाँय कीजिये उपाय किये शिष्य गयो पाप है ॥ स्तनपान कियो जियो लियो उन्हे ईश जानि निपट अज्ञान फेरि भूले भयो ताप है ॥२६०॥ बड़ेई रैदास हरिदास-नसों प्रीति करी पिता न सुहाइ दई ठौर पिछवारही ॥ हुतो धन माल कन दियो हू न हाल तिया पति सुखजाल अहो किये जब न्यारही ॥ गाँठे पग दासी कहूँ बात न प्रकाशी ल्यावे खाल करे जूती साधु संतको सँभारही ॥ डारी एक छानी कियो सेवाको सुस्थान रहे चौंडे आप जानि बाँटि पावे यहे बारही ॥२६१॥ सहे अति कष्ट अंग हिये सुखशील रंग आए हरि प्यारे लियो भक्तभेष धारिकै ॥ कीनो बहुमान खानपानसों प्रसन्न व्हैके दीनो कह्यो पारस है राखियो सँभारिकै ॥ मेरे धन राम कछु पाथर न सेरे काम दाम मैं न चाहों चाहों वारों तन डारिकै ॥ रायी एक सोनो कियो दियो करि कृपा राखो राख्यो वह छांनीमाझ लेहुगो निकारिकै ॥ २६२ ॥ आये फिरि श्याम मास तेरह बितीत भये प्रीति करि बोले कहो पारसकी रीतिको ॥ वाही ठौर जीजे मेरो मन न पतीजे वह चाहो सोई कीजे मैं तो पावत हों भीतिको ॥ लेके उठि गये नये कौतुक सो सुनो पावें सेवत मुहर पांच नितही प्रतीतिको ॥ सेवा हू करत डर लाग्यो निशि कह्यो हरि छोड़ो अरि अपनी औ राखो मेरी जीतिको ॥ २६३ ॥ मानि लई बात नई ठौर ले बनाय चाय संतनि बसाय हरिमंदिर चुनायो है ॥ बिविध बितान तान गनो जो प्रमान होइ भोर गई भक्ति पुरी जग यश गायो है ॥ दरशन आवें लोग नाना-

विधि राग भोग रोग भयो विप्रनको तन सब छायो है ॥ बढ़ेई खि-लारी वे रहें हैं छानि डारी करि घरपै अँटारी फेरि द्विजन सिखायो है ॥ २६४ ॥ प्रीतिरसराशि सो रैदास हरि सेवत हैं घरमें दुराइ लोकरंज-नादि टारी है ॥ प्रेरि दिये हृदै जाइ द्विजनि पुकार करि भरी सभा नृपआगे कह्यो मुख गारी है ॥ जनको बुलाइ समझाइ न्याइ प्रभु सौंपि कीनो जग यश साधुलीला मनुहारी है ॥ जिते प्रतिकूल मैं तो मानों अनुकूल याते संतनप्रभाव मणिकोठरीकी तारी है ॥ २६५ ॥ बसत चितोरमांझ रानी एक झाली नाम नाम बिनकाम खाली आनि शिष्य भई है ॥ संग हुते विप्र सुनि क्षिप्र तन आनि लागी भागी गति नृप आगे भीर सब गई है ॥ वैसेही सिंहासनपै आइके बिराजे प्रभु पढ़े बदबाणी पै न आये यह नई है ॥ पतित पावन नाम कीजिये प्रगट आजु गायो पद गोद आइ बैठे भक्ति लई है ॥ २६६ ॥ गई घर झाली पुनि बोलिकै पठाये अहो जैसे प्रतिपाली अब तैसे प्रतिपा-लिये ॥ आपहू पधारे उन बहु धन पट वारे विप्र सुनि पाँव धारे सीधो दे निबारिये ॥ करिकै रसोई द्विज भोजन करन बैठे द्वै द्वै मधि एक यों रैदासको निहारिये ॥ देखि भई आँखें दीन भाषें शिष्य लाखों भये स्वर्णको जनेऊ काढ्यो त्वचा कोनी न्यारिये ॥ २६७ ॥

छप्पय–भक्तिविमुख जो धर्म सुसब अधरमकरि गायो॥योग यज्ञ ब्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखायो॥ हिंदु तुरकप्रमाण रमैंनी सबदी साखी ॥ पक्षपात नहिं बचन सबनके हितकी भाखी ॥ आरूढ दशा ह्वै जगतपर, मुख देखी नाहिन मनी ॥ कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षटदर्शनी ॥ ६० ॥

अथ कबीरसाहेबजूका वर्णन ।

टी०क०–अतिहि गँभीर मत सरस कबीर हियो लियो भक्तिभाव

जाति पांति सब टारिये ॥ भई न भवानी देह तिलक खानी कह्यो करो गुरु रामानंद गरे माला धारिये ॥ देखें नहिं मुख मेरो मानिकै मलेच्छ मोको जात न्हान गंगा कही मग तन डारिये ॥ रजनीके शेषमें आवेशसों चलत आप परे पग राम कहें मंत्र सो बिचारिये ॥ २६८ ॥ कीनी वही बात माला तिलक बनाई गात मानि उतपात मात सोर कियो भारिये ॥ पहुँची पुकार रामानंदजुके पास आनि कही कोऊ पूँछे तुम नाम ले उचारिये ॥ ल्यावो जू पकारि वाको कब हम कियो शिष्य ल्याये करि परदामें पूँछि कहि डारिये ॥ रामनाम मंत्र यही लिख्यो सब तंत्रनमें खोलि पढ मिले सांचो मति उर धारिये ॥ २६९ ॥ बुने तानो बानो हिये राम मड़रानो कहि कैसेकै बखानों वह रीति कछु न्यारिये ॥ उतनोई करें जामें तन निरवाह होइ भोइ गई और बात भक्ति लागि प्यारिये ॥ ठाढ़े मंडीमाझ पट बेचन लै जन कोऊ आयो मोको देह देहु मेरी है उघारिये ॥ लग्यो आधो फारि आधेसों न काम होत दियो सब लेवो जुपै यहै उर धारिये ॥ २७० ॥ तिया सुत मात मग देखें भूखे आवें कब दबि रहे हाटनमें ल्यावें कहा धामको ॥ सांचो भक्तिभाव जानि निपट सुजान वे तो कृपाके निधान गृह शोच पऱ्यो श्यामको ॥ बालद ले धाये दिन तीनि यों बिताये जब आये घर डारि दई लई है अरामको ॥ माता करे सोर कोउ हाकिम मरोर बाँधे डारो बिन जाने सुत लेत नहीं दामको ॥ २७१ ॥ गये जन दोई चारि ढूँढ़िकै लिवाय लाये आये घर सुनि बात जानि प्रभु पीरको ॥ रहे सुख पाइ कृपा करी रघुराइ दई छिनमें लुटाइ सब बोलि भक्तभीरको ॥ दियो छोंड़ि तानों बानो सुख सरसानो हिये किये रोष धाये सुनि विप्र तजि धीरको ॥ क्योंरे ते जुलाहे धव पायो न बुलाये हमें शूद्रनको दियो जावो कहें यों कबीरको ॥ २७२ ॥ क्यों जु उठि जाऊं कछु चोरी धन लाऊं नित हरिगुण गाऊं कोऊ राहमें न मारी है ॥ उनको ले मान कि-

यो वाहीमें अमान भयो दयो जोपै जाइ हमें तोहिं तो जियारी ॥ घरमें तो नाहिं मंडी जांहि तुम रहो बैठे नीठिकै छुटायो पैंड़ों छिपे व्याधि टारी है ॥ आय प्रभु आप द्रव्य लाय समाधान कियो लियो सुख होइ भक्तिकीरति उजारी है ॥ २७३ ॥ ब्राह्मणको रूप धरि आए छपि बैठे जहां काहेको मरत भूँख जावो जू कबीरके ॥ कोउ जाइ द्वार ताहि देत है अढ़ाई सेर बेर जिनि लावो चले जैये यों बहीरके ॥ आये घर-मांझ देखि निपट मगन भये नये नये कौतुक ए कैसे रहे धीरके ॥ बारमुखी लई संग मानों वाही रंग रँगे जानो यह वात करी डर अति भीरके ॥२७४॥ संत देखि दुरे सुख भयोई असंतनिको तब तो विचार मनमांझ और आयो है ॥ बैठि नृपसभा जहां गएपै न मान कियो कियो एक चीज उठि जल ढरकायो है ॥ राजा जिय शोच पर्यो कर्यो कहा कह्यो तब जगन्नाथ पंडा पाँव जरत बचावो है ॥ सुनि अचरज भेर नृपने पठाए नर ल्याए सुधि कही अजू सांचही सुनायो है ॥ ॥ २७५ ॥ कही राजा रानीसों जु बात वह साँच भई आंच लागि हिये अब कहो कहा कीजिये ॥ चलेही बनत चले सीस तृण बोझ भारी गरेसों कुल्हारी बांधि तिया संग भीजिये ॥ निकसे बजार व्हैकै डारि दई लोकलाज कियो मै अकाज छिन छिन तन छीजिये ॥ दूरिते कबीर देखि व्है गए अधीर महा आये उठि आगे कह्यो डारि मति रीझिये ॥ २७६ ॥ देखिकै प्रभाव फेरि उपज्यो अभाव द्विज आयो बादशाह सो सिकंदर सु नांव है ॥ विमुखसमूह संग मातन्ह मिलाय लई जायके पुकारे जू दुखायो सब गांव है ॥ ल्यावो रे पकरि वाको देखों मैं मकर कैसो अकर मिटाउं गाढ़ जकर तनाव है ॥ आनि ठाढ़े किये काजी कहत सलाम करो जानों न सलाम जानों राम गाढ़े पांव है ॥ २७७ ॥ बांधिकै जंजीर गंगानीरमांझ बोरि दियो जियो तीर ठाढ़ो कहें जंत्र मंत्र आवही ॥

लकरिनमांझ टारि अगनि प्रजारि दई नई मानो भई देह कंचन लजावही ॥ विफल उपाय भयें तऊ नाहिं आये नये तब मतवारो हाथी आनिकै झुकावही ॥ आवत न ढिग ओ चिघारी हाय भाजि जाइ आप आगे सिंहरूप बैठो सो भगावही ॥ २७८ ॥ देख्यो बादशाह भाव कूदि पर्यो गहे पाँव देखि करामात मात भये सब लोग हैं॥ प्रभुपै बचाय लीजे हमे न गजब कीजे लीजे जोइ चाहो गांव देश नाना भोग हैं ॥ चाहें एक राम जाको जपैं आठो याम और दामसों न काम जामें भरे कोटि रोग हैं॥आये घर जीति साधु मिले करी प्रीति जिन्हे हरिकी प्रतीति वेई गायबेके योग हैं ॥ २७९ ॥ होयको खिसाने द्विजजन चारि विप्रनिके मुंडनि मुंडाइ भेष सुंदर बनाए हैं ॥ दूर दुर गांवनिमें नांवनिको पूँछि २ नांव ले कबीरजूको झूंठे न्योति आए हैं ॥ आए सब साधु सुनि एतो दूरि गए कहूं चहूं दिशि संतनके लिये हरि धाए हैं ॥ इनहीको रूप धरि न्यारी न्यारी ठौर बैठे एऊ मिलि गए नीके पोखिकै रिझाए हैं ॥ २८० ॥ आई अपछरा छरिबेको लिये बेष किये हिये देखि गाढ़े फिरि गई नहिं लागी है ॥ चतुर्भुज रूप प्रभु आनिकै प्रगट कियो लियो फल नैननको बड़ो बड़भागी है ॥ सीस धरे हाथ तन साथ मेरे धाम आवो गावो गुन रहो जौलों तेरी मति पागी है ॥ मगहमें जाइ भक्तिभावको दिखाइ बहु फूलन मँगाइ पौढ़ो मिल्यो हरि रागी है ॥ २८१ ॥

छप्पय–प्रथम भवानीभक्त मुक्ति मांगनको धायो॥ सत्य कह्यो तिहिं शक्ति सुदृढ़ हरिशरण बतायो ॥ रामानंद पद पाय भए अति भक्तिकि सींवा ॥ गुण असंख्य निर्मोल संत राखत धरि ग्रीवा ॥ परस प्रणाली सरस भइ, सकलविश्वमंगल कियो ॥ पीपा प्रताप जगवासना, नाहरको उपदेश दियो ॥ ६१ ॥

अथ पीपाभक्तजूका वर्णन ।

टी०क०—गांगरोल गढ़ बड़ो पीपानाम राजा भयो ल्यो पण देवीस-वारंग चढ़यो भारिये ॥ आए पुर साधु सीधो दियो जोई सोई लियो कियो मनमांझ प्रभु बुद्धि फेरि डारिये ॥ सोयो निशि रोयो देखि सु-पनो बिहाल अति प्रेत बिकराल देह धरिकै पछारिये ॥ अब न सुहाय कछु बहु पाय परी गई नई रीति भई याहि भक्ति लागी प्यारिये ॥ ॥ २८२ ॥ पूँछयो हरि पायबेको मग जब देवी कही सही रामानंद गुरु करि प्रभु पाइये ॥ लोग जाने बौरो भयो गयो यह काशीपुरी फुरी मति अति आए जहां हरि गाइये॥द्वारमें न जान देत आज्ञा ईश लेत कही राजमिनहेत सुनि सबही लुटाइये ॥ कह्यो कुवाँ गिरो चले गिरन प्रसन्न हिये जिये सुख पायो ल्यायो दरश दिखाइये ॥ २८३ ॥ किये शिष्य कृपा करि धरि हरिभक्ति हृदै कहो अब जावो गेह सेवा साधु कीजिये॥ बितये वरष जब सरस टहल जानि संत सुख मानि आवें घरमधि लीजिये ॥ आय आज्ञा पाय धाम कीनी अभिराम रीति प्रीतिको न पारावार चीठी लिखि दीजिये ॥ हूजिये कृपालु वही बात प्रीति-पाल करो चले युग बीस जन संग मति रीझिये ॥ २८४ ॥ कबीर रैदास आदि दास सब संग लिये आए पुरपास पीपा पा-लकी ले आयो है ॥ करिहि साष्टांग न्यारी न्यारी बिनै साधुनको धनको लुटाय सो समाज पधरायो है ॥ जैसी कीनी सेवा बह मेवा नाना राग भोग बाणीके न योग भाग कापै जात गायो है ॥ जानि भक्तिरीति घर रहो कै अतीति होउ करिकै प्रतीति गुरुपग लगि धायो है ॥ २८५ ॥ लागी संग रानी दस दोइ कही मानी नहिं कष्टको बनावे डर पावे मन ल्यावहीं ॥ कामरीन फारि मधि मेखला पहरि लेवो डारि आभरण जोपै नहिं भावहीं ॥ काहूपै न होय दियो रोय भोय भक्ति आई छोटी नाम सीता गरे डारी न लजावहीं ॥ यहू दूरि

डारो करो तनको उघारो कियो दयो रामानंद हियो पीपा न सुहावहो ॥ २८६ ॥ जोपै यापै कृपा करी दीजे काहू संग करी मेरे नहीं रंग यामें कही बार बार है ॥ सौंहको दिवाय दई लई तब कर धरी चले ढरी विप्र एक छोड़े न विचार है ॥ खायो विष ज्यायो पुनि फेरिकै पठायो सब आयो यों समाज द्वारावती सुखसार है ॥ रहे कैउ दिन आज्ञा मांगी इन रहिबेकी कूदे सिंधुमांझ चाह उपजी अपार है ॥ ॥ २८७ ॥ आये आगे लेन आप दियो है पठाय जन देखि द्वारावती कृष्ण मिले बहु भायकै ॥ महल महलमांझ चहल पहल लेखि रहे दिन सात सुख सकै कौन गायकै ॥ आज्ञा दई जायबेकी जायबो न चाहे हिये पिये वह रूप देखि मोहिंको जु जायकै ॥ भक्त बूड़ि गयो यह बड़ाई कलंक भयो मेटो तम अंक शंक गहि अकुलायकै ॥२८८॥ चले पहुँचायबेको प्रीतिके आधीन आप बिन जल मीन जैसे ऐसे फिरि आये हैं ॥ देखि नई बात गात सूखे पट भीजे हिये लिये पहिं-चानि आनि पग लपटाये हैं ॥ दई लेके छाप पाप जगतके दूरि करो ढरो कहूँ और कहि सीता समझाये हैं ॥ छेठेई मिलान बनमें पठा-नभेंट भइ लई छीनि तिया कियो चैन प्रभु धाये हैं ॥ २८९ ॥ अभू-लगि जावो घर कैसे २ आवें डर बोली हरि जानिये न भाव पै न आयो है ॥ लेतहों परीक्षा मैं तो जानों तेरी शिक्षा तौपै सुनि दृढ़ बात कान अति सुख पायो है ॥ चले मग दूसरे सु तामें एक सिंह रहे आयो बास लेत शिष्य कियो समझायो है ॥ आए और गांव शेषशायी प्रभु नाम रहे करें वास हरे ढरे चींवर सुहायो है ॥ २९० ॥ दोउ तिया पति देखे आए भागवत तौपै घरकी कुगति रति साँची ले दिखाई है ॥ लहँगा उतारि बेंचि दियो ताको सीधो लियो करौ अजू पाक वधू कोठीमें दुराई है ॥ करिलै रसोई सोई भोग लगि बैठे कह्यो आवो मिलि दोउ लेउ पाछे शीत भाई है ॥ वाहूको बुलावो ल्यावो आनिकै जेंवावो तब

सीता गई वाही ठौर नगन लखाई है ॥ २९१ ॥ पूँछे कहो बात ए उघारे क्यों हैं गात कही ऐसेही बिहात साधुसेबा मन भाई है ॥ आवें जब संत सुख होत है अनंत तन ढक्यो के उघारो कहा चरचा चलाई है ॥ जानि गई रीति प्रीति देखि एक इनहीमें हमको कहावे तौपै छटाहू न पाई है ॥ दियो पट आधो फारि गहिकै निकारि लई भई सुख सेल पाछे पीपासों सुनायी है ॥ २९२ ॥ करें वेश्याकर्म अब धर्म है हमारो यहो कही जाइ बैठी जहां नाजनकी ढेरी है ॥ घेरि आए लोग जिन्हे नैननको रोग लखि दूरि भयो सोग नेकु नीकेहु न हेरी है ॥ कहें तुम कौन वारमुखी नहिं भौन संग भरुवा सु गहे मौन सुनि परी बेरी है ॥ करी अन्नराशि आगे मुहरें रुपैया पागे पठै दई चींघरके तबहीं निबेरी है ॥२९३॥ आज्ञा मांगी टोड़े आए कभू भूखे कभू धाए औंचकही दाम पाए गयो हो सनानको ॥ मुहरनिभांड़ो भूमि गाड्यो देखि छोंड़ि आयो कही निशि तिया बोलि जावो सर आनको ॥ चोर चाहे चोरी करे टरे सुनि वाही ओर देखी जो उघारि साँप डारे हते प्रानको ॥ ऐसे आय परी गनी सात सतवीस भई तोले पांच बांट करे एकके प्रमानको ॥२९४॥ जोई आवे द्वार ताहि देत है अहार और बोलिकै अनंत संत भोजन करायो है॥बीते दिन तीन धन खाय प्यायछीन कियो लियो सुनि नाम नृप देखिबेको आयो है ॥ देखिकै प्रसन्न भयो नयो देवो दीक्षा मोहिं दीक्षा है अतीत करें आयसु सुहायो है ॥ चाहो सोई करो व्है कृपालु मोको डरो अजू धरो आनि संपति औरानि जाय ल्यायो है ॥ २९५ ॥ करिकै परीक्षा दई दीक्षा संग रानी दई भई ए हमारी करो परदा न संतसों ॥ दियो धन घोरा कछु राख्यो दे निहोरा भूप मान तन छोरा बड़ो मान्यो जोव जंतसों ॥ सुनि जरि बरि गए भाई सैन सूरजके ऊरज प्रताप कहा कहे सीताकंतसों ॥ आयो बनजारो मोल लियो चाहै खेलनको दियो वह काय कहो पीपाजू अनंतसों ॥

॥२९६॥बोल्यो बनजारो दाम खोलि खेला दीजिये जु लीजिये जु आनि गांव चरण पठाए हैं॥गये उठि पाछे बोलि संतनि महाछो कियो आयो वाही समै कही लेहु मनभाए हैं॥ दरशन करि हिये भक्ति भाव भर्यो आनि आनिके बसन सब साधु पहिराए हैं ॥ और दिन न्हान गए घोरा चढ़ि छोड़ि दियो लियो बांध्यो दुष्टनिने आप मानो ल्याए हैं ॥ ॥ २९७ ॥ गए हैं बुलाय आप पाछे घर संत आए अन्न कछु नाहिं कहूँ जाय करि ल्याइये ॥ विषयी बणिक एक देखिके बुलाइ लई दई सब सोंज कही सही निशि आइये ॥ भोजन करतमांझ पीपाजू पधारे पूँछि वारे तन तब प्रान तब कहिके जनाइये॥ करिकै सिंगार सीता चली झुंकि मेह आयो कांधपै चढ़ायो वपु बनिया रिझाइये ॥२९८॥ हाटपै उतारि दई द्वार आप ठाढ़े रहे सूके पग माता कैसे करि आई हौ ॥ स्वामिजू लिवाय ल्याय कहां हैं निहारों जाय आय पाँय पर्यो ढर्यो राखो सुखदाई हो॥ मानो जिनि शंक काज कीजिये निशंक धन दियो बिन अंक जापै लरें मरें भाई हो ॥ मर्यो लाज भार चाहे धर्यो भूमि फारि दृग बहे नीर धार देखि दई दीक्षा पाई हो ॥ २९९ ॥ चलत चलत बात नृपतिश्रवण परी भरी सभा विप्र कहें बड़ी विपरीति है ॥ भूपमन आई यह निपट घटाइ होत भक्त सरसाई नहिं जानें घटी प्रीति है ॥ चले पीपा बोध देन द्वारहिते सुधि दई लई सुनि करि आवो करों सेवारीति है ॥ बड़ो मूढ राजा मोजा गाठे बैठ्यो मोची घर सुनि दौरि आयो रहे ठाढे कौन नीति है ॥ ३०० ॥ हुती घरमांझ बांझ रानी एक रूपवती माँगी वही ल्यावो वेगि चल्यो सोच भारी है ॥ डग मग पाँव धरे पीपा सिंहरूप करे ठाढ़े देखि डरे इत आवे आप ख्वारी है ॥ जाय तो बिलाय गयो तियाढिग सुत भयो नयो भूमिपर कला जानि न तिहारी है ॥ प्रगट्यो स्वरूप निज खीझिके प्रसंग कह्यो कहां वह रंग शिष्य भयो

लाज टारी है ॥ ३०१ ॥ कियो उपदेश नृप हृदैमें प्रवेश कियो लियी वही पन आप आयो निजधाम है ॥ बोल्यो एक नाम साधु एक निशि देहु तिया लेहु कहि भागो संग भागी सीता बाम है॥ प्रात भए चले नाहिं रानिहिकी आज्ञा प्रभु चल्यो हरि आगे घर घर देखि ग्राम है॥ आय वाही ठौर चल्यो माता पहुँचाय आऊं आये गहे पाँव भाव भयो गयो काम है ॥३०२॥ विषयी कुटिल चारि साधु भेष लियो धारि कीनी मनोहारि कही तिया निज दीजिये ॥ करिकै सिंगार सीता कोठेमांझ बैठी जाय चाहे मग आतुर ह्वै अजू जाहु लीजिये ॥ गये जब द्वार उठि नाहरी सुफारिबेको फारे नहिं बानो जानि आय अति खीझिये ॥ आपनो विचारो हियों भोग भावनाको मानि साँच भये शिष्य प्रभु मति धीजिये ॥३०३॥ गूजरीको धन दियो पायो दही संतनिने ब्राह्मणको भक्त कियो देबी दीन कारिके॥ तेलीको जिवायो भैंस चोरनपै फेरी लायो गाड़ी भरि आयो तन पाँच और जारिके ॥ कागद ले कोरचो करो बनियाको सोग हरचो भरचो घर त्यागि डारी हत्याहू उतारिकै ॥ राजाको औसेर भई संतको जु विभो दई लई चीठी मानि गये श्रीरंग उदारिके ॥ ३०४ ॥ श्रीरंगके चित्त धरचो तिये हिये भाव हऱ्यो ब्राह्मणको शोक हऱ्यो राजापै पुजायकै ॥ चंदवा बुझाय लियो तेलीको ले बैल दियो दियो पुनि घरमांझ भयो सुख आयकै ॥ बड़ोई अकाल पऱ्यो जीव दुख दूरि करचो हऱ्यो भूमि गर्भ धन पायो दे लुटायकै ॥ अतिबिसतार लिये किये हैं विचार यह सुने एक बार फेर भूले नाहिं गायकै ॥ ३०५ ॥

छप्पय—घर आये हरिदास तिनहिं गोधूम खवाये ॥ तात मात डर थोथ खेत लांगूल बुवाये ॥ आसपास कृषिकार खेतकी करत बड़ाई ॥ भक्त भजे कीरती प्रगट परतीत ज्ञु पाई ॥ अचरज मानत जगतमें, कहो

निपज्यो कहुँ बेबयो ॥ धन्य धनाके भजनको बिनहि बीज अंकुर भयो ॥ ६२ ॥

अथ धनाभक्तजूका वर्णन ।

टी०क०—खेतकी तो बात कही प्रगट कबित्तमांझ सुनो एक और भई प्रथम जुरीति है ॥ आयो साधु विप्रधाम सेवा अभिराम करै ढरचो ढिग आय कही मोहूँ दीजे प्रीति है ॥ पाथर ले दियो अति सावधान कियो यह छाती लाय जियो सेवे जैसी नेह नीति है ॥ रोटी धरी आगे आखि मूंदि लियो परदाके छुयो नहिं टूक देखि भई बड़ी भीति है ॥ ३०६ ॥ बार बार पाँव परे और भूँख प्यास तजि धरे हिये साँचो भाव पाई प्रभु प्यारिये ॥ छाक नित आवे नीके भोगको लगावे जोई छोड़े सोई पावे प्रीति रीति कछु न्यारिये ॥ जाको कोउ खाय ताकी टहल बनाय करे ल्यावत चराय गाय हरि उर धारिये ॥ आयो फिरि विप्र नेह खोजेहू न पायो कहूँ सरसायो बाते ले दिखायो श्याम जारिये ॥ ३०७ ॥ द्विज लगि गायनिमें चायनि समात नाहिं भायनिकी चोट दृग लागी नीर झरी है ॥ जायके भवन सीतारवन प्रसन्न करे बड़े भाग मानि प्रीति देखि जैसी करी है ॥ धनाको दयालु व्हैके आज्ञा प्रभु दई ढरो करो गुरु रामानंद भक्ति मति हरी है ॥ भए शिष्य जाय आय छातीसों लगाय लिये किये गृहकाम सबै सुनि जैसी धरी है ३०८

छप्पय—प्रभुहिं दासके काज रूप नापितको कीनो॥ क्षिप्र छुरहड़ी गही पाणि दर्पण तहँ लीनो ॥ तादृश व्है तिहिंकाल भूपके तेल लगायो ॥ उलटि राव भयो शिष्य प्रगट परचो जब पायो॥श्याम रहत सन्मुख सदा, ज्यों बच्छाहित धेनके॥विदित बात जन जानिये,हरि भए सहायक सेनके ॥ ६३ ॥

अथ सेनाभक्तजूका वर्णन ।

टी०क०—बांधोगढ़वास हरि साधु सेवा आस लगी पगी मति अति प्रभु परचो दिखायो है ॥ करि नित नेम चल्यो भूपके लगाऊं तेल भयो मग मेल संत फिरि घर आयो है ॥ टहल बनाय करी नृपकी न शंक धरी धरी उर श्याम जाइ भूपति रिझायो है ॥ पाछे सेन गयो पंथ पूँछे हिये रंग छयो भयो अचरज राजा बचन सुनायो है ॥३०९॥ फेरि कैसे आय सुनि अतिही लजाय कही सदन पधारे संत भई यों अबार है ॥ आवन न पायो वाहि सेवा उरझायो राजा दौरि शिर नायो देखि महिमा अपार है ॥ भीजि गयो हियो दासभाव दृढ़ लियो पियो भक्तिरस शिष्य व्हैके जान्यो जोई सार है ॥ अबलोंहू प्रीति सुत नाति उहि रीति चलें होइ जो प्रतीति प्रभु पावे निरधार है ॥ ३१० ॥

छप्पय—सुखसागरकी छाप राग गौरी रुचि न्यारी॥ पदरचना गुरुमंत्र मनो आगमअनुहारी ॥ निशिदिन प्रेमप्रवाह द्रवत भूधरज्यों निर्झर॥हरिगुणकथा अगाध भालराजत लीलाभर ॥ संतकंजपोषण विमल,अतिपियूष सरसीसरस ॥ भक्तिदान भैहरन भुज, सुखानंद पारस परस ॥ ६४ ॥ एकसमै अध्वा चलत बरावा कच्छल पाए॥ देखा देखी शिष्य तिनहुं पीछेते खाए॥ तिनपर स्वामी खिझे बचन करि बिन विश्वासी ॥तिन तैसे परतक्ष भूमिपर कीनी रासी ॥ सुरसरी सुवर पुनि उदक ले,पुष्परेणु तुलसी हरी॥महिमा महाप्रसादकी, सुरसुरानंद साँची करी॥६५॥अतिउदार दंपत्ति त्यागि गृह बनको गवने ॥अचरज भयो तहँ एक संत सुनि

जिनि हो विमने ॥ बैठे हुते एकांत आय असुरनि दुख दीयो ॥सुमिरे शारंगपाणिरूप नरहरिको कीयो॥सुर-सुरानंदकी घरनिको,सुत राख्यो नरसिंह ज्यों॥महा-सती शत ऊपमा, त्यों सत सुरसरिको रह्यो॥६६॥झर घर लकरी नांहि शक्तिको सदन बिदारै॥शक्तिभक्तसों बोलि दिनहि प्रति बरही डारै ॥ लगी परोसिन होस भवानी भैंसो मारै ॥ बदलेकी बेगार मूंडवाके शिर डारै ॥ भरतप्रसंग ज्यों कालिका, लई देखि तनमें तई॥निपट नरहरियानंदके, कर दाता दुर्गा भई॥६७॥ नाम महानिधि मंत्र नामही सेवा पूजा ॥ जप तप तीरथ नाम नाम विन और न दूजा ॥ नाम प्रीति नाम बैर नाम कहि नामी बोले ॥ नाम अजामिल साखि नाम बंधनते खोले ॥ नाम अधिक रघुनाथते, रामनिकट हनुमत कह्यो ॥ कबीरकृपाते परमतत्त्व, पद्मनाभ परचो लह्यो ॥ ६८ ॥

अथ पद्मनाभजूका वर्णन ।

टी०क०–काशीवासी साह भयो कोढ़ी सो निबाह कैसे परि गए कृमि चल्यो बूड़िबेको भीर है ॥ निकसे पदम आय पूँछी ढिग जाय कही गही देह खोलो गुण न्हाय गंगानीर है ॥ रामनाम कहे बेर तीनमें नवीन होत भयोई नवीन कियो भक्ति मति धीर है ॥ गये गुरुपास तुम महिमा न जानी अहो नामाभास काम करै कही यों कबीर है ॥ ३११ ॥

छप्पय–भक्तिसुधाजलसमुद्र भयो बेलावलि गाढ़ी॥ पूरबजा ज्यों रीति प्रीति उत्तरोत्तर बाढ़ी॥ रघुकुल-

सदृश स्वभाव सृष्टि गुण सदा धर्मरत ॥ शूर धीर उदार दयापर दक्ष अनन्यव्रत ॥ पद्मखंड पद्मापद्धति, प्रफुलित कर सविता उदित ॥ तत्वा जीवा दक्षिणदेश, वंशीधर राजत बिदित ॥ ६९ ॥

अथ तत्त्वाजीवाजूका वर्णन।

टी०क०—तत्त्वा जीवा भाई उभै विप्र साधु सेवा पन मन धरी बात ताते शिष्य नहीं भये हैं ॥ गाड़्यो एक ठूँठ द्वार होइ अहो हरी डार संतचरणामृतको लेके डारि नये हैं ॥ जबहिं हरित देखें ताको गुरु करि लेखें गये श्रीकबीर पूजी आस पांव लये हैं ॥ नीठि नीठि नाम दियो दियो परचाय धाम काम कोउ होय जोपै आवो कहि गये हैं ॥ ३१२ ॥ काना कानी भई द्विज जानी जाति गई पाँति न्यारी करि दई कोऊ बेटी नहीं लेत है ॥ चल्यो एक काशी जहां बसत कबीर धीर जाय कहो पीर जब पूँछ्यो कौन हेत है ॥ दोऊ तुम भाई करो आपमें सगाई होइ भक्ति सरसाई न घटाई चित चेत है ॥ आय वहै करी परी ज्ञाति खरबरी कहैं कहा उर धरी कछु मतिहू अचेत है ॥ ३१३ ॥ करैं यही बात हमै और न सुहात आये सबै हाहा खात यह छांड़ि हठ दीजिये ॥ पूँछिबेको फेरि गये करो व्याह जोपै नये दंड करि नाना भांति भक्ति दृढ कीजिये ॥ तब दई सुता लई पातिन प्रसन्न व्हैके प्रीति हरिभक्तनसों सदा रस पीजिये ॥ विमुखसमूह देखि समुख बड़ाई करै धरै हियेमांझ कहे पनपर रीझिये ॥ ३१४ ॥

छप्पय—पहिले वेद विभाग कथित पुराण अष्टादश ॥ भारतादि भागवत मथित उद्धाऱ्यो हरियश ॥ अव सोधे सब ग्रंथ अर्थभाषा विस्ताऱ्यो ॥ लीला जयजय

जयति गाय भवपार उतार्‍यो ॥ जगन्नाथ इष्ट वैराग्य-शीव, करुणारस भीज्यो हियो ॥ विनय व्यास मनो प्रगट व्है जगको हित माधब कियो ॥ ७० ॥

अथ माधवदासजूका वर्णन ।

टी०क०-माधोदास द्विज निजतिय तिन त्याग कियो लियो इन जानि जग ऐसोई ब्योहार है ॥ सुतकी बड़न योग लियो नित चाहत हों भई यह और ले दिखाई करतार है ॥ ताते तजि दियो गृह वेई सब पालें देह करे अभिमान सोई जानिये गँवार है ॥ आये नीलगिरिधाम रहे गिरि सिंधुतीर अति मतिधीर भूंख प्यास न बिचार है ॥ ३१५ ॥ भये दिन तीन वे तो भूँखके अधीन नाहिं रहे हरिलीन प्रभु शोचपर्‍यो भारिये ॥ दियो सैन भोग आप लक्ष्मीजू ले पधारी हाटककी थारी झनझन पाँव धारिये ॥ बैठे हैं कुटीमें पीठि दिये हिये रूप रँगे बिजुरीसी कौंधि गई नीके न निहारिये ॥ देखि सो प्रसाद बड़ो मन अहलाद भयो लयो भाग मानि पात्र धर्‍योई विचारिये ॥ ३१६ ॥ खोले जो किंवार थार देखिये न शोच पर्‍यो कर्‍यो ले यतन ढूंढि वाही ठौर पायो है ॥ ल्याये बांधि मारी बेतधारी जगन्नाथ देव भेव जब जान्यो पीठि चिन्ह दरसायो है ॥ कही पुनि आपमेंही दियो जब लियो यानें मानि अपराध पाँव गहिकै क्षमायो है ॥ भई यों प्रसिद्ध बात कीरति न मात कहूं सुनिकै लजात साधुशील यहै गायो है ॥ ३१७ ॥ देखत स्वरूप सुधि तनकी निसरि जात रहिजात मंदिरमें जाने नहीं कोई है ॥ लग्यो शीत गात सुनो बात प्रभु कांपि उठे दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है ॥ लागे जब बेग बेगि जाय परे सिंधुतीर चाहें जब नीर लियो ठाढे देह धोई है ॥ करिकै विचार ओ निहारि कही जाने मैं तो देत हो अपार दुःख ईशता ले खोई है ॥ ३१८ ॥ कहा करों अहो मोपैं रह्यो नहीं जात नेकु मेटो बिथा गात

मोको बिथा बहु भारी है ॥ रहै भोग शेष और तनमें प्रवेश करै ताते नहीं दूरि करो ईशता ले टारी है ॥ वहू बात साँच याकी गास एक और सुनो साधुको न हँसै कोउ यह मैं विचारी है ॥ देखतहि देखतमें पीड़ा सो विलाय गई नई नई कथा कहि भक्ति बिसतारी है ॥३१९॥ कीरति अभंग देखि भिक्षाको आरंभ कियो दियो काहू बाई पोता खीझत चलायकै ॥ देवो गुण लियो नीके जलसों प्रछालि करी करी दिव्य बाती दई दियेमे बरायकै ॥ मंदिर उजारो भयो हियको अँधारो गयो गयो फेरि देखिबेको परी पाँय आयकै ॥ ऐसे हैं दयालु दुःख देतमें निहाल करैं करि ले जो सेवा ताको सकै कौन गायकै ॥ ३२० ॥ पंडित प्रबल दिगविजै करि आयो आप वचन सुनायो जु विचारि मोसो कीजिये ॥ दई लिखि हारि काशी जायकै निहारि पत्र भयो अति ख्वार लिखि जीति वाकी खीझिये ॥ फेरि मिलि माधोजूसों वैसेही हरायो एक खरको मँगायो कही चढ़ो जब धीजिये ॥ बोल्यो जूनि बांधो कान गयो सुनि न्हान आन जगन्नाथजीते लै चढायो वाको रीझिये ॥ ३२१ ॥ व्रजहीकी लीला सब गावें नीलाचलमांझ मन भई चाह जाइ नैननि निहारिये ॥ चले वृंदावन मग लगै एक गाव जहां बाई भक्त भोजनको ल्याई चाव भारिये ॥ बैठे ए प्रसाद लेत लेत दृग भरे अहो कहो कहा बात दुख हियेको उघारिये ॥ सावरो कुँबर यह कौनको भुराय ल्याये माय कैसे जीवे सुन मति ले बिसारिये ॥ ३२२ ॥ चले और गांव जहां महाजन भक्त रहे गहे मनमांझ आगे बिनतीहू करी है गये वाके घर वह गयो काहू और घर भावभरी तिया आनि पाँय निमें परी है ॥ ऊपर महंत कही अबै एक संत आयो इहां तो समाई नांहि आई अरबरी है ॥ कीजिये रसोई जोई सिद्ध सोई ल्यावो दूध नीकेकै पिवायो नाम माधो आश भरी है ॥ ३२३ ॥ गये उठि पाछे भक्त आयो सो सुनायो नाम सुनि अभिराम दौरे संगही

महंत है ॥ लिये जाय पाँय लपटाय सुख पाय मिले झिले घरमाझ तिया धन्य तोसों कंत है ॥ संतपति बोले मै अनंत अपराध किये जिये अब कही सेवो शीत मानि जंत है ॥ आवत मिलाप होय यही राखो बात गोय आये बृंदावन जहां सदाई वसंत है॥३२४॥ देखि देखि वृंदावन मनमें मगन भये गये श्रीबिहारीजूके चना तहां पाये हैं ॥ कहि रह्यो द्वारपाल नेकु मैं प्रसाद लाल यमुना रसाल तट भोगको लगाये हैं ॥ नानाविध पाक धरे स्वामी आप ध्यान करे बोले हरि भावे नाहिं वेई ले खवाँये हैं ॥ पूँछ्यो सो जनायो ढूंढ़ि ल्यायो आगे गायो सब तुम तो उदार हास रस समझाये हैं ॥ ३२५ ॥ गये व्रज देखिबेको भाडिरमें खेल रहे निशिको दुराय पाय क्रम ले दिखाये हैं ॥ लीला सुनिबेको हरियाने गांव रहे जाय गोबरहु पाथ पुनि नीलाचल धाये हैं ॥ घरहूको आये सुत सुखी सुनि मातबानी मारगमें स्वप्न देके बणिक मिलाये हैं ॥ याही विधि नानाभांति चरित अपार जानो जिते कछु जाने तिते गयके सुनाये हैं ॥ ३२६ ॥

छप्पय–शीतकाल सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी॥ शौच गए हरिसंग कृत्य सेवककी कीनी॥ जगन्नाथपद प्रीति निरंतर करत खवासी ॥ भगवतधर्मप्रधान प्रसन्न नीलाचलवासी ॥ उत्कलदेश उड़ीसा नगर, वैनतेय सबकोउ कहै ॥ श्रीरघुनाथ गुसांई गरुड़ज्यों, सिंहपौरि ठाड़े रहै ॥ ७१ ॥

टी०क०–अतिअनुराग घर संपत्तिसों रह्यो पागि ताहू करि त्याग नीलाचल कियो वास है ॥ धनको पठावै पिता तोपै नहीं भावै कछु देखिबो सुहावै महाप्रभुजूको पास है ॥ मंदिरके द्वार रूप सुंदर निहा-

रच्यो करै लग्यो शीत गात सकलात दई दास है ॥ शौच संग जायबेकी रीतिको प्रमान वहै वैसे सब जानौ माधोदास सुखरास है ॥ ३२७ ॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी आज्ञा पाइ आए वृंदावन राधाकुंडवास कियो है ॥ रहनि कहनि रूप चहनि न कहि सके थके सुनि तन भाव रूप करि लियो है ॥ मानसीमें पायो दूध भात सरसात हिये लिये रस नारी देखि बैद कहि दियो है ॥ कहांलों प्रताप कहों आपुही समुझी लेहु देहु वही रीझि जैसो आगे पाय जियो है ॥ ३२८ ॥

छप्पय–गौड़देश पाखंड मेंटि कियो भजनपरायण॥ करुणासिंधु कृतज्ञ भये अगतिन गतिदायन ॥ दशधारस आक्रांत महतजनचरण उपासे ॥ नाम लेत निष्पाप दुरित तिहि नरके नासे ॥ अवतार विदित पूरव मही, उभै महत देही धरी ॥ श्रीनित्यानंद कृष्णचैतन्यकी, भक्ति दशोंदिशि विस्तरी ॥ ७२ ॥

अथ श्रीनित्यानंदजूका वर्णन ।

टी०क०–आप बलदेव सदा वारुणीसों मत्त रहे चहै मन मानो प्रेम मत्तताई चाखिये ॥ सोई नित्यानंद प्रभु महंतकी देह धरी भरी सब आनि तऊ पुनि अभिलाखिये ॥ भयो बोझ भारी क्यों हूं जात न संभारी जब ठौर ठौर पारषदमांझ धरी राखिये ॥ कहत कहत और सुनत सुनत जाके भये मतवारे बहु ग्रंथ ताकी साखिये ॥ ३२९ ॥

अथ श्रीकृष्णचैतन्यजूका वर्णन ।

कवित्त–गोपिनके अनुराग आगे आप हरे श्याम जान्यो यह लाल रंग कैसे आवे तनमें ॥ एतो सब गौर तन नख शिख बनी ठनी खुल्यो यो सुरंग अंग अंग रंगे बनमें ॥ श्यामताईमांझ सो ललाईहू

समाई जाहि तासे मेरो जान फिरि आई यह मनमें ॥ जसुमतिसुत सोई शचीसुत गौर भये नये नये नेह चोज नाचे निजगनमें ॥ ३३० ॥ आवे कभू प्रेम हेमपिंडवत तन होत कभू संधि संधि छूटि अंग बढ़ि जात हैं ॥ और एक न्यारी रीति अश्रु पिचकारी मानो उभै लाल प्यारी भावसागर समात है ॥ ईशता बखानि कहा करो सो प्रमान याको जगन्नाथ क्षेत्र नेत्र निरखि साक्षात है ॥ चतुर्भुज षट्भुज रूप ले दिखाय दियो दियो जो अनूपहित बात पात पात है ॥ ३३१ ॥ कृष्ण चैतन्य नाम जगत प्रगट भयो अति अभिराम ले महंत देही करो है ॥ जितो गौड़देश भक्तिलेश हू न जाने कोऊ सोऊ प्रेमसागरमें बोर्यो कहि हरी है ॥ भये शिरमोर एक एक जग तारिबेको धारिबेको कौन साखि पेथिनमें धरी है ॥ कोटि कोटि अजामील वारि डारे दुष्ट तापै ऐसेहू मगन किये भक्ति भूमि भरी है ॥ ३३२ ॥

छप्पय–उक्ति चोज अनुप्रास वरन अस्थि अति भारी ॥ बचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी ॥ प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरिलीला भासी ॥ जन्म कर्म गुण रूप सबै रसना जु प्रकासी ॥ विमल बुद्धि गुण औरकी, जो वह गुण श्रवणनि धरै ॥ सूरकवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ॥ ७३ ॥ पौगंड बाल किशोर गोपलीला सब गाई ॥ अचरज कह यह बात हुतो पहिलो जु सखाई ॥ नयननि नीरप्रवाह रहत रोमांच रैन दिन ॥ गद्गद गिरा उदार श्यामशोभा भीज्यो तन ॥ शारंग छाप ताकी भई, श्रवण सुनत आवेसदेत ॥ व्रजबधूरीति कलियुगविषे परमानंद भ-

यो प्रेम केत ॥ ७४ ॥ काशमीरकी छाप पाप तापन युग मंडन ॥ दृढ़ हरिभक्ति कुठार आन धर्म विटपविहंडन ॥ मथुरामध्य मलेच्छ वाद करि ववरबट जीते ॥ काजी अजित अनेक देखि परचौ भै भीते॥ विदित बात संसार सब, संत साखि नाहिन दुरी ॥ श्रीकेशवभट नरमुकटमणि, जिनकी प्रभुता बिस्तरी ॥ ७५ ॥

॥ अथ केशवभट्टजूका वर्णन ।

टी०क०–करी दिगविजै सब पंडित हराय दिये लिये बड़े बड़े जीति भीति उपजाई है ॥ फिरत चंडोल चढ़े गज वाजि लोल संग प्रतिमाको रंग आये नदिया प्रभाई है ॥ डरे द्विज भारी महाप्रभु जू विचारी तब लीला बिसतारी गंगातीर सुखदाई है ॥ बैठे ढिग आय बोले नम्रता जनाय रह्यो जग यश छायनेकु सुने मनभाई है ॥ ३३३ ॥ लरकानि संग पढ़ो बातें बड़ी बड़ी गढ़ो तोपै रढ़ो कहां सोई शीलतापै रीझिये ॥ गंगाको सरूप कहो चहो दृग आगे सोइ नये सो श्लोक किये सुनि मति भीजिये ॥ तामें एक कंठ करि पढ़िके सुनायो अहो कैसे तुम सीखि लयो दयो ले प्रभाव तुह्मे ताने दियो जीजिये ॥ ॥ ३३४ ॥ दूषण औ भूषणहु कीजिये बखान याके सुनि दुख मानि कही दोष कहां पाईये ॥ कबित्त प्रबंध मध्य रहे खोटी गंध अहो आज्ञा मोको देहु कह्यो कहिके सुनाइये ॥ व्याख्या करि दई नई औगुन सगुन भई आय निजधाम भोर मिले समझाइये ॥ सरस्वतीध्यान कियो आइ ततकाल बोले बालपै हरायो सब जग जितवाइये ॥ ॥ ३३५ ॥ बोली सरस्वती मेरे ईश भगवान वे तो मान मेरो कैसो सनमुख बतराइये ॥ भयो दरशन तुह्मे मन परशन होत सुनि सुख सोत

बाणि आये प्रभु पाइये ॥ बिनै बहु करी करी कृपा आप बोले अजू भक्तिफल लीजे काहूं भूलि न हराइये ॥ हिये धरि लई भीर भार छोंड़ि दई पुनि नई यहै भई सुनि दुष्ट मरवाइये ॥ ३३६ ॥ आप काश्मीर सुनि बसत विश्राम तीर तुरकसमूह द्वार यंत्र एक धारिये ॥ सहजसुभाय कोउ निकसत आय ताको पकरत जाय ताके सुनत निहारिये ॥ संग ले हजार शिष्य भरे भक्ति रंग महा अरे वाही ठौर बोले नीच पट टारिये ॥ क्रोध भरि झारे आय सूबापे पुकारे वे तो देखि सबै हारे मारे जल बोरि डारिये ॥ ३३७ ॥

छप्पय–मधुरभाव रस मिलित ललित लीला सुबलित छबि ॥ निरखत हरषत हृदय प्रेम वरषत सुकलित कबि ॥ भव निसतारन हेत देत दृढ़ भक्ति सबनि नित ॥ जासु सुयश शशि उदै हरत अति तम भ्रम श्रम चित ॥ आनंदकंद श्रीनंदसुत, श्रीवृषभानुसुता भजन ॥ श्रीभट सुभट प्रगट्यो अघट, रस रसिकनि मनमोद घन ॥ ७६ ॥ खेचरि नरकी शिष्य निपट अचरज यह आवै ॥ विदित बात संसार संत मुख कीरति गावै ॥ वैरागिनके वृंद रहत सँग श्याम सनेही ॥ ज्यों योगेश्वरमध्य मनहुँ शोभित वैदेही ॥ श्रीभटचरणरजपरसते, सकल सृष्टि जाको नई ॥ श्रीहरिव्यास तेज हरिभजनके, देवीको दीक्षा दई॥ ७७

अथ श्रीभटजूका वर्णन।

टी॰क॰–चंद्रथावल गांव बाग देखि अनुराग भयो लयो नित नेम करि चाहे पाक कीजिये ॥ देवीको अस्थान काहूं बकरा ले मार्‍यो

आनि देखत गिलानि इहां पानी नहीं पीजिये ॥ भूँखे निशि भई भक्ति तेज मिटि गई नई देह धरि लई आई लखि मति भीजिये ॥ करो जू रसोई कौन करे कछु और भोई सोई मोको दीजे दान शिष्य करि लीजिये ॥ ३३८ ॥ करि देवी शिष्य सुनि नगरको सट कियो पटकी ले खाट जाकी बड़ो सरदार है ॥ चढि मुख बोले हौं तो भई हरिव्यासदासी जो न दास होइ तो पै अभी डारो मार है ॥ आये सब भृत्य भये मानो नये तन लये गये दुःख पाप ताप किये भवपार है। कोऊ दिन रहे नाना भोग सुख लहे एक श्रद्धा कै श्वपच आयो पायो भक्तिसार है ॥ ३३९ ॥

छप्पय–उपदेशे नृप सिंह रहत नित आज्ञाकारी ॥ पक्क वृक्ष ज्यों नाय संतपोषक उपकारी॥बानी भोला-राम सुहृद सबहिनिपर छाया ॥ भक्तचरणरज जाँचि विशद राघवगुण गाया ॥ करमचंद कश्यपसदन,ब-हुरि आय मनो वपु धऱ्यो ॥ अज्ञानध्वांत अंतह-करन, द्वितीय दिवाकर अवतऱ्यो ॥ ७८॥ राग भोग नित विविध रहत परिचर्यातत्पर ॥ शय्या भूषण व-सन रचित रचना अपनेकर ॥ वह गोकुल वह नंदस-दन दीखितको जो है॥ प्रगट विभो जहँ घोषद देखि सुरपति मनमोहै ॥ वल्लभसुत बल भजनके, कलियु-गमें द्वापर कियो॥ श्रीविठ्ठलनाथ व्रजराज ज्यों लाड़ लड़ायकै सुख लियो ॥ ७९ ॥

टी०क०–कायथ तिपुरदास भक्तिसुखराशि भऱ्यो कऱ्यो ऐसो पन सीत दगला पठाइये ॥ निपट अमोल पट हिये हित जटि आवे ताते अति भाव नाथअंग पहिराइये ॥ आयो कोऊ काल नरपतिने

विहाल कियो भयो ईशख्याल नेकु घरमें न पाइये ॥ वही ऋतु आई सुधि आई आंखि पानी भरि आई एक खाति दीठि यही वेंचि ल्याइये ॥ ३४० ॥ वेंचिकै बजार यों रुपैया एक पायो ताको ल्यायो मोटो थान मात्र रंगलाल गाइये ॥ भीज्यो आनुरा पुनि नैन जलधार भीज्यो भीज्यो दीनताई धरि राख्यो और आइये ॥ कोऊ प्रभुजन आये सहज दिखाइ दई भई मन दियो ले भंडारी एकराइये ॥ काहू दास दासीके न काम कापै जाऊँ लेके बिनती हमारी जू गुसांई ना सुनाइये ॥ ३४१ ॥ दियो ले भंडारी कर राखे धरि पटवापै निपट सनेही नाथ बोले अकुलायकै॥भये हैं जड़ाय कोऊ वेगिहिं उपाय करो बिविध उड़ाय अंग वसन सुहायकै ॥ आज्ञा पुनि दई यों अँगीठी वारि दई फेरि वही भई सुनि रहे अतिहि लजायकै ॥ सेवक बुलाय कही कौनकी कवाय आई सबै सो सुनाई एक वहली बाचायकै ॥ ३४२ ॥ सुनी न तिपुरदास बोल्यो धननाश भयो मोटो एक थान आयो राख्यो हैं छिपायकै ॥ ल्यावो वेगि याहीछिन मनकी प्रवीन जानि ल्यावो दुख मानि ब्योंति लई सो सिवायकै॥ अंग पहिराई सुखदाई कापै जाति गाई कही तब बात जाड़ो गयो भरमायकै ॥ नेह सरसाई ले दिखाई उर आई सबै ऐसी रसिकाई हृदै राखी है वसायकै ॥ ३४३ ॥

छप्पय–श्रीगिरधर जू सरस शील गोविंद जू साथहिं॥ बालकृष्ण जस वीर धीर श्रीगोकुलनाथहिं।श्रीरघुनाथजू महाराज श्रीयदुनाथहिं भजि ॥ श्रीघनश्यामजू पगे प्रभु अनुरागी सुधि साधि साजि॥ए सात प्रगट विभु भजन जग,तारन तस जस गाइये ॥ श्रीविठ्ठलेशसुत सुहृद,श्रीगोवरधनधर ध्याइये ॥ ८० ॥ श्रीवल्लभ गुरु दत्त भजनसागर गुनआगर ॥ कबित नोख निर्दोष

नथसेवामें नागर ॥ बाणी विदित विदुःख सुयश गोपाल अलंकृत ॥ व्रजरज अतिआराध्य वहै धारी ॥ सर्वसु चित ॥सानिध्य सदा हरिदासवर्य्य,गौर श्याम दृढ़ व्रज लियो ॥ गिरिधरने रीझि कृष्णदासको. नाम मांझ साझो दियो ॥ ८१ ॥

अथ श्रीविठ्ठलजूका वर्णन ।

टी०क०—प्रेमरसराशि कृष्णदासजू प्रकाश कियो लियो नाथ मानि सो प्रमाण जग गाइये ॥ दिल्लीके बजारमें जलेबी सो निहारि नैन भोग ले लगाई लागी विद्यमान पाइये ॥ राग सुनि भक्तनको भयो अनुरागवश शशिमुख लालजूको जाइके सुनाइये ॥ देख रिझवार रीझि निकट बुलाय लई लई संग चले जग लाजको बहाइये ॥ ॥ ३४४ ॥ नीके अन्हवाय पट अभरन पहिराय सोंधौहूं लगाय हरिमंदिरमें ल्याये हैं ॥ देखिभई मतवारी कीनी ले अलापचारी कह्यो लाल देखे बोलि देखे मैंहीं भाये हैं ॥ नृत्य गान तान भावभरी मुसकान दृग रूपलपटान नाथ निपट रिझाये हैं ॥ व्हैके तदाकार तन छुट्यो अंगीकार करी धरी उर प्रीति मन सबके भिजाये हैं ॥ ३४५ ॥ आये सूरसागर सो कही बड़े नागर हो कोऊ पद गावो मेरी छाया न मिलाइये ॥ गाये पांच सात सुनि जान मुसकात कही भलेजू प्रभाती आनि करिकै सुनाइये ॥ पऱ्यो शोच भारी गिरिधारी उर धारी बात सुंदर बनाय सेज धऱ्यो यों लखाइये ॥ आयकै सुनायो सुख पायो पछपात ले बतायोहु मनायो रंग छायो अभू गाइये ॥ ३४६ ॥ कुवाँमें खिसली देह छूटि गई नई भई यों अशंका कछु और उर उर आई है ॥ रसिकन मन दुख जानि सो सुजान नाथ दियो दरसाय तन ग्वाल सुखदाई है ॥ गोवर्धन तीर कहि आगे बलबीर गये श्रीगुसाई धीर सों प्रणाम

यों जनाई है॥ धनहु बतायो खोवि पायो विसवास आयो हिये सुख छायो शंक पंक ले बहाई है॥ ३४७॥

छप्पय—श्रीभागवत बखानि अमृतमय नदी बहाई॥ अमल करी सब अवनि तापहारक सुखदाई॥ भक्तनसों अनुराग दीनसों परमदयाकर॥ भजय यशोदानंद संत संघटको आगर॥भीषम भट अंगज उदार,कलियुग दाता सुगतिके॥ वर्धमान मंगल गँभीर,उभै थंभ हरि भक्तिके॥ ८२॥ रघुनंदनको दास प्रगट भूमंडल जानै॥सर्वसु सीताराम और कछु उर नहिं आनै॥धनुषगुणसों प्रीति स्वामिके आयुध प्यारे॥ निकट निरंतर रहत होत कबहूं नहिं न्यारे॥ सूर धीर हनुमतसदृश, परमउपासक प्रेमभर॥रामरामपरतापते, खेमगुसांई खेमकर॥८३॥ तिलक दामसों प्रीति गुनहिं गुन अंतर धार्‍यो॥ भक्तनको उत्कर्ष जन्मभरि रसन उचार्‍यो॥सरल हृदय संतोष जहां तहँ परउपकारी॥ उत्सवमें कत दान कियो कर्म दुष्कृत भारी॥ हरिगोविंद जयजय गोविंद, गिरा सदा आनंदकृत॥ विठ्ठलदास माथुरमुकुट, भये अमानिन मानदत॥८४॥

टी०—क०—भाई उभै माथुर सुगनाके पुरोहित हैं लरिमरे आपसमें जियो एक जाम है॥ ताको सुत विठ्ठल सुदास सुखराशि हिये लिये बैस धोरी भयो बड़ो सेवै श्याम है॥ बोल्यो नृपसभामध्य आवत न विप्रसुत क्षिप्र लेके आवो कही कह्यो पूजि काम है॥ फेरिकै बुलायो करो जागरण याही ठौर काहू समझायो गावे नाचे प्रेमधाम है॥३४८॥

गये संग साधु मिले बिनै रंगरँगे सब राना उठि आदरदे नीके पधराये हैं ॥ किये जा बिछौना तीन छातनके ऊपर ले नाच गाय आई प्रेम गिरे नीचे आये हैं ॥ राजामुख भयो श्वेत दुष्टनको गारी देत संत भरि अंक लेत घरमध्य ल्याये हैं ॥ भूप बहु भेंटकरी देह वाही भांति परी पाछे सुधि भई दिना तीसरे जगाये हैं ॥ ३४९ ॥ उठे जब मातने जनाय सब बात कही सही नहीं जात निशि निकसे बिचारिकै ॥ आये यों छठी करामें गरुड गोविंदसेवा करत मगन हिये रहत निहारिकै ॥ राजाके जे लोग सुतो ढूंढिकरि रहे बैठि तियामाता आइ करै रुदन पुकारिकै ॥ किये ले उपाय रही कितौ हाहा खाइ ये तौ रहे मंडराय तब बसी मनहारिकै ॥ ३५० ॥ देख्यो जब कष्ट तन प्रभुजू सुपन दियो जावो मधुपुरी ऐसे तीनबार भाखिये ॥ आये जहां जातिपांति छाये कछु और रंग देख्यो एक खाती साधु संग अभिलाखिये ॥ तिया रहे गर्भवती सती मति सोचरती खोदित भू पाई प्रतिमाको धन राखिये ॥ खातीको बुलाय कही लही यहु लेहु तुम उनपाँय परि कह्यो रूप सुख चाखिये ॥ ३५१ ॥ करे सेवा पूजा और काम नहीं दूजा जब फैलि गई भक्ति भये शिष्य बहु भायकै ॥ बडोई समाज होत मानो सिंधुसोत आये विविध बधाये गुणि जन उठे गायकै ॥ आई एक नटी गुण रूप धनजटी अहे गावे तान कटी चटपटीसी लगायकै ॥ दिये पट भूषण ले भूषण मिटत कहूं चहूं दिशि हेरि पुत्र दियो अकुलायकै ॥ ३५२ ॥ रँगी राय नाम ताको शिष्य एक राना सुता भयो दुख भारी नेकु जलहू न पीजिये ॥ कहिकै पठाई वासों चाहो सोई धन लीज मेरो प्रभुरूप मेरे नैननको दीजिये ॥ द्रव्य तो न चाहों रीझि चाहो तनमन दियो फेरिकै समाज कियो बिनतीको कीजिये ॥ जिते गुनी जन तिन्हें दिये अनगन दाम पाछे नृत्य करो आप देत सो न लीजिये ॥ ३५३ ॥ ल्याई एक डोलामें बैठाइ रंगी

रायजूको सुंदर सिंगार कही बार तेरी आइये ॥ कियो नृत्य भारी जो विभूति सो तो वारि लियो भरि अंकवारि भेट कियो द्वार गाइये ॥ मोहन न्योछावरमें भयो मोहिं लेहु मति लियो उठि शिष्य तन तज्यो कहा पाइये ॥ कह्यो जू चरित्र बड़े रसिक विचित्रनको जोपै लाल मित्र कियो चाहो हियो ल्याइये ॥ ३५४ ॥

छप्पय—उग्रतेज सुउदार सुधर सुथराई सींवा ॥ प्रेमपुंज रसराशि महागद्गद स्वर ग्रीवा ॥ भक्तनको अपराध करे ताको फल गायो ॥ हिरण्यकश्यप प्रल्हाद परम दृष्टांत दिखायो ॥ स्फुट वक्ता जगतमें, राजसभा निधरक हियो ॥ हरिरामहठीले भजनबल, रानाको उत्तर दियो ॥ ८५ ॥

टी०क०—रानासों सनेह सदा चौपरको खेल्यो करे ऐसो सो संन्यासी भूमि संतकी छिनाई है ॥ जायके पुकाऱ्यो साधु झिरकी बिढाऱ्यो पऱ्यो विमुखके बैश बात सांच ले झुंठाई है ॥ आये हरिरामजूपै सबही जनाई रीति प्रीति करि बोले चलो आगे आवो भाई हैं ॥ गये बैठे आयो जनमनमैं न ल्यायो नृप तव समुझायो झाऱ्यो फेरि भू दिवाई है ॥ ३५५ ॥

छप्पय—पंडितकलाप्रवीण अधिक आदर तेहि आरज ॥ संप्रदायशिर क्षेत्र द्वितीय मनो मध्वाचारज ॥ जेतिक हरिअवतार सबै पूरत करि जाने ॥ परिपाटी ध्वज विजैसदृश भागवत बखाने ॥ श्रुतिस्मृतिसंमत पुराण, तप्तमुद्रा धारी भुजा ॥ कमलाकरभट्ट जगतमैं, तत्ववाद रोपी ध्वजा ॥ ८६ ॥ गोप्यस्थल मथुरामंडल जिते बाराह बखाने ॥ कियो नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वीमें

जाने ॥ भक्तिसुधाको सिंधु सदा सत्संग समाजन ॥ परमरसज्ञ अनन्य कृष्णलीलाको भाजन॥ज्ञान स्मा-रत पक्षको,नाहिन कोउ खंडन बियो॥ब्रजभूमिउपा-सक भट्ट सो, रचि पचि हरि एकै कियो ॥ ८७ ॥

टी० क०—भट्ट श्रीनारायणजू भये ब्रजपारायण जायँ जाही ग्राम तहां व्रत करि ध्याये हैं ॥ बोलिकै सुनावैं इहां अमुको स्वरूप है जू लीलकुंडधाम श्याम प्रगट दिखाये हैं ॥ ठौर ठौर रासके विलास लै प्रगट किये यों रसिक जन कोटि सुख पाये हैं ॥मथुराते कहो चलो बेनी पूंछे बेनी कहां ऊंचे गाव आये खोदि सोतको लखाये हैं॥३५६॥

छप्पय—नृत्यगानगुणनिपुण रासमैं रस बरषावत ॥ अब लीला ललितादि वलित दंपतिहिं रिझावत॥अति उदार निस्तार सुयश ब्रजमंडल राजत॥महामहोत्सव करत बहुत सबही सुख साजत ॥श्रीनारायणभट्ट प्रभु, परम प्रीति रसवश किये॥ श्रीब्रजवल्लभ वल्लभ,दुर्लभ सुख नयन न दिये ॥८८ ॥ गौड़देश बंगाल हुते सबही अधिकारी ॥ हय गज भवन भंडार विभव भूभुज अनु-हारी ॥ यह सुख अनित विचार वास वृंदावन कीनों ॥ यथालाभ संतोष कुंजकर वामन दीनो ॥ ब्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण, भक्ति तोष उद्धार कियो ॥ संसार-स्वाद सुख वांतज्यों,दुहुं रूप सनातनत्यागि दियो८९

टी०क०—कहत बैराग गए पागि नाभास्वामी जू वे गई यों निबरि तुक पांच लगी आंच है ॥ रही एकमाझ धन्यो कोटिक कबित्त अर्थ याही ठौर ले दिखायो कबिताको सांच है ॥ राधाकृष्ण रसकी आचर-जता कही यामें सोई जीवनाथभट्ट छप्पै बानी नाच है ॥बड़े अनु-

रागी ये तो कहिये बड़ाई कहा अहो जिन कृपादृष्टि प्रेमपोथी बाच है ॥ ३५७ ॥ वृंदावन ब्रजभूमि जानत न कोऊ प्राय दई दरसाय जैसी शुकमुख गाई है ॥ रीतिहू उपासनाकी भाग यह अनुसार लियो रस-सार सो रसिकसुखदाई है ॥ आज्ञा प्रभु पाय पुनि गोपीश्वर लगे आय किये ग्रंथ भाव भक्ति भांति सब पाई है ॥ एक एक बातमें स-मात मन बुद्धि जब पुलकित गात दृग झरीसी लगाई है ॥३५८॥ रहे नंदगाव रूप आये श्रीसनातनजू महासुखरूप भोग खीरको लगाइये ॥ नेकु मन आई सुखदाई प्रिया लाड़लीजू मानो कोऊ बालकी सुसौंज सब ल्याइये ॥ करिकै रसोई सोई ले प्रसाद पायो भायो अमलसो आयो चढ़ि पूँछी सो जनाइये ॥ फेरि जिनि ऐसी करो यही दृढ़ हिये धरो ढरो निजचाल कहि आखें भरि आइये ॥ ३५९ ॥ रूपगुणवान होत कान सुनि सभा सब अति अकुलात प्राण मूरछासी आई है ॥ बड़े आप धीर रहे ठाढ़े न शरीरसुधि बुद्धिमें न आवे ऐसी बात ले दिखाई है ॥ श्रीगुसांई कर्णपूरि पाछे आये देखे आछे नेकु ढिग भये श्वास लाग्यो तब पाई है ॥ मानों आगि आंच लागी ऐसो तन चिन्ह भयो नयो यह प्रेमरीति कापै जात गाई है ॥ ३६० ॥ श्रीगोविंदचंद आय निशिको स्वपन दियो दियो कहि भेद सब जासों पहिंचानिये ॥ रहों मैं खरिकमांझ पोखे निशि भोरसांझ सींचे दूध धार गाय जाय देखि जानिये ॥ प्रगट ले कियो रूप अतिही अनूप छबि कबि कैसे कहे थकि रहे लखि मानिये ॥ कहालों बखानों भरे सागर न गागरमें नागर रसिक हिये निशिदिन आनिये ॥ ३६१ ॥ रहे श्रीसनातनजू नंदगांव पावनपै आवन दिवस तीनि दूध लेके प्यारिये ॥ साँवरो किशोर आप पूँछे किहि ओर रहो कहे चोरी भाई पिता राति हू उचारिये ॥ गये ग्राम बूझि घर हेरिये न पाये कहूं चहूं दिशि हेरि हेरि नैन भरि डारिये ॥ अबके जो आवे फेरि जान नहिं पावे सीस लाल पाग भावे निशिदिन उर धारिये ॥ ३६२ ॥

कही ब्याली रूप बेनी निरखि स्वरूप नैन जानो श्रीसनातनजू काव्य अनुसारिये ॥ राधासरतीर द्रुम डार गहि झूले फूले देखत लफ लफान गति मति वारिये ॥ आये यों अनुजपास फिरि आस पास देखि भयो अति त्रास गहे पाँव उर धारिये ॥ चरित अपार उभै भाई हित सार पगे जगे जगमाहिं मति मनमें उचारिये ॥ ३६३ ॥

छप्पय–श्रीराधाचरण प्रधान हृदय अति सुदृढ़ उपासी ॥ कुंजकेलि दंपती तहांकी करत खवासी ॥ सर्वसु महाप्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी॥विधिनिषेध नहिं दास अनन्य उत्कट व्रतधारी ॥ व्याससुवन पथ अनुसरे, सोइ भले पहिंचानि है ॥ श्रीहरिवंश गुसाईं भजनकी, रीति सुकृत कोउ जानि है ॥९०॥

टी०क०–हितकी जू रीति कोऊ लाखनिमें एक जाने राधाई प्रधान मानें पाछे कृष्ण ध्याइये ॥ निपट विकट भाव होत न सुभाव ऐसो उनहीकी कृपादृष्टि नेकु क्योंहू पाइये ॥ विधि औ निषेध छेद डारे प्राणप्यारे हिये जिये निजदास निशिदिन वहै गाइये ॥ सुखद चरित्र सब रसिक विचित्र नीके जानत प्रसिद्ध कहा कहिकै सुनाइये ॥ ३६४ ॥ आए गृह त्याग राग बढ़्यो प्रिया प्रीतमसों विप्र बड़भाग हरिआज्ञा दई जानिये ॥ तेरी उभै सुता ब्याहि देवो लेवो नाम मेरो इनको जो वंश सो प्रशंस जग मानिये ॥ ताही द्वार सेवा बिसतार निजभक्तनकी अगतिन गति सो प्रसिद्धि पहिंचानिये ॥ मानि प्रिय बात गृह कह्यो सुख लह्यो सब कह्यो कैसे जात यह मनमें न आनिये ॥ ३६५ ॥ राधिकावल्लभ लाल आज्ञा सो रसाल दई सेवामो प्रकाश औ बिलास कुंजधामको ॥ सोई विसतार सुखसार दृगरूप पियो दियो रसिकनि जन लियो पक्ष वामको ॥ निशिदिन गान रसमाधुरीको पान उरअंतर

सिंहात एक काम श्यामा श्यामको ॥ गुणसों अनूप कहि कैसेकै स्वरूप कहैं लहै मन मोद जैसे और नहीं नामको ॥ ३६६ ॥

छप्पय–युगल नामसों नेम जपत नित कुंजबिहारी॥ अवलोकत रहे केलि सखी सुखको अधिकारी ॥गान-कला गंधर्व श्याम श्यामाको तोषै॥उत्तम भोग लगाय मोर मर्कट नित पोषै ॥नृपतिद्वार ठाढ़े रहे, दर्शन-आशा जासकी॥ आस धीर उद्योत कर, रसिकछाप हरिदासकी ॥ ९१ ॥

टी०क०–स्वामी हरिदास रसरास को बखान सकै रसिकता छाप जोई जाय मधि पाइये ॥ ल्यायो कोउ चोवा वाको अति मन भोवा यामें डार्‌यो ले पुनीत यह खोवा हिये आइये ॥ जानिकै सुजान कहि ले दिखावो लाल प्यारे नेसुक उघारे पट सुगंध बुड़ाइये ॥ पारस पखान करि जल डरवाइ दियो कियो जब शिष्य ऐसे नानाविधि गाइये॥३६७॥

छप्पय–काहूके आराध्य मच्छ कच्छ सूकर नरहरि॥ वामन फरसाधरन सेतुबंधन सुशैलकरि ॥एकनिके इह रीति नेम नवधासों लाये ॥ सकल समोखन सुवन अच्युतगोत्री जु लाड़ये ॥नौगुन तोरि नूपुर गुह्यो,मह तसभामधि रासके ॥ उत्कर्ष तिलक अरुदामको,भक्त इष्ट अति व्यासके ॥ ९२ ॥

टी०क०–आय गृह त्यागि वृंदावन अनुराग करि गयो हियो पागि होइ न्यारो तासों खीजिये ॥ राजा लेन आयो तौपै जायवो न भायो श्रीकिशोर उरझायो मन सेवा मति भीजिये ॥ चीरा जरकसी सीस चीकनो खिसल जाय लेहु जू बँधाय नहीं आप बांधि लीजिये ॥ गये उठि कुंज सुधि आई सुखपुंज आय देख्यो बँध्यो मंजु कही कैसे मोपै

रीझिये ॥ ३६८ ॥ संत सुखदेन बैठे संगहि प्रसाद लेन परोसति तिया सब भातिन प्रवीन हैं ॥ दूध बरताई ले मलाई छिटकाई निज खीझि उठे जानि पठि पोखति नवीन हैं ॥ सेवा सो छुटाइ दई अति अनमनी भई गई भूँख बीते दिन तोन तन छीन हैं ॥ सब समझावे तब दंडको मनावै अंग आभरण बेंचि साधु जेवें यों अधीन हैं॥ ३६९ ॥ सुताको बिवाह भयो बड़ो उत्साह कियो नाना पकवान सब नीके बनि आये हैं ॥ भक्तनकी सुधि करी खरी अरबरी मति भावना करत भोग सुखद लगाये हैं ॥ आय गये साधु सो बुलाय कही पावे जाय पोटनि बँधाय चाय कुंजनि पठाये हैं ॥ वंसी पहिराई द्विजभक्ति ले दृढ़ाई संत संपुटमें चिरिया दै हितसों बसाये हैं॥३७०॥ शरदउज्यारी रास रच्यों पिय प्यारी तामें रंग बढ़्यो भारी कैसे कहिकै सुनाइये ॥ प्रिया अति गति लई बीजुरीसी कौंधि गई भई चकचौंधि छबिमंडलमें छाइये॥ नूपुर सो टूटि छूटि पर्‍यो अरबर्‍यो मन तोरिकै जनेऊ कर्‍यो वाही भाति भाइये ॥ सकलसमाजमें यों कह्यो आज काम आयो डोयो है जनम ताकी बात जिये आइये ॥ ३७१ ॥ गायो भक्त इष्ट अति सुनिकै महंत एक लेनेको परीक्षा आयो संग संतभीर है ॥ भूँखको जनावे बानी व्यासको सुनावे सुनि कही भोग आवे इहां माने हरि धीर है ॥ तब न प्रमाण करी शंक ले धरी प्रसाद ग्रास दोय चार उठे मानो भई पीर है ॥ पातर समेटि लई शीत कर मोको दई खावो तुम और पावो लियो दृग नीर है ॥ ३७२ ॥ भये सुत तीनि बाट निपट नवीन कियो एक ओर सेवा एकओर धन धर्‍यो है ॥ तीसरी जु ठौर शयामवंदनी औ छाप धरी करी ऐसी रीति देखि बड़ो सोच पर्‍यो है ॥ एकने रुपैया लये एकने किशोरजूको श्रीकिशोरदास भाल तिलक ले कर्‍यो है ॥ छापे दिये स्वामी हरिदास निशि रास कीनों वही रास ललितादि गायो मन हर्‍यो है ॥ ३७३ ॥

छप्पय-वेला भजन सुपक्क कषायनकबहं न लागी॥ वृंदावन दृढ़ वास युगलचरणणि अनुरागी ॥ पोथी-लेखन पानि अघट अक्षर चित दीनो॥सद्ग्रंथनको सार सबै हस्तामल कीनो ॥ संदेहग्रंथछेनसमर्थ,रस-रासउपासक परमधीर ॥ श्रीरूपसनातन भक्ति जल, श्रीजीव गुसांई सर गंभीर ॥ ९३ ॥

टी०क०-किये नाना ग्रंथ हृदै ग्रंथि दृढ़ छेद डरी डारे धन यमुनामें आवें चहूं ओरतें ॥ कही दास साधुसेवा कीजे कहैं पात्र जान करो नीके करी बोल्यो कटु कोप जोरतें ॥ तब समझायो संत गौरव बढ़ायो यह सबको सिखायो बोलै मीठो निशि भोरतैं ॥ चरित अपार भाव भक्तिको न पारावार कियो हू वैराग सार कहे कौन छोरतैं ॥ ३७४ ॥

छप्पय-सर्वसु राधारमण भट्ट गोपाल उजागर ॥ हृषीकेश भगवान विपुल विठ्ठल रमसागर ॥ थानेश्वरी जगन्नाथ लोकनाथ महानि मधु श्रीरंग ॥ कृष्णदास पंडित उभै अधिकारी हरिअंग ॥ घमंडी युगलकि-शोर भृत्य भूगर्भ जीव दृढ़व्रत लियो ॥ श्रीवृंदावनकी माधुरी, इन मिलि आस्वादन कियो ॥ ९४ ॥

अथ श्रीगोपालभट्ट गुसाईजूका वर्णन ।

टी०क०-श्रीगोपालभट्टजूके हिये वे रसाल बसे लसे यों प्रगट राधारमणस्वरूप हैं ॥ नाना भोग राग करे अतिअनुरागपगे जगे जगमाहिं हित कौतुक अनूप हैं ॥ वृंदावनमाधुरी अगाधको सवाद लियो जियो जिन पायो शीत भयो रसरूप हैं ॥ गुणहीको लेत जीव अगुणको त्यागि देत करुणानिकेत धर्मसेतु भक्त भूप हैं ॥ ३७५ ॥

अथ अलिभगवानजूका वर्णन।

क०–अलिभगवान रामसेवा सावधान मन वृंदावन आये कछु और रीति भई है॥ देख रासमंडलमें विहरत रसरास बाढ़ी छबिप्यास दृग सुधि बुधि गई है॥ नाम धरि रास औ विहारी-सेवा प्यारी पगी हियेमांझ गुरु सुनि बात नई है॥ विपिन पधारे आप जाय पग धारे सीस ईश मेरे तुम सुख पायो कहि दई है॥ ३७६॥

अथ विठ्ठलविपुलजूका वर्णन।

क०–स्वामी हरिदासजूके दास नाम विठ्ठल हैं गुरुके वियोग दाह उपज्यो अपार है॥ रासके समाजमें विराज सब भक्तराज बोलिके पठाये आये आज्ञा बड़ो भार है॥ युगलस्वरूप अवलोकि नाना नृत्य भेद गान तान कान सुनि रही न सँभार है॥ मिलि गये वाही ठौर पायो भाव तन और कहे रससागर सो ताको यों विचार है॥ ३७७॥

अथ जगन्नाथथानेश्वरीजूका वर्णन।

क०–महाप्रभुपारषद थानेश्वरी जगन्नाथ नाथको प्रकाश धर दिना तीन देख्यो है॥ भये शिष्य जान आप नाम कृष्णदास धऱ्यो कृष्णजू कहत सब आदर बिशेख्यो है॥ सेवा मनमोहनजू कूपमें जताइ दई बाहर निकास करि लाउ उर लेख्यो है॥ सुत रघुनाथजूको स्वपनमें श्लोकदान वयके निदान पुत्र दियो प्रेमपोख्यो है॥ ३७८॥

अथ श्रीलोकनाथगुसांईजूका वर्णन।

कबित्त–श्रीमहाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके पारषद लोकनाथ नाम अभिराम सब रीति है॥ राधाकृष्णलीला सो नवीनमें रंगीन मन जल मीन जैसे तैसे निशि दिन प्रीति है॥ भागवतगान रसखान सो तो प्राणतुल्य अतिसुख मानि कहे गावै जोई भीति है॥ रसिकप्रवीण म-ग चलत चरण लागी कृपाके जताय दई जैसी नेहनीति है॥ ३७९॥

अथ श्रीमधुगुसांईजूका वर्णन।

टी०क०–श्रीमधुगुसांई आये वृंदाबन चाह बढ़ी देखे इन नैननसों कैसे धों स्वरूप हैं ॥ ढूंढ़त फिरत बन बन कुंज लता द्रुम मिटी भूँख प्यास नहीं जानै छांह धूप हैं ॥ यमुना चढ़त काट करत करारे जहां बंसीबटतट डीठि परे वे अनूप हैं ॥ अंक भरि लिये दोरि आजहुलों शिरमोर चाहे भाग भालसाथ गोपीनाथ रूप हैं ॥ ३८० ॥

अथ श्रीकृष्णदासब्रह्मचारीजूका वर्णन।

टी०क०–गुसाईं सनातनजू मदनमोहनरूप माथे पधराये कही सेवा नीके कीजिये ॥ जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारी भयो भट्ट श्रीनारायणजू शिष्य किये रीझिये ॥ करिके सिंगार चारु आ-पही निहारि रहें गहें नहीं चेत भाव महामति भीजिये ॥ कहांलों बखान करौं राग भोग रीति भांति अबलों विराजमान देखि देखि जी जिये ॥ ३८१ ॥

अथ श्रीकृष्णदासपंडित जूका वर्णन।

टी०क०–श्रीगोविंदचंद्र रूपराशि रसराशि दास कृष्णदास पंडित ये दूसरे यों जानि ले ॥ सेवा अनुराग अंग अंग मति पागिर-ही पाग रही मति जोपै तोपै यह मानि ले ॥ प्रीति हरिदासनसों वि-विध प्रसाद देत हिये लाय लेत देखि पद्धति प्रमानि ले ॥ सहजकी रीतिमें प्रतीतिसों विनीत करे ढरे वाही ओर मन अनुभव आनि ले ॥ ३८२ ॥

अथ भूगर्भगुसांईजूका वर्णन।

कबित्त–गुंसाईं भूगर्भ वृंदावन दृढ़वास कियो लियो सुख बैठि कुंज गोविंद अनूप हैं ॥ बड़ेई बिरक्त अनुरक्त रूपमाधुरीमें ताहीको सवाद लेत मले भक्तभूप हैं ॥ मानसी विचार हिये हारसों निहारि

रहे गहे मनवृत्ति वेई युगलस्वरूप हैं ॥ बुद्धिके प्रमान उनमानमें बखान कर्‌यो भर्‌यो बहुरंग जाहि जाने रस रूप हैं ॥ ३८३ ॥

छप्पय–तन मन धन परिवारसहित सेवत संतन कहँ ॥ दिव्य भोग आरती अधिक हरिहूते हियमहँ ॥ श्रीवृंदावनचन्द्र श्याम श्याम रँग भीने ॥ मग्न प्रेमपीयूष पयधि परचै बहुदीने॥श्रीहरिप्रिय श्यामानंदवर, भजन भूमि उद्धार किय ॥ श्रीरसिकमुरारि उदार अति, मत्तगजहिं उपदेश दिय ॥ ९५ ॥

टी०क०–रसिक मुरारि साधुसेवा विसतार कियो पावै कौन पार रीति भाँति कछु न्यारियै ॥ संतचरणामृतके माठ गृह भरे रहें ताहीको प्रणाम पूजा करि उर धारियै ॥ आवें हरिदास तिन्हें देत सुखराशि जीभ एक न प्रकाश सकै थकै सो विचारियै ॥ करें गुरुउत्सव ले दिन मान सबै कोउ द्वादश दिवस जन घटा लागी प्यारियै ॥ ३८४ ॥ संतचरणामृतको ल्यावो जाइ नीकी भांति जीकी भांति जानिबेको दास ले पठायो है ॥ आनिकै बखान कियो लियो सब सब साधुनको पान करि बोले सवाद नहीं आयो है ॥ जिते सभाजन कही चाखो देवो मन कोऊ महिमा न जाने कन जानी छोंड़ि आयो है ॥ पूँछी कह्यो कोढ़ी एक रह्यो आनो ल्यायो पियो दियो सुख पाय नैन नीर ढरकायो है ॥ ३८५ ॥ नृपतिसमाजमें विराज भक्तराज कहे गहे वे विवेक कोऊ कह न प्रभाव है ॥ तहां एकठौर साधु भोजन करत रोज देवो दूजी सोंटा संग कैसे आवे भाव है ॥ पातरि उठाय श्रीगुसांई पर डारि दई दई गारि सुनी आप बोले देख्यो दाव है ॥ सीतासों विमुख मैं तो आनि मुखमध्य दियो कियो दास दूर संतसेवामें न चाव है ॥ ३८६ ॥ बागमें समाज संत चले आप देखिबेको देखत दुरायो जन हुक्का सोच पर्‌यो है ॥

बड़ो अपराध मानि साधु सनमान चाहे भूमि तन बैठि कही देखो-कहूं धऱ्यो है ॥ जायके सुनाई दास काहूके तमाकू पास सुनिकै हुलास बढ्यो आगे आनि कऱ्यो है ॥ झूंठही उसाँसभरि साँचे प्रेम पायलिये किये मन भायो ऐसे शंका दुख हऱ्यो है ॥३८७॥ उपजत अन्न गांव आवे साधुसेवाठांव नयो नृप दुष्ट आप कांव कांव कियो है॥ ग्राम सो जबत कऱ्यो कऱ्यो ले विचार आप श्यामानंदजू मुरारि पत्र लिखि दियो है ॥ जाही भांति होहि ताही भांति उठि आवो इहां आये हाथ बांधि करि आचेहु न लियो है ॥ पाछे सु साष्टांग करि करी ले निवेदन सो भोजनमें कही चले आये भीज्यो हियो है ॥ ३८८ ॥ आज्ञा पाय अँचयो ले दे पठाये वाही ठौर दुष्टशिरमोर जहां तहां आप आये हैं ॥ मिलेही मुसद्दी शिष्य आयकै सुनाई बात जावो उठि प्रात यह नीच जैसे गाये हैं ॥ हमहीं पठावें काम करि समझावें सब मनमें न आवें जानो नेह डरपाये हैं ॥ चिंता जनि करो हिये धरो निहचिंतताई भूप सुधि आई दिन तीन कहां छाये हैं ॥ ३८९ ॥ सुनि आये गुरुवर कही ल्यावो मेरे घर देखों करामात बात यहै ले सुनाई है ॥ कह्यो आनि अभू जावो चल्यो उनमान देखो चले सुख मानि आयो हाथी धूम छाई है ॥ छोड़िकै कहार भाजि गये न निहारि सके आप रससार बाणी बोले जैसी गाई है ॥ बोलो हरे कृष्ण कृष्ण छांड़ो गज तम तन सुनि गयो हिये भाव देह सो नवाई है ॥ ३९० ॥ बहे दृग नीर देखि ह्वैगयो अधीर आप कृपा करि धीर कियो दियो भक्ति भाव है ॥ कानमें सुनायो नाम नाम दे गोपालदास माल पहिराई गरे प्रगट्यो प्रभाव है ॥ दुष्टशिरमोर भूप लखि उहि ठौर आयो पाँय लपटायो भयो हिये अतिचाव है ॥ निपट अधीन गाव केतिक नवीन दिये लिये कर जोरि मेरो फैल्यो भाग्यदाव है ॥३९१॥ भयो गजराज

भक्तराज साधु सेवा साज संतनि समाज देखि करत प्रणाम है ॥ आनि डारै गौन बनजारनकी वारिनसों आए ई पुकारन वे जहां गुरुधाम है ॥ आवत महोछोमध्य पावत प्रसाद शीथ बोले आप हाथीसों यो निंद्य वह काम है ॥ छोंड़ि दई रीति तब भक्तनिसों प्रीति बढ़ी संगही समूह फिरे फैलगयौ नाम है ॥ ३९२ ॥ संत सात पांच सात संग जित जात तित लोग उठि धावें ल्यावें सीधे वहु भीर है ॥ चहुँदिशि परी हुई सुवा सुनि चाह भई हाथ पै न आवत सो आने कोऊ धीर है ॥ साधु एक नायो गहि लयो भेष दास तन मनमें प्रसाद नेम पीवे नहीं नीर है ॥ बीते दिन तीन चारि जल ले पिवावे धार गंगाजू निहारि मधि तज्यो यों शरीर है ॥ ३९३ ॥

छप्पय–सोझा सींब आधार धीर हरिनाम त्रिलोचन ॥ आशाधर द्योराज नीर सधना दुखमोचन ॥ काशीश्वर अवधूत कृष्ण किंकर कट हरिया ॥ सो भू ऊदारामनाम डुंगरव्रत धरिया ॥ पद्म पदारथ रामदास, विमलानंद अमृत स्रये ॥ भवप्रवाह निसतार हित, आवलंबन येजन भये ॥ ९६ ॥

अथ सधनाभक्तजूका वर्णन ।

टी०क०–सधना कसाई ताकी नीकी कस आई जैसे वारवानी सोनेकी कसौटी कस आई है ॥ जीवको न बध करै तौपै कुलाचार ढरै बेंचै मांस ल्याय प्रीति हरिसों लगाई है ॥ गंडकीको सुत विन जाने तासों तौल्यौ करे भरै दृग साधु आनि पूजै पै न भाई है ॥ कही निशि सुपनेमें वाही ठौर मोको देवो सुनो गुणगान रीझ्यो हिय की सचाई है ॥ ३९४ ॥ लेके आयो साधु मैंतो बड़ो अपराध कियो कियो अभिषेक सेवा करी पै न भाई है ॥ एतो प्रभु रीझैं तोपै जोई चाहो सोई करौ गरौ भरि आयो सुनि मति बिसराई है ॥ वेई हरि उर

धारि डारि दियो कुलाचार चले जगन्नाथ देव चाह उपजाई है॥ मिल्यो एक संग संग जात वे सुगात सब तब आपु दूरि दूरि रहै जान पाई है॥ ३९५॥ आयो मग गांव भिक्षा लेन एक ठांव गयो नयो रूप देखि कोऊ तिया रीझ परी है॥ बैठो याही ठौर करौ भोजन निहोरि कह्यो रह्यो निशि सोयो आई सोई मति हरी है॥ लेवो मोको संग गरो काटो तौ न होय रंग बूझी और काटी पति ग्रीवपै न डरी है॥ कही अब पागो मोसो नातो कौन तोसों मोसों सोर करि उठी इन माऱ्यो भीर करी है॥ ३९६॥ हाकिम् पकरि पूँछे कहे हँसि माऱ्यो हम डाऱ्यो सोच भारी कही हाय काटि डारिये॥ काट्यो कर चले हरि रंगमांझ झिले मानी जानी कछु चूक मेरी यहै उर धारिये॥ जगन्नाथ देव आगे पालकी पठाई लेन सधनासों भक्त कहा चढ़ै न विचारिये॥ चढ़े आये प्रभुपास सुपनासो मिट्यो त्रास बोले दै कसौटीहूपै भक्ति विसतारिये॥ ३९७॥

॥ अथ गुसांईकाशीश्वरजूका वर्णन॥

क०—श्रीगुसाईं काशीश्वर आगे अवधूतवर करि प्रीति नीलाचल रहे लाग्यो नीको है॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी आज्ञा पाय आय वृंदावन देखि भायो भयो हीको है॥ सेवा अधिकार पायो रसिक गो-विंदचंद चाहत मुखारबिंद जीवन जो जीको है नितही लडावे भाव-सागर छुड़ावे कौन पारावार पावै सुनै लागै जग फीको है॥ ३९८॥

छप्पय—यती राम राम रावल्य श्याम खोजी संतसी-हा॥ दल्हा पद्म मनोरथ रांका द्योगू जप जीहा॥ जाड़ा चाचा गुरू सवाई चांदा नाया॥ पुरुषोत्तमसों सांच चतुरकी तामनयो जिहि मेटयौ काया॥ मतिसुंदर धी

धागै श्रम, संसारचालि नाहिन नचे ॥ करुणा छाया भक्तिफल, ए कलियुग पादप रचे ॥ ९७ ॥

अथ खोजीजूका वर्णन।

टी०क०-खोजीजूके गुरु हरिभावना प्रवीणमहा देह अंतसमै बांधि घंटा सो प्रमानिये ॥ पावैं प्रभु जब तब बाजि उठे जानौ यही पायेपै न बाजी बड़ी चिंता मन आनिये ॥ तन त्यागी बेर नहीं हुते फिरि पाछे आये वही ठौर पौड़ि देख्यो आंब पाक्यो मानिये ॥ तोरि ताके टूक किये छोटो एक जंतु मध्य गयो सो बिलाइ बाजि उठी जग जानिये ॥ ३९९ ॥ शिष्यकी तो योग्यताई नीके मन आई अजू गुरुकी प्रबल ऐपै नेकु घटि क्यों भई ॥ सुनौ याकी बात मन बातवत गति कही सही ले दिखाई और कथा अतिरसमई ॥ वे तौ प्रभु पायचुके प्रथम प्रसिद्ध पाछे आछो फल देखि हरि योग्य उपजी नई ॥ इच्छा सो सफल श्याम भक्त बश करी लही वही पूर पछ सब विथा उरकी गई ॥ ४०० ॥

अथ रांकावांकाजूका वर्णन।

क०-रांकापति वांका तिया बसे पुर पंढरमें उरमें न चाहे नेकु रीति कछु चारिये ॥ लकरीन बीन करि जीविका नवीन करे धरे हरिरूप हिये ताहीसों जियारिये ॥ विनती करत नाम देव कृष्ण देवजूसों कीजे दुख दूर कहो मेरी मति हारिये ॥ चलो ले दिखाऊं तब तेरे मन भाऊं रहे बन छिपि दोउ थैली मगमांझ डारिये ॥ ४०१ ॥ आये दोऊ तियापति पाछे वधू आगे स्वामी औंचकही मगमांझ संपति निहारिये ॥ जानी यों युवती जाति कभू मन चलि जात याते बेगि संभ्रमसों धूरि वापै डारिये ॥ पूंछी आजु कहा कियो भूमिमें निहुरि तुम कही वही बात बोली धनहू विचारिये ॥ कहे मोसों रांका ऐपै बांका आजु देखी तुही सुनि प्रभु बोले बात

साँची है हमारिये ॥ ४०२ ॥ नामदेव हारे हरि देव कही और बात जोपै दाह गात चलो लकरी सकेरिये ॥ आये दोऊ बीनबेको देखो एकठोरी ढेरी द्वेहू मिलि पावे तऊ हाथ नहीं छोरिये ॥ तबतो प्रगट श्याम ल्याये यों लिवाय घर देखि मुंड़ फोरो कह्यो ऐसे प्रभु फेरिये ॥ विनती करत कर जोरि अंग पटधारो भारो बोझ पर्‌यो लियो चीर मात्र हेरिये ॥ ४०३ ॥

छप्पय–लक्ष्मण लफरा लड्डू संत जोधपुर त्यागी ॥ सूरज कुंभनदास विमानी खेम बैरागी ॥ भावन विरही भरत नफर हरिके सो लुटेरा ॥ हरिदास अयोध्या चक्रपाणीयो सरयूतट डेरा ॥ तिलोक पुरुष ररी बीजुरी, उद्धव वनचर वंशजे ॥ परअर्थपरायण भक्त ये, कामधेनु कलिजूगके ॥ ९८ ॥

अथ लड्डूभक्तजूका वर्णन।

टी०क०–लड्डू भक्तनाम जाय निकसे विमुख देश लेश हू न संत भाव जाने पाप पागे हैं॥देवीको प्रसन्न करे मानुसको मारि धरे लेगये पकरि तहां मारिबेको लागेहैं ॥ प्रतिमाको फारि विकराल रूप धारि-आई लेके तरवार मुंड काटे भीजे वागे हैं ॥ आगे नृत्य करे दृग भरे साधु पाँव धरे ऐसे रखवारे जानि जनु अनुरागे हैं ॥ ४०४ ॥

अथ श्रीसंतभक्तजूका वर्णन।

कबित–सदा साधुसेवा अनुराग रंग पागि रह्यो गह्यौ नेम भिक्षा व्रत गांव गांव जायकै ॥ आये घर संत पूँछे तियासों यो संत कहां संत चूल्हे मांझ कही ऐसे अलसायकै ॥ बानो सुनि जानी चले मग सुखदानी मिले कह्यो कितहूते सो बखानी उर आयकै ॥ बोली यहै साँच वाही आंचहीको ध्यान मेरे आनि गृह फेरि किये मगन जिवायकै ॥ ४०५ ॥

अथ त्रिलोकभक्तजूका वर्णन ।

कबित्त–पूरबमें ओकसों तिलोक हो सुनार जाति पायो भक्ति सार साधुसेवा उर धारिये ॥ भूपके विवाह सुता जोरा एक जेहरिको गढ़िबेको दियो कह्यो नीकेकै सँवारिये ॥ आवत अनंत संवमर पावे कहूं रहे दिन होय भोय रोस यों सँभारिये ॥ ल्यावो रे पकरि ल्याये छांड़िये मकर कही नेकु रह्यो काम आवै नातो मारि डारिये ॥ ४०६ ॥ आयो वाहो दिन कर छुयोहूं न इन नृप करे प्राण विन वनमांझ छिप्यो जायके ॥ आये लर चारि पांच जानी प्रभु आंच गाढ़े लियो सो दिखायो साँच चले भक्त भायके ॥ भूपको सलाम कियो जेहरिको जोरा दियो लियो कर देखि नैन छोंड़े न अघायके ॥ भई रीझ भारी सब चूक मेटि डारी धन पायो ले मुरारी ऐसे बैठे घर आयके ॥ ४०७ ॥ भोरही महोछो कियो जोई मागे सोई दियो नाना पकवान रस खान स्वाद लागे हैं ॥ संतको स्वरूप धरि ले प्रसाद भरि गये तहां पावो जू तिलोक गृह पागे हैं॥कौनसो तिलोक अरे दूसरो तिलोकीमें बैन सुनि चैन भयो आये निशि रागे है ॥ चहल पहल धन भऱ्यो घर देखि ढऱ्यो प्रभु-पदकंज जानि मेरे भाग जागे हैं ॥ ४०८ ॥

छप्पय-सोम भीम सोमनाथ विकोविसाखा लखमन ध्याना॥महदा मुकुंद गनेश त्रिविक्रम रघु जग जाना॥ वाल्मीक वृद्ध व्यास जगन झाझूं विठ्ठल अचारज॥हरिभूलाला हरिदास बांह बलराघोआरज ॥लाखाछितर उद्धव कपूर घांटमधूरा कियो प्रकास॥ अभिलाष अधिक पूरण कारण,ये चिंतामणिचतुरदास ९९।देवानंदमुकुंद महीपति संतराम तंबोरी॥खेम श्रीरंग नंदविनसन बिदा बाजू सुत जोरी॥ छीतमद्धारिकादा माधव

मांडन रूपा दामोदर॥भल नरहरि भगवान बाल का-न्हर केशव सोहैं घर दास प्रयाग लोहंग गोपाल, नागू सुत यह भक्त भीर॥ भक्तपाल दिग्गज भगत,थानपति शूर धीर॥१००॥केशव पुनि हरिनाथ भीम खेता गो-विंद ब्रह्मचारी ॥ बालकृष्ण बड़भरत अच्युत अपया व्रतधारी ॥ पंडा गोपीनाथ मुकुंद गजपत्ति महायश ॥ गुणनिधि यश गोपाल दये भक्तनिको सरबस॥श्रीअंग सदा सानिधि रहे, कृतपुण्यपुंज भल भाग भर ॥ बद्री-नाथ उडीसाद्वारिका, सेवक सब हरिभजनपर १०१

अथ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिजूका वर्णन ।

टी०क०—श्रीप्रतापरुद्रगजपतिको बखान कियो लियं भक्ति भाव महा प्रभुपै न देखही ॥ किये हू उपाय कोटि ओट ले सन्यास दियो हियो अकुलायो अहो कहूं मोको पेखही ॥ जगन्नाथरथ आगे नृत्य करें मत्तभये नीलाचल नृप पाँय पऱ्यो भाग लेखही ॥ छातीसों लगायो प्रेमसागर बुड़ायो भयो अतिमनभायो दुःख देत ए निमे-खही ॥ ४०९ ॥

छप्पय—विद्यापति ब्रह्मदास वहोरन चतुरविहारी॥ गोविंद गंगाराम लाल वरसनियां मंगलकारी ॥ प्रिय दयालु परशुराम भक्त भाई खाटीको ॥ नंदसुवनकी छाप कवित केशवको नीको॥आसकरण पूरण नृप-ति, भीषम जन दयालु गुण नाहिन पार ॥ हरि सुयश प्रचुर कर जगत्में, ये कविजन अतिशय उदार॥१०२॥

अथ श्रीगोविंदस्वामीजूका वर्णन ।

टी०क०—गोवर्द्धननाथ साथ खेलें सदा झेले रंग अंग सख्यभाव

हिये गोविंद सुनाम है ॥ स्वामी करि ख्यात ताकी बात सुनि लीजै नीके सुने सरसात नैनरीति अभिराम है ॥ खेलत हो लाल संग गयो उठि दाँव लेके मारी खैंचि गिल्ली देखि मंदिरमें श्याम है ॥ मानि अपराध साधु धका दे निकारि दियो मत सो अगाध कैसे जाने यह वाम है ॥४१०॥ बैठ्यो कुंडतीर जाय निकसैगो आय बन दिये हैं लगाय ताको फल भुगताइये॥ लाल हिये सोच पर्यो कैसे भर्यो जात यह अड्यो मगमांझ भोग धर्यो पै न खाइये ॥ कही श्रीगुसांईजूसों मोको ये न भाई कछु चाहो जो खवायो तोपै वाको जा मनाइये ॥ वाके हुतो दाँव मोपै सोतो भाव जान्यो नहीं कही मोसों बातैं सो कुमारै बेगि ल्याइये ॥ ४११ ॥ बन बन खेले बिन बनत न मोको नेकु भनत जुगाही अनगनत लगावैगो ॥ सुधि बुद्धि मेरी गई भई बड़ी चिंता मोहिं ल्याइये जूं ढूंढ़ि कहूं चैन ढिग आवैगो ॥ भोग जे लगाये मै तो तनक न पाये रिस बाकी जब जाय तब मोहूं कछु भावैगो ॥ चले उठि धाये नीठि नीठिकै मनाये ल्याये मंदिरमें खाये मिलि कही गरे लावैगो ॥४१२॥ गये हैं बाहिर भूमि तहां कृष्ण झूमि आये बड़ी धूमि आक बोढ़निसों मारिकै ॥ इनहूं निहारि उठि मारि दई वाहीसोंजु कौतुक अपार सख्य भावरस सारिकै ॥ माता मग चई बड़ी बेर भई आई तहां कहां बार लाई ओट पाई उर धारिकै ॥ आयो यों विचार अनुसार सदाचार कियो लियो प्रेम गाढ़ कभू करत सँभारिकै ॥ ४१३ ॥ आवत हो भोग महासुंदर सुमंदिरको रह्यो मग बैठि कही आगे मोहिं दीजिये ॥ भयो कोप भारी थार डारि जा पुकार करी भरी न अनीति जात सेवा यह लीजिये ॥ बोलिकै सुनाई अहो कहो मन आई तव खोलिकै बताई अजू बात कान कीजिये ॥ पहिले जु खाय बनमांझ उठि जाय पाछे पांऊं कहां धाय सुनि मति रस भीजिये ॥ ४१४ ॥

छप्पय—रघुनाथ गोपीनाथ रामभद्रदास स्वामी ॥ गुंजामाली चितु उत्तम विठ्ठल मरहट निष्कामी ॥ यदुनंदन रघुनाथ रामानंद गोविंद मुरली सोती ॥ हरिदास मिश्र भगवान मुकुंद केशौ दंडोती ॥ चतुर्भुज चरित्र विष्णुदास, वेणीपद मो शिर धरो ॥ जे अस बसत मथुरा मंडल ते दयादृष्टि मोपर करो ॥ १०३ ॥

अथ गुंजामालीजूका वर्णन।

टी०क०—कही नाभास्वामी आप गायो मैं प्रताप संत बसे ब्रज बास सो तौ महिमा अपार है ॥ भये गुंजामाली गुंजहार धारी नाम पऱ्यो कऱ्यो बास लाहोरमें आगे सुनो सार है ॥ सुत वधू विधवा सो बोलिके सुनायो लेहु धनपति गृह श्रीगोपाल भरतार है ॥ देवो प्रभुसेवा माँगे नारि बार बार यह डारे सब वारी यापै गनै जग छार है ॥ ॥ ४१५ ॥ दई सेवा वाहि और घर धन तिया दियो लियो व्रजवास वाकी प्रीति सुनि लीजिये ॥ ठाकुर बिराजे जहा खेलें सुत औरनके डारे ईंट खोहा पऱ्यो प्रभुपर खीजिये ॥ दिये वे बिड़ारि धऱ्यो भोगपै न खात हरि पूंछी कही वेई आवें तबहीं तौ जीजिये ॥ कह्यो रिसभरि धूरि नीकी भोर डारैं भरि खावें हम हाहा करि पाथो ल्याइ रीझिये ॥ ४१६ ॥

छप्पय—सीताझाली सुमति शोभा प्रभुता उमा भटियानी ॥ गंगा गौरी कुंवरि उबीटा गुपाली गणेश दे रानी ॥ कला लखा कृत गढो मानमति शुचि सतभामा ॥ यमुना कोली राम मृगा देवीदे भक्तनि विश्रामा ॥ युगजीवाकी कमला देवकी हीरा, हरिचेरी पोषेभगत ॥ कलियुग युवतीजन भक्तराज, महिमा सब जाने जगत ॥ १०४ ॥

अथ गणेशदेराणीजूका वर्णन ।

टी०क०–मधुकरसाह भूप भयो देश ओड़छेको राणी सो गणेशदे सुकाम वाको कियो है ॥ आवें बहु संत सेवा करत अनंत भांति रह्यो एक साधु खन पान सुख लियो है ॥ निकट अकेली देखि बोल्यो धनथैली कहां होय तो बताऊं सब तुम जानो हियो है ॥ मारी जांघ छूरी लखि लोहू बेगि भागि गयो भयो सोच जाने जिन राजा बंदि दियो है ॥ ४१७ ॥ बांधि नीकी भांति पौढ़ि रही कही काहूसों न आयो ढिग राजामति आवो तियाधर्म है ॥ बीते दिन तीन जानी वेदन नवीन कछु कहिये प्रवीन मोसों खोलि सब मर्म है ॥ टारी बार दोय चारिनृपके बिचार पऱ्यो समाधान कियो जिन आनो जिये भर्म है ॥ फिऱ्यो आस पास भूमि परत न रासि करी भक्तिको प्रभाव छांड़ि तिया पति शर्म है ॥ ४१८ ॥

छप्पय–नरबाहन बाहन बरी सजा पूजै मल बिदावत ॥ जयंत धारा रूप अनभई उदारावत ॥ गंभीरे अर्जुन जनार्दन गोविंद जीता ॥ दामोदर सांपि ले गदा ईश्वर हेम विदीता॥मयानंदमहिमा अनंत,गुदी ले तुलसी दास ॥ हरिके संमत जे भगत, ते दासनके दास ॥ १०५ ॥

अथ नरबाहनजूका वर्णन ।

टी०क०–रहे भैगांव नाव नरबाहन साधु सेवा लूटि लई नाव जाकी बंदी खानो दियो है ॥ लौंड़ी आवे दैन कछु खायबेको आय दया अति अकुलाय ले उपाय यहै कियो है ॥ बोलो राधावल्लभ औ लेवो हरिवंशनाम पूंछे शिष्य नाम कहो पूंछि वाम लियो है ॥ दई मँगवाय बस्तु राखियो दुराय बात आप दास भयो कही राजपद दियो है ॥ ४१९ ॥

छप्पय–यहै वचन परमान दास गांवरी जटियान भाऊ॥बुंदी वनिया रामदास मंडोते मोहनवारी दाऊ॥ माड़ौठी जगदीश दास लछमन चट थावल भारी॥ सुन पथमें भगवान् सबै सलखान गुपाल उधारी॥जो बनेर गोपालके, भक्तइष्टता निरवही॥श्रीमुखपूजा संतकी, आपुनतें अधिकी कही॥ १०६॥

अथ गोपालजूका वर्णन।

टी०क०–जो बनेरवास सो गोपाल भक्त इष्ट ताको कियो निरवाह बात मोको लागी प्यारियै॥ भयो हो विरक्त कोऊ कुलमें प्रसंग सुन्यो आयो यों परिक्षा लैन द्वारपै विचारियै॥ आय पऱ्यो पाँय पाँव धारो निजमंदिरमें सुंदरि न देखो मुख पण कैसे टारियै॥ चलो निजटारो तिया रहेगी किनारो करि चले सब छपि नेकु देखि याके मारियै॥४२०॥ एकपै तमाचो दियो दूसरेने रोस कियो देवो या कपोलपै यो बानी कही प्यारी है॥ सुनि आंसू भरि आय जांय लपटाय पाय कैसे कही जाय यहै रीति कछु न्यारी है॥ भक्त इष्ट सुन्यो मेरे बड़ो अचरज भयो लई मैं परीक्षा भई शिक्षा मोको भारी है॥ बोल्यो अकुलाय अजू पैये कहां भाय तोपै साधु सुख पाय कहे यही मेरी जारी है॥ ४२१॥

छप्पय–मुरधरखंडनिवास भूप सब आज्ञाकारी-राम नाम विश्वास भक्तपदरजव्रतधारी॥ जगन्नाथके द्वार दंडोतनि प्रभुपै धायो॥दई दासकी दादि हुंडी करि फेरि पठायो॥ सुरधुनीओघ संसर्गते,नाम वदल कुछि नत धरो।परमहंस वंशनिमे.भयो विभागीवानरो१०७

टी०क०–लाखा नाम भक्त ताको वानरो बखान कियो कहे जग डोम जासों मेरो शिरमोर है ॥ करै साधुसेवा बहु पाक डारि मेवा संत जेंवत अनंत सुख पावें कौर कौर है ॥ ऐसेमें अकाल पर्‍यो आवै धरि माल जाल कैसे प्रतिपाल करे ताकी और ठौर है ॥ प्रभुजू सुपन दियो कियो मैं जतन एक गाड़ी भरि गेहूं भैंसि आवै करो गौर है ॥४२३॥ गेहूं कोठी डारि मुह मूंदि नीचे देवो खोलि निकसें अतोल पीसि रोटी ले बनाइये ॥ दूध जितो होय सो जमायकें बिलोय लीजे दीजे यों चुपरि संग छाँछ दे जिमाइये ॥ खुलिगईं आंखें भाखें तियासों जू आज्ञा दई भई मनभाई अजू हरिगुण गाइये ॥ भोर भये गाड़ी भैंसि आई वही रीति करी करी साधुसेवा नानाभांतिन रिझाइये ॥ ४२२ ॥ आई कौन रीति वाकी प्रीति हू बखान कीजे लीजै उर धारि सार भक्ति निरधार है ॥ रहै ढिग गांव तहां सभा एक ठांव भई ढूंढ़ि गये भाई सो उगाहीको विचार है ॥ बोलि उठ्यो कोऊ यो व्यौहारको तो भर चूक्यो लीजिये सँभारि लाखा संत भव पार है ॥ लाज दबि गयो दियो गेहूं ले पचास मन दई निजभैंस संग सब सरदार हैं ॥ ४२४ ॥ मारवाड़ देशते चल्योई साष्टांग किये हिये जगन्नाथ देव याही पन जाइये ॥ नेह भरि भारी देह वारि फेरि डारी कैसे करे तन धारी नेकु श्रम मुरझाइये ॥ पहुँच्यो निकट जाय पालकी पठाय दई कहे लाखा भक्त कौन बेगि दे बताइये ॥ काहू कहि दियो जाय कर गहि लियो अजू चलो प्रभुपास इहि छिनही बुलाइये ॥ ४२५ ॥ कैसे चढ़ो पालकीमें पन प्रतिपाल कीजे दीजे मोको दान याही भाति जानि हारिये ॥ बोले प्रभु कही भाय स्मरनी बनाय ल्याय अब पहिराय मोहिं सुनि उर धारिये ॥ चले चढ़ि बैठि कियो चाहै यह यानमेतो पढ़ि २ पोथी प्रेम मोपै विसतारिये ॥ जायके निहारे तन मन प्राण वारे जगन्नाथ देवजूके प्यारे नेकु ढिगते न टारिये ॥ ४२६ ॥ बेटी एक क्वाँरी व्याह देत न विचारी मन धन हरि साधुनको कैसेके लगाइये ॥ कीजै वाको काज

कही जगन्नाथ देवजूने लीजे मोपै द्रव्य उर नेकहू न आइये ॥ विदापै न भये चले दृग भरि लये गये आगे नृप भक्त मग चौकी अटकाइये ॥ दियो है सुपन प्रभु जिनि हठ करो अजू हुंडी लिखदई लई तिनैके जताइये ॥ ४२७ ॥ हुंडी सौहजार कियो लैके गृहद्वार आय तामें ते लगाय सौक बेटी ब्याह कियो है ॥ और सब संतन बुलायके खवा-य दिये लिये पग दास सुखराशिपन लियो है ॥ ऐसही बहुत दाम वाहीके निमित्त ले ले संतभुगताय अति हरषित हियो है ॥ चरित अपार कछु मति अनुसार कह्यो पायो जिन स्वाद सो तो पायो निधि जियो है ॥ ४२८ ॥

छप्पय–महासमारत लोग भक्ति लौलेस न जाने ॥ माला मुद्रा देखि तासुको निंदा ठानें ॥ ऐसे कुल उत्पन्न भयो भागवतशिरोमणि ॥ ऊसरते सर कियो खंड दोषहु खोयो जिनि॥बहुत ठौर परचो दियो, रस-रीति भक्ति हृदये धरी ॥ जगत विदित नरसी भगत, गुज्जरधर पावन करी ॥ १०८ ॥

टी०क०–जूनागढ़बास पिता मात तन नाश भयो रहै एक भाई औ भौजाई रिसभर है ॥ डोलत फिरत आय बोलत पियावो नीर भाभीपै न जानी पर बोली जरी बरी है ॥ आवत कमाये जल प्याये बिन सरै कैसे पियो यों जबाब दियो देह थर थरी है ॥ निकसे बिचारि कहूं दीजे तन डारि मानो शिवपै पुकार करी रहे चित धरी है॥४२९॥ बीते दिन सात शिवधामते न जात बार परै काहू तुच्छ द्वार सोउ सुधि लेत है ॥ इतनी बिचारि भूँख प्यास दई टारि लियो प्रगट स्वरूप धारि भयो हिये हेत है ॥ बोले वर मांगि अजू मांगि मैं न जानत हों तुम्हें जोइ प्यारो सोई देवो चित चेत है ॥ पऱ्यो सोच भारी मेरी प्राणप्यारी नारी तासों कहत टरत वेद कहे नेति प्रीति है ॥ ४३० ॥ दियो मैं

वृकासुरको वर डर भयो तहां वैसे डर कोटि २ यापै बारि डारे हैं ॥ बालक न होय यह मालक है लोकनको मनको विचार कहा दीजै प्राण प्यारे हैं ॥ जोपै नहीं देत मेरो बोलिबो अचेत होत दियो निज-हेत तन अलिनिके धारे हैं ॥ ल्याये वृंदावन रासमंडल जटित मणि प्रिया अनगत बीचि लालजू निहारे हैं ॥४३१॥ हीरनि खचित रास-मंडल नचत दोऊ रचित अपार नृत्य गान तान न्यारिये ॥ रूप उजि-यारी चंदचादनी न सम सम तारी देत करतारी लालगति लेत प्यारिये॥ ग्रीवाकी दुरनि कर आंगुरी मुरनि मुख मधुर सुरनि सुनि श्रवण तथा-रिये ॥ बजत मृदंग मुहचंग संग अंग अंग उठत तरंग रंग छवि जीकी जारिये ॥ ४३२ ॥ दई ले मसाल हाथ निरखि निहाल भई लाल डीठि परी कोऊ नई इह आई है ॥ शिवसहचरी रंगभरी अटकरी बात मृदु मुसकात नैन कोरमें जनाई है ॥ चाहै याहि टारों यह चाहे प्राण वारों तब श्यामढिग आप कही नीके समुझाई है ॥ जावो यहे ध्यान करो करो सुधि आऊं जहां आए निजठौर चटपटीसी लगाई है ॥ ४३३ ॥ कीनी ठौर न्यारी विप्रसुता भई नारी एक सुत उभै बारी जग भक्ति बिसतारी है ॥ आवैं बहु संत सुख देत हैं अनंत गुण गावत रिझावत औ सेवा बांधि धारी है ॥ जिती द्विज जात दुख भयो अति गात मान्यो बड़ो उतपात दोष करै न बिचारी है ॥ एतो रूपसागरमें नागर मगन महा सकै कहा करि चहुँ ओर गिरिधारी है ॥ ॥ ४३४ ॥ तीरथ करत साधु आये पुर पूंछे कोऊ हुंडी लिखि दीजे हमैं द्वारिका सिधारिये ॥ जेवरहै दुःख कही जातही भगावे भूप नरसी विदित साह आगे दाम डारिबे ॥ चरण पकरि गिरिजावो जो लिखावो अहो कहो वार बार सुनि बिनती न टारिबे ॥ दियो ले बताइ घर जाय वही रीति करी भरी अँकवार मेरो भाग कहा वारिबे ॥४३५॥ सातसै रुपैया गनि ढेरी करि दई आगे लागे पग देबो लिखि

कही बार बार है॥ जानि बहँकाये प्रभु दाम दे पठाये लिखि किये मनभाये साह सांवल उदार है॥ याही हाथ दीजिये ले कीजिये निशंक काज गये यदुराजधानी पूंछयो सो बजार है ॥ ढूंढ़ि फिरि हारे भूख प्यास मीड़ि डारे पुर तजि भये न्यारे दुखसागर अपार है॥ ४३६ ॥ साहको स्वरूप करि आये कांधे थैली धरि कौन पास हुंडी दाम लीजिये गनायकै॥ बोलि उठे ढूंढ़ि हारे भले जू निहारे आजु कही लाज हमै देत मैहू पाये आयकै ॥ मेरो है इको सो बास जानै हरिदास कोऊ लेवो सुखरास करो चिठ्ठी दीजे जायकै॥ धरेहैं रुपैया ढेर लिख्यो करो बेर बेर फेरि आई पाती दई लई गरे लायकै॥४३७॥ देखि आये साह दौरि मिले उतसाह अंग वेऊ रंग बोरे संतसंगको प्रभाव है॥ हुंडी लिखि दई दाम लिये सो खवाय दिये किये प्रभु पूरे काम संतनसों भाव है ॥ सुता सुसरार भयी छुछक बिचार सास देत बहु गारि जाके निपट अभाव है ॥ पिता सो पठाई कहि छाती ले जराई इन जोपै कछु दियो जाय आवो यह दाव है ॥ ४३८ ॥ चले गाड़ी टूटीसी ले बूढ़े उभै बैल जोर पहुँचे नगर छोर द्विज कही जायकै॥ सुनतहि आई देखि मुह पियराई फिरा दाम नहिं एक तुम कियो कहा आयकै॥ चिंता जिनि करौ जाय सास ढिग ढरौ लिखि कागदमें धरो अति उत्तम अघायकै ॥ कही समुझाय सुनि निपट रिसाय उठी कियो परिहास लिख्यो गांव खुनसायकै ॥ ४३९ ॥ कागद ले आई देखि दूसरे फिराई पुनि भूलिपै न पाई जात पाथर लिखाये हैं ॥ रहिबेको दई ठौर फूटी ठही पौर जाकी बैठे शिर मोर आय बहु सुख पाये हैं॥ जल दे पठायो भली भांतिकै औटायो भई बरषा सिरायो यों समोयकै अन्हाये हैं॥ कोठरी सँवारि आगे परदा सो दियो डारि ले बजाये ताल बेस अगणित आये हैं ॥ ४४० ॥ गांव पहिरायो छबि छायो यश गायो अहो हाटक रजत उभै पाथरहु आये हैं॥ रहि गई एक एक भूल

लिखत अनेक जहा लेहो ताही पास जापै सब मिलि पाये हैं॥ विनती करत बेटी दीजिये जु लाज रहे दियो मँगवाइ हरि फेरिकै बुलाये हैं॥ अंगन समात सुता तातको निरखि रंग संग चली आई पति आदि बिसराये हैं॥ ४४१॥ सुता हुतीं दोय भोय भक्ति रहीं घरहीमें एक पति त्यागि एक पतिहू न कियो है॥ पुरमें फिरत उभै गायनि सुचायनिसों धनसो न भेंट काहू नाम कहि दियो है॥ आइ लगी गायबेको कही समझाय अहो पायबेको नाहीं कछु पावे दुख हियो है॥चाहो हरिभक्ति तो मुड़ायकै लड़ाय लीजे कीजे बार दूरी रही प्रेमरस पियो है॥४४२॥ मिली उभै सुता रंग झीली संग गायनि वै चायनिसों नृत्य करें भायनि बतायकै॥ सालँग है नाम मामा मंडलीकमंत्री रहे कहो विपरीत बड़ी राजासों सुनायकै॥ बड़े बड़े दंडी और पंडित समाज कियो करो बाकी भंडी देश जीजिये छुटायकै॥ आए चार चोपदार चलो जू विचार कीजे भयो दरबार हमैं दियेहैं पठायकै॥४४३॥ चारों तुष जावो टरि भयो हमैं राजा डर सकें कहा करि अजू चलें संग संगही॥ आए वाही भांति सभा प्रभाहत भई तऊ बोले कहा रीति यह युवती प्रसंग ही॥ नाचत बजावत ये चली ढिग गावत सुभावत मगन जानी भीजिगई रंगही॥ कही भक्ति गंध दूरि पढ़ै पोथी परी धूरि श्रीशुक सराही तिया माथुरनि भंगही॥ ४४४॥ बोलि उठ्यो विप्र एक छुछक प्रसंग देख्यो कह्यो रसरंग भऱ्यो ढऱ्यो नृपपायमैं॥ कही जू विराजो गाजो नित सुख साजो जाय किये हरि राय वश भीजे रहो भायमैं॥ धारो उर और शिरमोर प्रभु मंदिरमें सुंदर केदारो राग गावे भरे चायमैं॥ श्यामकंठमाल टूटि आवति रसाल हिये देखि दुख पावे परे विमुख सुभायमैं॥ ४४५॥ नृपति सिखायो जाय वृथा शय छायो काचे सूतमें पुहायो हार टूटि ख्यात कारी है॥ माता हरिभक्त भूप कही जिनि करो कान तऊ बानि राजसकी माया मति हरी है॥

गयो ढिग मंदिरके सुंदर मँगाय पाट तागो बटवाय करि माला गुहि धरी है प्रभु पहिराय कह्यो गाय अब जानी परै भैरै सुर राग और गायो पै न परी है ॥ ४४६ ॥ विमुख प्रसन्न भये तब तो उराहने दे नये नये चोज हरि सनमुख भाषिये ॥ जाने ग्वाल बाल एक माल गहि रहे हिये जिये लाग्यो एही रूप कह्यो लाख लाखिये ॥ नारायण बड़े महा अहो मेरे भाग लिख्यो करे करे कौन दूरि छबि पूरि अभिलाषिये ॥ मेरो कहा जाय आय परसे कलंक तुम्हे राखिये निशंक हार भक्ति मारि नाखिये ॥ ४४७ ॥ रहे तहां साह किये उभय विवाह जागें तिया एक भक्त कहे हरिको दिखाइये ॥ नरसी कही ही भले सोई प्रभुबानी लई सांच कर दई गए राग छुटवाइये ॥ बोले पट खोलि दिये किये दरशन ताने ताने पट सोवे वह कही देवो भाइये ॥ लिये दाम काम कियो कागद गहाय दियो दियो कछु खायबेको पायो ले भिजाइये ॥ ४४८ ॥ गहने धऱ्यो हो राग केदारो सो साह धरि धरि रूप नरसीको जायकै छुटायो है ॥ कागद ले डाऱ्यो गोद मोद भरि गाय उठे आय जन जन श्याम हार पहिरायो है ॥ भयो जैजैकार नृप पाँय लपटाय गयो गह्यो हिये भाव सो प्रभाव दरसायो है॥ विमुख खिसा-ने भये गये उठि नये माहिं बिन हरिकृपा भक्तिपंथ जात पायो है॥४४९ करन सगाई आयो पायो वर भायो नाहिं घर घर फिऱ्यो द्विज नरसी बतायो है॥ आय सुख पाय पूंछयो सुत सो दिखाय दियो कियो ले तिलक मन देखत चुरायो है॥ अजू हम लायक न तुम सब लायक हो सायक-सो छूट्यो जाय नांव ले सुनायो है॥ सुनतही माथो ठोंकि कहे तालकुटा वह नाल बोरि आयो फेरी जावो दुख छायो है ॥ ४५० ॥ काटिकै अँ-गूठा डारो तबसो उचारो बात मनमें विचारो कियो तिलक बनायके ॥ जाने सुता भाग ऐसे रहे सोचि पागि सब आवे जब ब्याहबेको धन दे अघायके ॥ लग्न हू लिखि दियो दियो द्विज आनि लियो डारि

राख्यौ कहूं गावै ताल ए बजायके॥ रहे दिन चारि पै विचारी नहिं नेकु मन आए कृष्ण रुक्मिणीजू झूमि मिले धायके॥ ४५१॥ ठौर ठौर पकवान होत तिया गान करें घुरत निसान कान सुनिये न बात है ॥ चित्रमुख किये ले विचित्र पटरानी आय घोर रंग बोरी पै चढ़ायो सुत रात है ॥ करी सो ज्योनार तामें मानव अपर आये द्विजनि बिचारि पोट बांधी पै न मात है॥ मणिमयी साज बाजि गज रथ ऊंट कोर झमके किसोर आज साजे यों बरात है ॥ ४५२॥ नरसीसों कहै गहै हाथ तुम साथ चलो अंतरिक्षमें हों चलों इति बात मानिये॥ कही अजू जानो तुम मैंतो हिये आनो यहै सुख मनमें सो फेंट ताल आनिये॥ आपही विचार सब भारसों उठाय लियो दियो डेरा पुरी समधीकी पहिंचानिये॥ मानुस पठायो दिन आये पै न आये अहो देखि छबिछायो नर पूंछे जु बखानिये॥ ४५३॥ नरसी बरात मत जानो यह नरसीकी नरसी न पावै ऐसी समझ अपार है॥ आयकै सुनाई सुधि बुद्धि बिसराई कहो करत हँसाई बात भाखो निरधार है ॥ गयो जो सगाई कर दरबार आयो द्विज निजअंक मात कैसे रंगविसतार है ॥ कही पकघास धन राशिसों न पूजे कहूं चहूँदिशि पूर रही देखो भक्तिसार है ॥ ४५४॥ चले अचरज मानि देखि अभिमान गयो लयो पाछो बांभनको हमैं राखि लीजिये॥ जाय गहि पाँय रहो भाय भरि दया करें गये दृग भरि पाँय परि कृपा कीजिये॥ मिले भरि अंक ले दिखायो सो मयंकमुख हूजिये निशंक इनै मोर सुता दीजिये॥ ब्याहि करि आये भक्तिभाव ले पठाये सब गाये गुण जाने जिते सुनि सुनि जीजिये॥ ४५५॥

छप्पय—सुत कलत्र संमत सबै गोविंदपरायण॥सेवत हरि हरिदास द्रवत मुख राम रसायण॥सीतापतिको सुयश प्रथमही गमन बखान्यो॥ द्वै सुत दीजे मोहिं क-

बित सबही जग जान्यो॥गिरागदित लीला मधुर, संत-
नि आनंददायिनी॥ दिवोदासबंशयशोधरसदन, भई
भक्ति अनपायिनी ॥१०९॥ लीलापदरसरीति ग्रंथरच-
नमें नागर॥सुरस उक्तियुत युक्ति भक्ति रसगान उजा-
गर॥प्रचुर पयधिलों सुयश राम पुरग्रामनिवासी॥सक
लसुकलसंवलित भक्तपदरेणुउपासी॥चंद्रहास अंगज
सुहृद परमप्रेमपयमें पगे ॥ श्रीनंददासआनंदनिधि,
रसिकसुप्रभुहित रंगमें॥ ११० ॥ भक्तितेज अतिभाल
संतमंडलको मंडन ॥ बुधिप्रवेश भागवत ग्रंथसंशय-
को खंडन॥नरइडगांवनिवास देश बागड़ तिस्तार्‍यो॥
नवधा भजन प्रबोध अनन्यदासव्रत धार्‍यो॥ भक्तकृ-
पा वांछी सदा, पदरज राधालालकी॥संसार सकलव्या
पक भई, जकरी जन गोपालकी ॥ १११॥ प्रसिद्ध प्रेम-
की बात गढ़ा गढ़ परचौ दीयो ॥ ऊँचेते भयो पात
श्याम साँचोपन कीयो॥ सुत नाती पुनि सदृश चलत
ऊही परिपाटी ॥ भक्तनसों अतिप्रेम नेम नहिं काहू
अंग घाटी ॥ नृत्य करत नहिं तन संभार, समसर
जन कनकी शक्ति ॥ माधो दृढ़ महि महि उपर,
प्रचुर करी लोटन भगति ॥ ११२ ॥

टी०क०—गढा गढ पुर नाम माधो बढ़ी प्रेमभूमि लोटे जब नृत्य करे भूले सुधि अंगकी॥भूपति विमुख झूंठ जानिकै परीक्षा लई आनि तिन छातपर देखी गति रंगकी॥ नूपुरन बांधि नाच साँच सो दिखाय दियो गिर्‍योहू कराहमध्य जियो मति पंगकी॥बड़ो त्रासभयो नृपदास विसवास बढ्यो मढ्यो उरभाव रीति न्यारी या प्रसंगकी॥ ४५६ ॥

छप्पय—नग अमोल इक ताहि सबै मिलि भूपति जाँचै ॥ साम दास बहुकरे दास नाहिंन मत काचै ॥ एकसमै संकट लै वे पानीमहिं डाऱ्यो॥ प्रभू तिहारी वसति बदनतें बचन उचाऱ्यो ॥ पांच दोय शत कोशते हरि हीरा ले उर धऱ्यो ॥ अभिलाषभक्त अंगदको, पुरुषोत्तम पूरण कऱ्यो ॥ ११२ ॥

टी०क०रायसेन गढ़ वास नृपसों सलाह दी जू ताको यह काका रहे अंगद विमुख है ॥ ताकी मारी प्यारी प्रभु साधुसेवा धारी उर आय गुरु घर कहे कृष्णकथा सुख है ॥ बैठे भौन कौन देखि कैसे मौन रह्यो जात बोल्यो तिया जात कहा करो नर रूख है ॥ सुनि उठि गये बधू अन्न जल त्याग दये लये पांव जाय विषैवश भयो दुख है ॥ ४५७ ॥ मुख न दिखावे याहि देख्यो ई सुहावे कही भावे सोई करो नेकु वदन दिखाइये ॥ मैंहूं जल त्यागि दियो अन्न जात कापै लियो जियो जब नीको तब आप कछु खाइये ॥ बोलि मोसों बोलो जिन छांड़ो तन याहि छिन पन साँचो होतो जोपै सुनत समाइये ॥ कह्यो अब कीजे जोई मेरो मति गई खोइ भोइ उर दया बात कहि समझाये ॥ ४५८ ॥ वे ई गुरु करो जाय पाँयनिमें परो गयो चायनि लिवाय ल्यायो भयो शिष्य दीन है ॥ धारी उर माल भाल तिलक बनाय कियो लियो शीतप्रीति कोउ उपजी नवीन है ॥ चढ़ी फौज संग चढ़्यो बैरीपुर मारि बढ़्यो कढ़्यो टोपी लेके हीरा शत एक पीन है ॥ डारे सब बेंचि पागपेंचध्य राख्यो मुख्य भाख्यो सो अमोल करो जगन्नाथ लीन है ॥ ४५९ ॥ कानाकानी भई नृप बात सुनि लई कही हीरा वह देय तोपै और माफ किये हैं ॥ आप समुझावे बहु जुगत बतावे याके मनमें न आवे जाय सबै

कहि दिये हैं ॥ अंगद बहनि लगे वाकी भुवा पागे तासों देवो विष मारो फिरि तूही पग छिये हैं ॥ करत रसोई घर गरल मिलायो पाक भोगहू लगायो अजू आवो बोलि लिये हैं ॥ ४६० ॥ वाकी एक सुता संग लेके बैठे जेंवनको आई सो छिपाइ कही जेंवो कहूं गई है ॥ जेंवत न बोध हारी तबसों विचारी प्रीति भीति रोय मिली गरे रीति कहि दई है ॥ प्रभु ले जिंवाय रांड भांडको निकासि द्वार देकरि किंवार सब पायो आप नई है ॥ बहु दुःख हिये रह्यो कह्यो केसे जात काहू बात सुनी नृपहूने जैसी भांति भई है ॥ ४६१ ॥ चले नीलाचल हीराजाय पहिराय आवे आय घेरि लीने नृप नरनि सिखायके ॥ कही डारिदेवो कै लराई सनमुख लेवो बसन हमारो भूप आज्ञा आय धायके ॥ बोले नेकु रहो मैं अन्हाय पकराय देत हेत मन और जल डाऱ्यो ले दिखायके ॥ वस्तु है तिहारी प्रभु लीजिये उचारी यह बाणी लागी प्यारी उर धारी सुख पायके ॥ ४६२ ॥ एतो घर आय वेतो जलमध्य कूदि छाय अति अकुलाय नेकु खोजहू न पायो है ॥ राजा चलिआयो सब नीर कटवायो कीच देखि मुरझावो दुखसागर अन्हायो है ॥ जगन्नाथदेव आज्ञा दई वाहिसुधि देवो आयके सुनाई नरतनु बिसरायो है ॥ गयो जाय देख्यो उरपर जग मग रह्यो लह्यो सुख नैननिको कापै जात गयो है ॥ ४६३ ॥ राजाहियताप भयो दयो अन्न त्यागि कह्यो आवे जोपै भाग मेरे ब्राह्मण पठाये हैं ॥ धरनो दे रहै कहै नृपके बचन सब तब ह्वै दयालु आपु पुरढिग आये हैं ॥ भूप सुनि आगे आय पाँय लपटाय गयो लयो उरलाय दृग नीरले भिजाये हैं ॥ राजा सर्वसु दियो जियो हरिभक्त कियो हियो सरसायो गुण जाने जिते गाये हैं ॥ ४६४ ॥

छप्पय–भक्तआगमन सुनत सन्मुख जो जन इक

जाई॥सदन आन सतकार सदृश गोविंद बड़ाई॥ पादप्रक्षालन सुहथराय रानी मन सांचे॥ धूप दीप नैवेद्य बहुरि तिन आगे नाचे॥ यह रीति करौलाधीशकी, तन मन धन आगे धरै॥ चतुर्भुजनृपकी भक्तिको, कौन भूप सरवर करै॥ ११४॥

टी०क०–पुरढिग चारों ओर चौकी राखी योजनपै जोजनही आवे तिन्है ल्यावत लिवायकै॥ मालाधारी दास मानि आवै कोऊ द्वार जोपै करै वही रीतिसों सुनाइ छप्पै गायकै॥ सुनि एक भूप भक्त निपट अनूप कथा सबको भंडार खोलि देत बोल्यो धायकै॥ पात्र औ अपात्र यो विचारही जो नाहीं तौपै कहा ऐसी बात दई नेकुमें उड़ायकै॥ ४६५॥ भागवत गावै भक्तभूप एक विप्र तहां बोलिकै सुनावै ऐसी मन जिन ल्याइये॥ पावै आसे कौन हृदे भौनमें प्रवेश करि भरि अनुराग कहा उरमधि आइये॥ करि ले परीक्षा भांड़विमुख पठाय दियो दियो माला तिलक द्वार दास यों सुनाइये॥ गयो गयो भूलि फूल कुलविसतार कियो लियो पहिचानि अब जानि कैसे पाइये॥ ४६६॥ बीते दिन बीस तीस आई वही सीख सुधि कही हरिदास कोऊ आयो यों सुनाइये॥ बोले जू निशंक जावो गावो गुण गोविंदके आये घरमध्य भूप करी जैसी भाईये॥ भक्तिके प्रसंगको न रंग कहूं नेकु जान्यो जान्यो उन उन मानसों परीक्षा मँग वाइये॥ दियो ले भंडार खोलि लियो मन मान्यो दई संपुटमें कौड़ी डारी जारि लपटाइये॥४६७॥ आयो वाही राजापास सभामें प्रकाश कियो लियो धन दियो पाछे सोई ले दिखायो है॥ खोलिकै लपेटा मध्य संपुट निहारी कौड़ी समझि बिचारे हारे मनमें न आयो है॥ बड़ो भागवत विप्र पंडित प्रवीण महानिशि रस लीन जानि आपको बतायो है॥ कन्यो उन मान भक्त मानवो प्रधान

जरी मूँदिकै पठाई ताही गुण समझायो है ॥ ४६८ ॥ राजा रीझि पांव गहे कहे जू बचन नीके तोपै नेकु आप जाय तत्व याको ल्याइये ॥ आये दौरि पाँय लपटाय भूप भाय भरे परे प्रेमसागरमें चरचा चलाइये ॥ चलिबे न देत सुख देत चले लाल मन खोलिकै भंडार दियो लियो न रिझाइये ॥ उभै सूवा सारो कही एक कर धारो मेरे दई अकुलाय लई मानो निधि पाइये ॥ ४६९ ॥ आयो राजसभा बहु बातनि अखारो जहां बोल उठी सारो कृष्ण कहो झारी डारे हैं॥ पूंछे नृप कहो अहो लहो सब याहीसों जु पंछी वा समाज रहे हरि प्राणप्यारे हैं ॥ कोटि कोटि रसना बखानों पै न पावों पार सार सुनि भक्ति आप शीस पाँय धारेहैं ॥ राखो यह खग पग रह्यो तन मन श्याम अति अभिराम रीति मिले औ पधारे हैं ॥ ४७० ॥

छप्पय–सदृश गोपिको प्रेम प्रगट कलियुगहिं दिखायो॥निरअंकुश अति निडर रसिक यश रसना गायो ॥ दुष्टनि दोष विचार मृत्युको उद्यम कीयो ॥ बार न वांको भयो गरल अमृतज्यों पीयो॥भक्तिनिशान बजायकै, काहूतें नाहिन लजी लोकलाजकुलशृंखला, तजि मीरा गिरिधर भजी ॥ ११५ ॥

टी०क०–मेरे तो जनमभूमि झूमिहित नैन लगे पगे गिरिधारी लाल पिताहीके धाममैं ॥ रानाके सगाई भई करी व्याह सामा नई गई मति बूड़ि वारगीले घनश्याममैं ॥ भाँवरैं फिरत मन सांवरे सरूपमांझ तावेरसी आवे चलिबेको पतिग्राममैं ॥ पूंछे पितु मातु पट आभरण लीजिये जू लोचन भरत नीर कहा काम दाममैं ॥ ४७१ ॥ देवो गिरिधारीलाल जो निहाल कियो चाहो और धनमाल सब राखिये उठायकै ॥ बेटी अतिप्यारी प्रीतिरंग बढ़यो

भारी रोय मिली महतारी कही लीजिये लड़ायकै ॥ डोला पधराय दृगदृगसों लगाय चली सुख न समाय चाय प्राणपति पायकै ॥ पहुँची भवन सास देवीपै गवन कियो तिया ओर वर गढ़ जोरो कन्यो भायकै ॥ ४७२ ॥ देवीके पुजायबेको कियो ले उपाय सासु वरपै पुजाय पुनि बधू पूजि भाखिये ॥ बोली जू बिकायो माथ लाल गिरिधारी हाथ और कौन नवै एक वाही अभिलाखिये ॥ बढ़त सुहाग याके पूजे ताते पूजा करो करो जिनि हठ सीस पाँयनिपै राखिये ॥ कही बार बार तुम यही निरधार जानो वही सुकुमार जापै वारि नाखिये ॥ ४७३ ॥ तब तो खिसानी भई अति जरि बरि गई गई पतिहास यह बधू नहीं कामकी ॥ अवहीं जबाब दियो कियो अपमान मेरा आगे क्यों प्रमाण करे भरे श्वास चामकी ॥ राना सुनि कोप कन्यो धन्यो हिये मारिबोई दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति वामकी ॥ लालनि लढ़ावै गुण गायके मल्हावै साधुसंगही सुहावै जिन्है लागी चाह स्वामिकी ॥ ४७४ ॥ आयके ननंद कहै गहे किन चेत भाभी साधनसों हेतमें कलंक लागे भारिये ॥ राना देशपति लाजे बाप कुलरीत जात मानि लीजे बात बेगसंग निरवारिये ॥ लागे प्राण साथ संत पावन अनंत सुख जाको दुःख होय ताको नीके करि टारिये ॥ सुनिकै कटोरा भरि गरल पठाय दियो लियो करि पान रंग चढ्यो यों निहारिये ॥ ४७५ ॥ गरल पठायो सो तो शीस ले चढ़ायो संग त्यागि विष भारी ताकी झार न सँभारो है ॥ रानाने लगायो चर बैठे साधु ढिग ढर तबहीं खबर करि मारो यहै धारी है ॥ राजे गिरिधारी लाल तिनहीसों रंग जाल बोलत हँसत ख्याल कान परी प्यारी है ॥ जाइकै सुनाई भई अति चपलाई आयो लियो तरवारि दै किवार खोलि न्यारी है ॥ ४७६ ॥ जाके संग रंग भीजि करत प्रसंग नाना कहां वह नर गयो बेगि

दे बताइये ॥ आगेही बिराजै कछु तोसों नहिं लाजै अजू देखि सुख साजै आंखैं खोलि दरसाइये ॥ भयोई खिसानो रानो लिख्यो चित्र भीति मानो उलट पयानो कियो नेकु मन आइये ॥ देख्यो हू प्रभाव तोपै भावमैं न भिजो जाय बिना हरि कृपा कहो कैसे करि पाइये ॥ ४७७ ॥ विषयी कुटिल एक भेष धरि साधु लियो कियो यों प्रसंग मोसों अंगसंग कीजिये ॥ आज्ञा मोको दई आप लाल गिरिधारी अहो शीस धरि लई कछु भोजन हू लीजिये ॥ संतनसमाजमें बिछाइ सेज बोलि लियो शंक अब कौनकी निशंक रस पीजिये ॥ श्वेत मुख भयो विषैभाव सब गयो नयो पाँयनिमें आयो मोको भक्तिदान दीजिये ॥४७८॥ रूपकी निकाई भूप अकबर भाई हिये लिये संग तानसेन देखिबको आयो है ॥ निरखि निहाल भयो छबि गिरिधारी लाल पद सुखजाल एक तबहीं चढ़ायो है ॥ वृंदाबन आई जीव गुंसांईसों मिली झिली तियामुख देखि-बेको पन ले छुड़ायो है ॥ देखि कुंज कुंज लाल प्यारी सुखपुंज भरी धरी उरमांझ आय देश बन गायो है ॥ ४७९ ॥ रानाकी मलान मति देखि बसी द्वारावति रति गिरिधारीलाल नित्यही लड़ाइये ॥ लागी चटपटी भूमभक्तिको स्वरूप जानि अतिदुख मानि विप्रश्रेणी ले पठाइये ॥ बेगि लेके आवो मोको प्राण दे जिवावो अहो गये द्वार धरनो दे विनती सुनाइये ॥ सुनि बिदा होन गई राय रणछोरजूपै छांड़ो राखो होन लीन भई नहीं पाइये ॥ ४८० ॥

छप्पय-श्रीकृष्णदास उपदेश परम तत्व परचो पायो॥निरगुणसगुण निरूप तिमिर अज्ञान नशायो॥ काछ वाछ निकलंक मनो गांगेय युधिष्ठिर॥हरिपूजा प्रह्लाद धर्मध्वज धारी जगपर ॥ पृथ्वीराज परचो प्रगट, तन शंखचक्रमंडित कियो ॥ अबिर अछित कूरनको, द्वारकानाथ दर्शन दियो ॥ ११६ ॥

टी०क०-पृथ्वीराजा चल्यो द्वारिका श्रीस्वामीसंग अति रसरंग भऱ्यो आज्ञा प्रभु पाई है ॥ सुनिकै दिवान दुःख मानि निशि कान लग्यो कही पग्यो साधुसेवा भक्ति पुर छाई है ॥ देखिये निहारिकै विचार कीजै इच्छा जोई लीजै नहीं साथ जावो बात ले दुराई है ॥ आयो भोर भूप हाथ जोरि करि ठाढ़ो रह्यो कह्यो रहो देशसों निदेशनि सुहाई है ॥ ४८१॥ द्वारावती नाथ देखि गोमतीमें स्नान करो धरो भुज छाप आप मन अभिलाषिये ॥ चिंता जिन कीजे तिनो बात यहां लीजे अजू दीजे जोई आज्ञा सोई शिर धर राषिये ॥ आय पहुँचाय दूर नैन जलपूर बहे देह उर भारी कहा संग रस चाखिये ॥ बीते दिन दोइ निशि रहे हुते सोइ भोइ गई भक्तिगिरा आय बानी मधु भाषिये ॥ ४८२ ॥ अहो पृथ्विराज कहो स्वामीहीसी बानी लही आयो उठि दौरि वाही ठौर प्रभु देखेहैं ॥ घूम्यो कह्यो कान धरो गोमतीमें स्नान करो सुनिकै अन्हायो पुनि बैन कहूँ पेखे हैं ॥ शंखचक्र आदि छाप तन सब व्याप गई भई यों अबार रानी आय अवरेखे है ॥४८३॥ भयो जब भोर पुर बड़ो भक्तिसोर पऱ्यो कऱ्यो आनि दर्शनसु भई भीर भारी है ॥ आये बहु संत औ महंत बड़े बड़े धाये अति सुख पाये देहरचना निहारी है ॥ नाना भेट आवे हित महिमा सुनावे राजा सुनत लजावे जानि कृपा वनवारी है ॥ मंदिर करायो प्रभुरूप पधरायो सब जग यश गायो कथा मोको लगी प्यारी है॥४८४॥ विप्र दृगही सो अनाथ बैजनाथद्वार पऱ्यो चक्षु चाहै मास केतिक विहाने हैं॥आज्ञा वार दोयो चारि भई ऐन फेरि होहि याको हठ सार देखि शिव पिघलाने हैं ॥ पृथीराज अंगके अँगोछासे अँगोछो जाय आयकै सुनाय द्विज गौरव डाराने है ॥ नयो मँगवाय तन छाइ दियो छायो नैन खुले चैन भयो जन छाइ लखि सरसाने हैं ॥ ४८५ ॥

छप्पय-लघु मथुरामें रता भक्त अति जैमल पोषै ॥ टोढे भजन निधान रामचंद्र हरिजन तोषै ॥ अभैराम

एक रस नेम नीवाके भारी ॥ कर्मशील सुरतान भगवान वीर भूपति व्रतधारी ॥ ईश्वर अक्षयराज रायमल कान्हर, मधुकर नृप सर्वसु दियो ॥ भक्तनको आदर अधिक, राजवंशमें इन कियो ॥११७॥

अथ जैमलजूका वर्णन।

क०टी०—मेरतें वसत भूप भक्तिको सरूप जानि जैमल अनूप जाकी कथा कहि आये हैं ॥ करी साधुसेवा रीति प्रीतिकी प्रतीति भई नई एक सुनो हरि कैसेके लहाये हैं ॥ नीच मानि मंदिरसों सुंदर विचारि बात छातपर बँगलाके चित्र ले बनाये है ॥ बिविध बिछौना सेज राजत उढ़ौना पानदान धरि सोना जरी परदा सिवाये हैं॥४८६॥ ताकी दारु सीढी करि रचना उतारि धरे भरे दूर चौकी आप भाव स्वच्छताई है ॥ मानसी विचारे लाल सेज पग धारे पान खात ले उघारि डारे पौढ़े सुखदाई है ॥ तियाहू न भेद जाने सोन सैनीधरी वाने देखेको किशोर सोयो फिरि भोर आई है ॥ पतिको सुनाई भाई अति मन भाई वाको खीजि डरपाइ जानि भाग अधिकाई है॥४८७॥

अथ मधुकरसाहजूका वर्णन।

कबित्त—मधुकरसाह नाम कियो ले सफल जाते भेष गुण सार ग्रह तजत असार है ॥ ओड़छेको भूप भक्तभूप सुखरूप भयो लयो पन भारी जाके और ना बिचार है ॥ कंठी धरि आवे कोय धोय पग पीवे सदा भाई दुखी खर धर डान्यो माल भार है ॥ पाँय परिछाल कही आज जू निहाल किये हिये द्रवे दुष्ट पांव गहे दृग धार है ॥ ४८८ ॥

छप्पय—रैना हरिगुण रामभजन भागवत उजागर॥ प्रेमी परमकिशोर उदार रजत रतनाकर ॥हरिदासनके दास दशा ऊंची ध्वजधारी ॥ निरभै अनन्य

उदार रसिक जस रसना भारी ॥ दशधा संपति संत बल, सदा रहत प्रफुलित वदन ॥ खेमाल रतन राठौरके, अटल भक्ति आई सदन ॥ ११८॥ अजिर धर्म आचऱ्यो लोकहित मनो नीलकंठ॥ निंदकजन अनराय कहा महिमा जानैगो भूशठ ॥ विदित गांधर्वी व्याह कियो दुष्यंत प्रवानै॥ भरत पुत्र भागवत सुमुख शुकदेव बखानै ॥ और भूपकोउ छ्वै सकै, दृष्टिजाय नाहिंन धरी ॥ कलियुग भक्ति कररी कमान, रामरेणुकै ऋजुकरी ॥ ११९ ॥

टी०क०-पून्योमें प्रकाशभयो शरदसमाज रास विविध विलास नृत्य राग रंग भारी है ॥ बैठे रस भीजि दोउ बोल्यो राम राजा रीझि भेंट कहा कीजे विप्र कहो जोई प्यारी है ॥ प्यारको विचारे न निहारे कहूं नेकु छटा सुतारूप घटा अनुरूप सेवा जारी है ॥ रही सभा सोचि आप जायके लिवाय ल्याय भेखसों दिवाय फेर संपति ले बारी है ॥ ४८९ ॥

छप्पय-आरजको उपदेश सुतो उर नीके धारयो ॥ नवधा दशधा प्रीति आन धर्म सबै बिसारयो॥अच्युत कुल अनुराग प्रगट पुरुषारथ जान्यो॥ सारासार विवेक बात तीनो मतु मान्यो॥दासतन अनन्यउदारता, संतन मुख राजा कही॥हरिगुरुहरिदासनसों, रामधरण सांची रही ॥ १२० ॥

टी०क०-आये मधुपुरी राजा राम अभिराम दोऊ दाम पै न राख्यो साधु विप्र भुगतायो है ॥ ऐसे ए उदार राह खरच संभार नाहिं चालिबो

बिचार भयो चूरा दीठि आये हैं ॥ मुद्रा शत पांच खोलि मोल तिया आगे धरि दीजे बेंचि गए नाभाकर पहिराये हैं ॥ पतिको बुलाय कही नीके देखि रीझे भीजे काढ़िके फरज पुर आप दे पठाये हैं ॥ ४९० ॥

छप्पय–पाँयन नुपुर बांधि नृत्य नगधरहित नाच्यो॥ रामकलश मन रली शीस ताते नहिं बांच्यो ॥ बाणी विमल उदार भक्ति महिमा विस्तारी ॥ प्रेमपुंज शुठि शील विनय संतन रुचिकारी ॥ सृष्टि सराहै रामयश लघु वैश लछन आरजालियो ॥ अभिलाष उभै खेमालको, ते किशोर पूरा कियो ॥ १२१ ॥

टी०क०–खेमल रतन तन त्याग समै अश्रुपात बात सुत पूँछे अजू नीके खोलि दीजिये ॥ कीजे पुण्य दान बहु संपति अमान भरी धरी हिये दोय सोय कही सुनि लीजिये ॥ बिबिध बड़ाईमें समाई मति भई पै न नितही बिचार अब मनपर खीजिये ॥ नीर भरि घट शीश धरिकै न ल्यायो और नूपुरन बांधि नृत्य कियो नाहि छीजिये॥४९१॥ रहे चुप चाप सबै जानी काम आपहीको बोल्यो यों किशोर नाती आज्ञा मोको दीजिये ॥ यही नित करो नहिं टरो जौलों जीवे तन मनमैं हुलास उठि छाती लाय लीजिये ॥ बहु सुख पाय पाय वैसेही निवाय पन माय गुण लाल प्यारी अति भीजिये ॥ भक्ति बिसतार कियो बेस लघु भीज्यो हियो दियो सनमान संत सभा सब रीझिये४९२

छप्पय–हरीदास हरिभक्त भक्तिमंदिरको कलसो॥ भजनभाव परिपक्कहृदय भागीरथिजलसों॥त्रिधाभांति अनन्य रामकी कीर्ति निवाही ॥ हरिगुरुहरिबल भांति नहीं सेवा दृढ़ साही ॥ पूर्ण इंदु प्रमुदित उदधि, त्यों दास देखि बाढ़े रली॥खेमालरतन राठौरके,सु-

फल बेलि मीठी फली ॥ १२२ ॥ गायो भक्तिप्रताप स-बहि दासत्व दृढ़ायो राधावल्लभ भजन अनन्यता वढ़ायो ॥ मुरलीधरकी छाप कबित अतिही निर्दूषण ॥ भक्तनकी अंघ्रिरेणु बहै धारी शिरभूषण ॥ सतसंग महा आनंदमें, प्रेम रहत भीज्यो हियो ॥ हरिबंशच-रण बल चतुर्भुज, गौड़देश तीरथ कियो ॥ १२३ ॥

टी० क०–गोडवाने देश भक्तिलेशहू न देख्यो कहूं मानसको मारि इष्टदेवको चढ़ायो है ॥ तहां जाय देवताको मंत्र ले सुनायो कान लियो उन मानि गांव सुपन सुनायो है ॥ स्वामी चतुर्भुजजूके बेगि तुम दास होहु नातो होहु नाश सब गांव भज्यो आयो है ॥ ऐसे शिष्य किये माला कंठी पाय जिये पांव लिये मन दिये औ अनंत सुख पायो है ॥ ४९३ ॥ भोग ले लगावै नाना संतन लड़ावै कथा भाग-वत गावै भाव भक्ति विसतारिये ॥ भज्यो धन लैकै कोऊ धनी पाछे पर्‍यो सोऊ आनिकै देवायो बैठि रह्यो न निहारिये ॥ निकसी पुराण-बात करे नयो गात दीक्षा शिक्षा सुनि शिष्य भयो गयो यों पुकारि ये ॥ कहे या जनममैं न लियो कछु दियो फारो हाथ ले उबार्‍यो प्रभु-रीति लागी प्यारिये ॥ ४९४ ॥ राजा झूंठि मानि कह्यो करो बिन प्राण याको साधु ये बिराजमान ले कलंक दियो है ॥ चले ठौर मारिबेको धा-रिबेको सकें कैसे नैनभरि आये नीर बोल्यो धन लियो है ॥ कहे नृप साँचो हैकै झूँठो जिन हूजे संतमहिमा अनंत कही स्वामी ऐसो कियो है ॥ भूप सुनि आयो उपदेश मन भायो शिष्य भयो नयो तन पायो भी-जि गयो हियो है ॥ ४९५ ॥ पकि रह्यो खेत संत आये कर तोरि लेत जिते रखवारे मुख सेत सोर कियो है ॥ कह्यो स्वामी नाम सुन्यो कही बड़ो काम भयो यह तो हमारो सोई आप सुनि लियो है ॥ लेकै मिष्टान्न आप

सुमुख बखान कीनो लीनो अपनाय आजु भीज्यो मेरो हियो है ॥ ले गयो लिवाय नाना भोजन कराय भक्तिचरचा चलाय चाय हित रस पियो है ॥ ४९६ ॥

छप्पय–शक्र कोप शुभ चरित्र प्रसिद्ध पुनि पंचाध्याई॥ कृष्णरुक्मिणीकेलि रुचिर भोजनविधि गाई॥ गिरिराज धरनकी छाप गिरा जलधरज्यों गाजै ॥ संत शिखंडी खंड हृदय आनंदके काजै ॥ जाड़ हरन जग जाड़ता, कृष्णदास देही धरी॥चालककी चर चरी चहूं दिशि, उदधि अंतलों अनुसरी ॥ १२४॥ गोपीनाथपदराग भोग छप्पन्न भुजाये॥ पृथु पद्धति अनुसार देव दंपति दुलराये॥भगवत भक्त समान ठौर द्वैको बल गायो॥कबित्त सूरसों मिलित भेद कछु जात न पायो॥ जनम करम लीला जुगत, रहसि भक्ति भेदी नरम ॥ विमलानंद प्रबोध बंश, संतदास सीवा धरम॥१२५॥

टी०क०–बसत निमाई ग्राम श्यामसों लगाई मति ऐसी मन आई भोग छप्पन लगाये हैं ॥ प्रीतिकी सचाई यह जगमें दिखाई सेवा जगन्नाथ देव आप रुचिसों ले पाये हैं ॥ राजाको सुपन दियो नाम ले प्रगट कियो संतहीके गृहमें तो जेंवों यों रिझाये हैं ॥ भक्तिके आधीन सब जानत प्रवीण जन ऐसे हैं रंगीन लाल ठौर ठौर गाये हैं ॥ ४९७ ॥

छप्पय–गान काव्य गुणराशि सुहृद सहचरि अवतारी ॥ राधा कृष्ण उपास्य रहसि सुखके अधिकारी॥ नव रस मुख्य शृंगार विविध भांतिन करि गायो ॥ वदन उचारत बेर सहस पाँयनि व्है धायो॥अंगीका-

रकी अवधि यह, जो आख्या भ्राताजमल॥ श्रीमदन मोहन सूरदासकी, नामश्रृंखला जुरी अटल॥१२६॥

टी०क०–सूरदास नाम नैनकंज अभिराम फूले झूले रंग पीके नीके जीके और जाये हैं॥भयो सो अमीन यों संडीलेको नवीन रीति प्रीति गुरु देखि दाम बीसगुने लायेहैं ॥ कही पुवा पावे आप मदनगोपाल लाल परे प्रेमख्याल लाद छकरा पठाये हे ॥ आयो निशि भये श्याम कियो आज्ञा योग लेके अबहीं लगावो भोग जागे फिरि पायेहैं ॥ ॥४९८॥ पद ले बनायो भक्तिरूप दरशायो दूरि संतनिकी पानहीको रक्षक कहाऊं में काहू सीखि लियो साधु लियो चाहे परचेको आये द्वार मंदिरके खोलि कही आऊं मैं रह्यो बैठि जाइ जूजी हाथमें उठाइ लीनी पूरी आश मेरी अब निशिदिन गाऊं मैं ॥ भीतर बुलावैं जू गुसाई बार दोई चारि सेवा सौंपि सारी कही जनपद ध्याऊं मैं ॥४९९॥ पृथ्वीपतिसंपति ले साधुनि खवाइ दई भई नहीं शंक यों निशंक रंग पागे हैं ॥ आये सो खजानो लेन मानों यह बात अहो पाथर ले भरे आप आधी निशि भागे हैं ॥ रुक्का लिखि डारे दाम गटके ए संत-नने याते हम सबके हैं चले जब जागे हैं ॥ पहुँचे हजूर भूप खोलिके संदूक देखे पेखे आंक कागदमें रीझे अनुरागे हैं ॥ ॥ ५०० ॥ लेनको पठाये कही निपट रिझाये हमे मनमें न ल्याये लिखि बनत न डाऱ्यो है ॥ टोडर दिवान कह्यो धनको विनाश कियो ल्यावो रे पकरि मूढ़ फेरिके सँभाऱ्यो है ॥ ले गये हजूर नृप बोल्यो मोसों दूरि राखो ऐसे महाक्रूर सौंपि दुष्ट कष्ट धाऱ्यो है ॥ दोहा लिखि दीनो अकबर देखि रीझि लीनों जावो वाही ठौर तोपै द्रव्य सब वाऱ्यो है ॥ ५०१ ॥

॥ दोहा ॥

इक तम अँधियारो करै, शून्य दई पुनि ताहि ॥

दशतमते रक्षा करो, दिनमणि अकबर शाहि ॥ १ ॥

कबित्त—आयो वृंदावन मन माधुरीमें भीजि रह्यो कह्यो जोई पद सुन्यो रूपरसरास है ॥ जा दिन प्रगट भयो गयो शत योजनपै जनपै सुनत भेद बाढ़ी जग प्यास है ॥ सूर द्विज द्विज निज महल टहल पाय चहल पहल हिये युगल प्रकाश है ॥ मदनमोहनजू हैं इष्ट इष्ट महाप्रभु अचरज कहा कृपादृष्टि अनायास है ॥ ५०२ ॥

छप्पय—मारगजात अकेल गान रसना जु उच्चारे ॥ तालमृदंगी वृक्ष रीझि अंबर तहँ डारे ॥ गोपनारि अनुसारि गिरा गद्गद आवेशा ॥ जगप्रपंचते दूरि अजापरसे नहिं लेशा ॥ भगवान रीति अनुरागकी, संतसाखि मेली मही ॥ कात्यायनीके प्रेमकी, बात जाय कापै कही ॥१२७॥विदित बलोदा गांव देश मुरधर सब जानै॥महामहोछो मध्य संत परिषद परवानै॥ पगन घुंघरू बांधि रामको चरित दिखायो ॥ देशी शारंगपाणि हंस तासंग पठायो॥उपमा और न जगतमें. पृथा विना नाहिन वियो ॥ कृष्णविरह कुंतीशरीर, त्यों मुरारि तन त्यागियो ॥ १२८ ॥

टी०क०—श्रीमुरारिदास रहे राजगुरु भक्तराज आवत सनान किये कान धुनि कीजिये ॥ जातको चमार करे सेवा सो उच्चारि कहे प्रभु चरणामृतको पात्र सोई लीजिये ॥ गये घरमाँझ वाको देखि डरि काँपि उठ्यो ल्यावो देवो हमै अहो पान करि जीजिये ॥ कही मैंतो न्यून तुच्छ बोले हमहूते स्वच्छ जाने कोऊ नाहिं तुम मेरी मति भीजिये ॥ ५०३ ॥ बहे दृग नीर कहै मेरे बड़ी पीर भई तुम मतिधीर

नहीं मेरी योग्यताई है ॥ लियोई निपट हठ बड़े पट्ठ साधुतामें श्याम प्यारी भक्ति जाति पाँति ले बहाई है ॥ फैलि गई गांव वाको नाव ले चवाव करे भरे नृप कान सुनि वाहू न सुहाई है ॥ आयो प्रभु देखिबेको गयो वहै रंग उठि जान्यो सो प्रसंग सुन्यो वही बात छाई है ॥ ५०४ ॥ गये सब त्यागि प्रभु सेवाहीसों राग जिन्हे नृप दुखपागि गयो सुनि यह बात है ॥ होत हो समाज सदा भूपके बरसमांझ दरश न काहू होत मान्यो उतपात है ॥ चलेई लिवाइबेको जहां श्रीमुरारिदास करी हि साष्टांग राशि नैन अश्रुपात है ॥ मुखहू न देखे याको विमुखके लेखे अहो पेखे लोग कहे यहै गुरु शिष्य ख्यात है ॥ ॥ ५०५ ॥ ठाढ़ो हाथ जोरि मति दीनतामें बोरि कीजे दंड मोपै कोरि यों निहोरि मुख भाखिये ॥ घटती न मेरी आप कृपाहीकी घटती है बढ़तीसी करी ताते न्यूनताई राखिये ॥ सुनिकै प्रसन्न भये कहे ले प्रसंग नये बालमीक आदि दे दे नानाविधि साखिये ॥ आये निजगांव नांव सुनि सब साधु धाये भयोई समाज सो वै देखि अभिलाखिये ॥ ५०६ ॥ आये बहु गुणीजन नृत्यगान छाई धुनि तौ पै संतसभामन स्वामी गुण देखिये ॥ जानिकै प्रवीण उठे नूपुर नवीन बांधि सप्तसुर तीन ग्राम लीन भये पेखिये ॥ गायो रघुनाथजूको बनको गमनसमै तासँग गमन प्राण चित्रसम लेखिये ॥ भयो दुखराशि कहा पैये श्रीमुरारिदास गए रामपास एतो हिये अवरेखिये ॥ ५०७ ॥

छप्पय—त्रेता काव्यनिबंध करी शतकोटि रामायण ॥ इक अक्षर उद्धरे ब्रह्महत्यादिपरायण ॥ अब भक्तन सुख देन बहुरि लीला विस्तारी॥ रामचरणरसमत्त रटत अहनिशि व्रतधारी ॥ संसार पारके पारको,

सुगम रूप नौका लयो ॥ कलि कुटिलजीवनिस्तार-हित, वाल्मीकि तुलसी भयो ॥ १२९ ॥

टी॰क॰–तियासों सनेह बिन पूंछे पितागेह गई भूली सुधि देह भजे वाही ठौर आये हैं ॥ बधू अतिलाज भई रिससों निकसि गई प्रीति राम नई तन हाड़ चाम छाये हैं ॥ सुनी जब बात मनो ह्वै गयो प्रभात वह पाछे पछितात तजि काशीपुरी धाये हैं ॥ कियो तहां वास प्रभुसेवा ले प्रकाश कीनो लीनो दृढ़ भाव नैन रूपके पियासे हैं ॥ ५०८ ॥ शौचजल शेष पाये भूतहू विशेष कोऊ बोल्यो सुख मानि हनुमानजू बतायो है ॥ रामायणकथा सो रसायन है काननको आवत प्रथम पाछे जात घृणा छाये हैं ॥ जाय पहिंचानि संग चले उर आनि आये बनमध्य जानि धाय पाँय लपटाये हैं ॥ करें सीतकार कही सकोगे न टारि मै तो जाने रस-सार रूप धन्यो जैसे गाये हैं ॥ ५०९ ॥ माँगि लीजे वर कहि दीजे रामभूप अब अतिही अनूप निशि नैन अभिलाषिये ॥ कियो ले संकेत वाही दिनहीसों लाग्यो हेत आई सोई समै चेत कस छबि चाखिये ॥ आये रघुनाथ साथ लक्ष्मण चढ़े घोड़े पट रंग बोरे हरे कैसे मन राखिये ॥ पाछे हनुमान आय बोले देखे प्राणप्यारे नेकु न निहारे मै तो भले फेरि भाखिये ॥५१०॥ हत्या करि विप्र एक तीरथ करत आयो कहै मुख राम भिक्षा डारिये हत्यारेको॥सुनि अभि-राम नाम धाममैं बुलाय लियो दियो ले प्रसाद कियो शुद्ध गायो प्यारेको ॥ भई द्विजसभा कही बोलिकै पठाये आप कैसे गयो पाप संग लेके जैये न्यारेको ॥ पोथी तुम बांचो हिय सार नहीं सांचो अजू ताते मत काचो दूर करे न अँधारेको ॥ ५११ ॥ देखी पोथी बांचि नाममहिमाहूं कही सांच तौपै हत्या करे कैसे तैर कहि दीजिये ॥ आवे जो प्रतीति कहो कही याके हाथ जेंवै शिवजूको बैल तब पंग-

तिमें लीजिये ॥ थारमै प्रसाद दियो चले जहां पन कियो बोले आप नामके प्रताप मति भीजिये ॥ जैसी तुम जानो तैसी कैसेके बखानो अहो सुनिकै प्रसन्न पायो जैजैधुनि रीजिये ॥ ५१२ ॥ आये निशि चोर चोरी करन हरन धन देखे श्याम धनु हाथ चाप शर लिये हैं ॥ जब जब आवैं बान साधि डरपावैं वे तौ अति मड़रावैं तौपै बली दूरि किये हैं ॥ भोर आय पूँछे अजी सांवरो किशोर कौन सुनि करि मौन रहे आसू डारि दिये हैं ॥ दे सबै लुटाय जानी चौकी राम-राय दई लई उन्हों दीक्षा शिक्षा शुद्ध भये हिये हैं ॥ ५१३ ॥ कियो तन विप्र त्याग लागी चली संग तिया दूरिहीते देखि कियो चरण प्रणाम है ॥ बोले यों सुहागवती मर्‍यो पति हौंहूं सती अब तौ निकसि गई ज्याऊं सेवो राम है ॥ बोलिकै कुटुंब कही जोपै भक्ति करो सही गही तब बात जीव दियो अभिराम है ॥ भये सब साधु व्याधि मेटि ले विमुखताकी जाकी बास रहै तौ न सूझै श्यामधाम है ॥ ॥५१४॥ दिल्लीपति बादशाह अहदी पठायो लेन ताको सो सुनायो सुवे विप्र ज्यायो जानिये ॥ देखिवेको चाहै नीके सुखसों निवाहै आय कही बहु विनै गही चले मन आनिये ॥ पहुँचे नृपतिपास आदर प्रकाश कियो दियो उच्च आसन ले बोल्यो मृदु बानिये ॥ दीजे करा-मात जग ख्यात सब मात किये कही झूंठ बात एक राम पहिचानिये ॥ ५१५ ॥ देखें राम कैसो कही कैद किये किये हिये हूजिये कृपाल हनुमानजू दयाल हो ॥ ताही समै फैलि गये कोटि कोटि कपि नये लोंचें तन खैंचें चीर भयो यों विहाल हो ॥ फोरें कोट मारें चोट किये डारें लोट पोट लीजे कौन ओट जाय मानो प्रलैकाल हो ॥ भई तब आखें दुखसागरको चाखें अब वेई हमे राखें भाखें वारो धन माल हो ॥ ५१६ ॥ आय पाँय लिये तुम दिये हम प्रान पावें आपु समुझावें

करामात नेकु लीजिये ॥ लाज दबि गयो नृप तब राखि लियो कह्यो भयो घर रामजूको बेगि छोड़ि दीजिये ॥ सुनि तजि दियो और करचो लेके कोट नयो अबहूं न रहै कोऊ वामे तन छीजिये ॥ काशी जाय वृंदावन आय मिले नाभाजूसों सुन्यो हो कबित्त निज रीझ मति भीजिये ॥ ५१७ ॥ मदनगोपालजूको दर्शन करि कही सही राम इष्ट मेरे इष्टभाव पागो है ॥ वैसोई स्वरूप कियो दियो ले दिखाय रूप मनअनुरूप छबि देखि नीकी लागी है ॥ काह कही कृष्णअवतारीजू प्रशंस महा रामअंश सुनि बोले मति अनुरागी है ॥ दशरथसुत जानो सुंदर अनूप मानो ईशता बताई रति बीशगुनी जागी है ॥ ५१८ ॥

छप्पय–करुणावीर शृंगार आदि उज्ज्वलरसगायो॥ परउपकारक धीर कबित्त कविजन मन भायो॥कौशलेयपदकमल अनन्यदासव्रतलीनो ॥ जानकीजीवनसुयश रहत निशि दिन रँगभीनो॥रामायणनाटककीरहसि उक्ति भाषाधरी॥गोप्यकेलि रघुनाथकी,मानदास परगट करी॥ १३० ॥ अर्थ धर्मकाममोक्षभक्ति अनपायीदाता॥हस्तामलश्रुति ज्ञान सबहीशास्त्रनके ज्ञाता ॥ परिचर्या व्रजराज कुँवरके मनको कर्षे ॥ दर्शन परमपुनीत सभाजन अमृतवर्षे ॥ विठ्ठलेशनंदन सुभाव,जग कोऊ नहीं तासमान॥श्रीवल्लभजूके वंशमें सुरतरु गिरिधर भ्राजमान ॥ १३१ ॥ रत्ननाम सुत सुबुद्धि प्रेमपुलकित आनन्दभर॥ उत्तम भूषण भोग भजन सुठि सुंदर ताता ॥भ्राता मदन मुकुंद मेघवाई तिहि माता॥ अहमदाबाद आधीन अति,अच्युत गोत्र सेवा सुघर॥विठ्ठलवंश कल्याणके,शिष्य सुनो सद्गुण

निकर ॥१३२॥ उदधि सदा अक्षोभ सहजसुंदर मति-भाषी ॥ गुरुवर्तन गिरिराज भल्लपन सब जग साखी॥ विठ्ठलेशकी भक्ति भयो बेला दृढ़ ताके॥भगवततेज-प्रताप नमत नरवर पद जाके ॥ निर्व्यलीक आशय उदार, भजन पुंज गिरिधरनिरति ॥ श्रीवल्लभजूके वंशमें, गुणनिधि गोकुलनाथ अति ॥ १३३ ॥

टी०क०–आयो कोउ शिष्य होन ल्यायो भेंट लाखनकी भाषनकी चातुरीपै मेरी मति रीझिये ॥ कहूं है सनेह तेरो जाके मिले विना देह व्याकुलता हाय जोपै तोपै दीक्षा दीजिये ॥ बोल्यो अजू मेरो किहू वस्तुसों न हेतु नेकु नेति नेति कही हम गुरु ढूंढ़ि लीजिये ॥ प्रेमहीकी बात इहां करही पलट जात गयो दुख गात कहो कैसे रंग भीजिये ॥ ५१९ ॥ कान्हा हो हलालखोर घोरि दियो मन लेके श्यामरस सागरमें नागर रसाल है ॥ निशिके सुपनमाँझ निपुण श्रीनाथजूने आज्ञा दई भीति नई भई ओट साल है ॥ गोकुलके नाथजूको बेगि दे जिताइ दीजै कीजै याहि दूरि छबि पूरि देखो ख्याल है ॥ भोर जो विचारे नाहिं धीरजको धारे उहां जाउ कोउ मारे पैंड़े पर्‍यो यह लाल है ॥ ५२० ॥ ऐसे दिन तीन आज्ञा देत वै प्रवीण नाथ हाथ कहा मेरे विन गये नहिं सरेगो ॥ गयो द्वार द्वारपाल बोले जू विचार एक दीजै सुधि कान सुनि खीझै बात करेगो ॥ काहूने सुनाइ दई लीजिये बुलाय अहो कहो और दूर करें करें दूरि ढरेगो ॥ जाय वही कही लही आपनि पिछानि मिलै सुन्यो मेरो नाम श्याम कह्यो नहीं टरेगो ॥ ५२१ ॥

छप्पय–बात कबित्त बड़ चतुर चोख चौकस अति जाने ॥ सारासारविवेक परमहंसनपर वाने॥सदाचार संतोष भूत सबको हितकारी॥आरजगुण तन अमित

भक्ति दशधाव्रतधारी ॥ दर्शन पुनीत आशय उदार, आलाप रुचिर सुखधामको ॥ रसिक रँगीलो भजन पुंज, सुठि बनवारी श्यामको ॥ १३४ ॥ नाम नारायण श्रमि वंश नवलाज्जु उजागर ॥ भक्तनकी अति भीर भक्ति दशधाको आगर ॥ आगम निगम पुराणसार शास्त्रनसब देखे ॥ सुरगुरु शुक सनकादिक व्यास नारदज्जु विशेषे ॥ सुधबोधमुख सुरधुनि, यशबितान जगमें तन्यो ॥ भागवत भलीविधि कथनको धन्य जननि एकै जन्यो ॥ ॥ १३५ ॥ काम क्रोध मद मोह लोभकी लहरन लागी ॥ सूरजज्यों जल ग्रहै बहुरि ताहीज्यों त्यागी ॥ सुंदर शीलस्वभाव सदा संतनसेवाव्रत ॥ गुरु धरम निकष निरबह्यो विश्वमें विदित बड़ो भृत ॥ अल्हराम रावल कृपा, आदिअंत धुकती धरी ॥ कलिकाल कठिन जग जीतियो, राघवकी पूरी परी ॥ १३६ ॥ अच्युतकुलसों दोष सुपनेहू उर नाहिं आने ॥ तिलक दाम अनुराग सबन गुरुजन करि माने ॥ सदनमांहि वैराग्य विदेहनकीसी भांती ॥ रामचरणमकरंद रहत, मनसा मदमाती ॥ योगानंद उजागरबंश करि, निशिदिन हरिगुणगावनो ॥ हरिदास भलप्पन भजनबल, बावनज्यों बढ़्यो बावनो ॥ १३७ ॥ ज्यों चंदनको पवन नींब पुनि चंदन करई ॥ बहुत काल तमनिविड़उदय दीपकजिमि रहई ॥ श्रीभट पुनि हरिव्यास संतमारगअनुसरई ॥ कथाकीरतननेम

रसना हरिगुण उच्चरई ॥ गोविंदभक्ति गदरोगगति, तिलक दाम सद्वैद्य हद ॥ जंगली देशके लोग सब, परशुराम किय पारषद ॥ १३८ ॥

टी०क०-राजसी महंत देखि गयो कोऊ अंत लेन बोल्योजू अनंत हरि सगे माया टारिये ॥ चले उठि संग वाके पहिर कोपीन अंग बैठे गिरिकंदरामें लागी ठौर प्यारिये ॥ तहां बनिजारो आइ संपति चढ़ाई दई और संग पालकी हू महिमा निहारिये ॥ जाय लपटायो पाय भाव मैं न जान्यो कछु आन्यो उरमाँझ आवे प्राण वारि डारिये ॥ ५२२ ॥

छप्पय-सज्जन सुहृद सुशील वचन आरज प्रतिपालै ॥ निर्मत्सर निष्काम कृपा करुणाको आलै॥ अनन्य भजन दृढ करन धऱ्यो बपु भक्तनिकाजे ॥ परम धर्मको सेतु विदित वृंदाबन गाजे॥भागवत सुधा वरषै बदन, काहूको नाहिन सुखद॥ गुणनिकर गदाधर भट्ट अति, सबहिनको लागे सुखद ॥ १३९ ॥

टी०क०-श्यामरंग रंगी पद सुनिकै गुसांईजीव पत्र दे पठाये उभै साधु बेगि धाये हैं ॥ रैनी विनु रंग कैसे चढ्यो अति शोच ब थो कागदमें प्रेम मढ्यो तहां लेके आयेहैं ॥ पूर ढिग कूप तहां बैठे रसरूप लगे पूंछिबेको तिनहींसों नांव ले बताये हैं ॥ रहो कौन ठौर शिरमौर वृंदावनधाम नाम सुनि मूरछा ह्वै गिरे प्राणपाये हैं ॥ ५२३ ॥ काहू कही भट्ट श्रीगदाधरजू एही जानो मानो उहि पाती चाह फेरिकै जिंवाए हैं ॥ दियो पत्र हाथ लियो शीससों लगाय चाय बाँचतही चले बेगि वृंदावन आए हैं ॥ मिले श्रीगुसाईंजीसों आंखें भरि आईं नीर सुधि न शरीर धरिधीर वहि गाए हैं ॥ पढ़े सब ग्रंथ संग नाना कृष्ण कथा रंग रसकी उमंग अंग अंग भाव छाए हैं ॥ ५२४ ॥ नाम

है कल्याणसिंह जाति रजपूतपूत बैठो आयकथासो अभूत रंग लाग्यो है ॥ निपट निकट बास धौरेरा प्रकाश गांव हास परिहास तज्यो तियादुख पाग्यौ है ॥ जानि भट्ट संगसों अनंगवास दूरि भई करो लेके नई आनि हिये काम जाग्यो है ॥ माँगति फिरति हती युवती औ गर्भवती कही ले रुपैय्या बीस नेकु कहो राग्यो है ॥५२५॥ गदाधर-भट्टजूकी कथामें प्रकाश कहो अहो कृपा करो अब मेरी सुधि लीजिये ॥ दई लौंड़ी संग लोभरंग चित भंग किये दिये ले बताय बोली मेरो काम कीजिये ॥ बोले आप बैठिये जू जाय नित करो हिये पाप नहिं मेरो गई दरशन दीजिये ॥ श्रोता दुख पाय भाखे झूँठी याहि मारि नाखें सांची कहि राखें सुनि तन मन छीजिये ॥ ५२६ ॥ फाटि-जाय भूमि तौ समाय जैय्ये श्रोता कहै बहै दृग नीर ह्वै अधीर सुधि गई है ॥ राधिकाबल्लभदास प्रगट प्रकाश भास भयो दुखराशि सुनि सो बुलाइ लई है ॥ सांच कहि दीजै नहीं अभी जीव लीजै डरि सबै कहि दियो सुख लियो संज्ञा भई है ॥ काढ़ि तरवार तिया मारिबे क-ल्याण गयो दयो परबोध हमें करी दया नई है ॥ ५२७ ॥ रहे काहू देशमें महंत आये कथामांझ आगे ले बैठाये देखें सबै साधु भीजे हैं ॥ मेरे अश्रुपात क्यों न होत सोचसोत परे करे ले उपाय दे लगाय मिर्च खीझे हैं ॥ संत एक जानिकै जताइ दई भट्टजूको गये उठि सब जब मिलि अतिरीझे हैं ॥ ऐसी चाह होय मेरे रोयकै पुकार कही चली जलधार नैन प्रेम आइ धीजे हैं ॥ ५२८ ॥ आयो एक चोर घर संपति बटोरि गांठि बांधि लै मरोरि किहूं उठे नाहिं भारी है ॥ आइकै उठाइ दई देखि इन रीति नई पूँछ्यो नाम प्रीति भई भूलो मैं विचारी है ॥ बोले आप ले पधारो होतही सबारो आवै और दशगुणी मेरे तेरी यह ज्यारी है ॥ प्राणनको आगे धरो आनिकै उपाय करो रहे समझाय भयो शिष्य चोरी टारी है ॥

॥ ५२९ ॥ प्रभुकी टहल निज करन करत आप भक्तिको प्रताप जाने भागवत गाई है ॥ देतहुते चौका कोउ शिष्य बहुभेंट ल्यायो दूरिहीते देखि दास आयो सो जनाई है ॥ धोवो हाथ बैठो आय सुनिकै रिसाय उठे सबहीमें चाम वाको खीझि समझाई है ॥ हिये हितराशि जग-आशको विनाश कियो पियो प्रेमरस ताकी बात हू दिखाई है॥५३०॥

छप्पय-चौमुख चौरा चंड जगत ईश्वर गुणजाने॥ कर्म्मानंद औ कोल्ह अल्ह अक्षर परवाने॥ माधो मथुरामध्य साधु जीवानंद सींवा ॥ दूदा नारायण दास नाम मांडन नत ग्रीवा ॥ चौरासी रूपक चतुर,वर्णत वाणी जू जुवा ॥ चरणशरण चारण भगत, हरिगायक एता हुवा ॥ १४० ॥

अथ कर्म्मानंदजूका वर्णन ।

टी०क०-कर्म्मानंद चारणकी बाणीके उचारणमें दारुण जो हियो होय सोउ पिघलाइये ॥ दियो गृह त्याग हरिसेवा अनुराग भरे बटुवा सुग्रीव हाथ छरी पधराइये ॥ काहू ठौर जाय गाड़ि वही पधराय वापै ल्याय उर प्रभु भूलि आये कहां पाइये ॥ फेर चाह भई दई श्यामको जताय बात लई मँगवाय देखि मति ले भिजाइये ॥ ५३१ ॥

अथ कोल्हअल्हजूका वर्णन ।

कवित्त-कोल्ह अल्ह भाई दोउ कथा सुखदाई सुनो पहिलो विरक्त मद मांस नहीं खात है ॥ हरिहीके रूप गुण बाणीमें उचार करै धरे भक्तिभाव हिये ताकी यह बात है ॥ दूसरो अनुज जानौ खाय सब उनमानो नृपहीको गाँव प्रभु कभू गाय जात है ॥ बड़ेके अधीन रहे सोई करे जोई कहे ईश करि चहे आप दीनतामें मात है ॥ ५३२ ॥ बड़े आय कही चलो द्वारिका निहारें सही मिथ्या जगभोग यामें आ-

युही बिहात है ॥ आज्ञाके आधीन चल्यो आये पुर लीन भये नये चोज मंदिरमें सुनो कान बात है ॥ कोल्हनें सुनाये सब जे जे नाना छंद गाये पाछे अल्हू दोय चार कहे सकुचात है ॥ भरचोही हुंकारो प्रभु कही माला गरे डारो लाय पहिराये कह्यो बड़े मेरो भ्रात है ॥ ५३३ ॥ दयो पै न याहि दयो बड़ो अपमान भयो गयो बूड़्यो सागरमें दुखको न पार है ॥ बूड़तही आगे भूमि पाइ चल्यो झूमि प्रीतिसो अनीति भूले नाहिं मानो तरवार है ॥ सोई आये लेन हरिजनमन चैन झील्यो मिल्यो कृष्ण जाय पायो अति सुखसार है ॥ बैठे जब भोजनको दई उभै पातर ले दूसरी जु कैसी कही वही भाई प्यार है ॥ ५३४ ॥ सबै विष भयो दुख गयो सोई हुवो नयो दयो परमोद वाकी बात सुनि लीजिये ॥ तेरो छोटो भाई मेरो भक्त सुखदाई ताकी कथा ले चलाई जामें आपही सों धीजिये ॥ प्रथम जनम मांझ बड़ो राजपुत्र भयो गयो गेह त्यागि सदा मोसों मति भीजिये ॥ आयो बन कोऊ भूपसंग रागरंग रूप देखि चाह भई देह दई भोग कीजिये ॥ ५३५ ॥ तेरई वियोग अन्न जल सब त्याग कियो जियो नाहिं जात वापै बेगि सुधि लीजिये ॥ हाथपै प्रसाद दीनो आय घर चीन्ह लीनो सुपनोसो गयो बीति प्रीति वासों कीजिये ॥ द्वारिकाको संग सुनि आवतही आगे चल्यो मिल्यो भूमिपर दृग भरि वहै दीजिये ॥ कही सब बात श्यामधाम तज्यो ताही छिन कऱ्यो बनबास दोउ अति मति भीजिये ॥ ५३६ ॥

अथ श्रीनारायणदासजूका वर्णन ।

कबित्त–अल्हूहीके बंशमें प्रशंस याही जानि लेहु बड़ो और भाई छोटो श्रीनारायणदास है ॥ दीरघ कमाऊ लघुउपज्यो लड़ाऊ भाभी दियो सीरो भोजन ले भयो दुख रास है ॥ देवो मोको तातो करि बोली यह क्रोध भरि बहू जाहु करो भरवावे कियो हास है ॥ गयो गृह त्यागि हरि पागि कऱ्यो वैसेही जू भक्तिबश श्याम कह्यो प्रगट प्रकाश है ॥ ५३७ ॥

छप्पय–सवैया गीत श्लोक वेलि दोहा गुण नवरस॥ पिंगल काव्य प्रमाण विविधविधि गायो हरियश॥ पर-दुख विदुषश्लाध्य बचनरचना जु बिचारै॥ अर्थ कबित्तनि मोल सबै सागर उद्धारै॥ रुक्मिणी लता बर्णन अनूप, वागीश वदन कल्याण सुव॥ नरदेव उभै भाषा वागी, पृथीराज कविराज हुव॥ १४१॥

टी०क०–मारवाड़देश बीकानेरको नरेश बड़ो पृथीराजनाम भक्तराज कविराज है॥ सेवा अनुराग और विषैमो वैराग ऐसो रानी पहिचानी नाहिं मानो देखि आज है॥ गयो हो विदेश तहां मानसी प्रवेश कियो हियो नहीं छुवे कैसे सरे मन काज है॥ बीते दिन तीन प्रभुमंदिर न दीठि परै पाछे हरि देखि भयो सुखको समाज है॥५३८॥ लिखिकै पठायो देश सुंदर संदेश यह मंदिर न देखे हरि बीते दिन तीन हैं॥ लिख्यो आयो सांचि बांधि अतिही प्रसन्न भये लगे राज बैठे प्रभु बाहर प्रवीन हैं॥ सुनो एक और यों प्रतिज्ञा करी हिये धरी मथुरा शरीर त्यागि करें रस लीन हैं॥ पृथ्वीपति जानिकै मुहीम दई काबिलकी बल अधिकाई नहीं कालके अधीन हैं॥ ५३९॥ जीवन-अवधि रहे निपट अलप दिन कलप समान बीते पल न बिहात है॥ आगम जनाय दियो चाहे इन्है साँचो कियो लियो भक्तिभाव जाको छायो गात गात है॥ चल्यो चढ़ि साँड़िनीपै लई मधुपुरी आनि करिकै सनान प्राण तजे सुनि बात है॥ जै जै धुनि भई व्यापि गई चहुँ ओर अहो भूपति चकोर यश चंद दिन रात है॥ ५४०॥

छप्पय–असुर अजीज अनीति अगिनिमें हरिपुर कीधो॥ सांगन सुतनें सादराय रणछोरै दीधो॥ धरा धाम धनकाज मरण बीजाहू मांडो॥ कमधुज कुटके

हुवो चौक चतुरभुजनी चाड़े ॥ बाढेल बाढ़ि कीवी कटक चांद नाम चांड़े सबल॥ द्वारिका देखि पालंटती, चढ़ि सीवेकीधी अटल ॥ १४२ ॥

टी०क०—कावा पतिसीवा सुत सागनको प्यारो हरि द्वारावती नाथ यों पुकारे रक्षा कीजिये ॥ सदा भगवान आप भक्तप्रतिपाल करें करो प्रतिपाल मेरो सुनि मति भीजिये ॥ तुरक अजीजनाम धामको लगाई आग लई बाग घोरनिकी आय टूट कीजिये ॥ दुष्ट सब मारे प्रभु कष्टते उबारे निजप्राणवारि डारे यह नयो रस पीजिये ॥५४१॥

छप्पय—कथा कीरतन प्रीति भीर भक्तनकी भावै॥ महामहोत्सव मुदित नित्य नंदलाल लड़ावै ॥ मुकुंदचरण चितवंत भक्ति महिमा ध्वजधारी॥ पतिपर लोभ न कियो टेंक अपनी नहिं टारी ॥ भलपन सबै विशेषही, आवै रसदन सुन खाजती ॥ पृथीराज नृपकुलवधू, भक्तभूप रतनावती ॥ १४३ ॥

टी०क०—मानसिंह राजा ताको छोटो भई माधोसिंह ताकी जानो तिया जाकी बात ले बखानिये ॥ ढिग जो खवासिनि सो श्वासनि भरति नाम रटत जटत प्रेम रानी उर आनिये ॥ नवल किशोर कभू नंदके किशोर कभू वृंदावनचंद कहि आंखें भरि पानिये ॥ सुनत विकल भई सुनिबेकी चाह भई रीति यह नई कछु प्रीति पहिंचानिये ॥ ५४२ ॥ बार बार कहै कहा कहै उरगहे मेरो बहै दृगनीर सो शरीरसुधि गई है ॥ पूँछो मत बात सुख करो दिन रात यह सहे निजगात रागी साधुकृपा भई है ॥ अति उतकंठा देखि कह्यो सो विशेष सब रसिकनरेशनकी बाणी कहि दई है ॥ टहल छुटाई औ सिराने ले बैठाई वाहि गुरुबुद्धि आई यह जानो रीति नई है ॥५४३॥

निशिदिन सुन्यो करे देखिबेको अरबरे देखे कैसे जात जलजात दृग भरेहैं ॥ कछुक उपाय कीजे मोहन दिखाय दीजे तबहीं तौ जीजे वे तो आनि उर अरे हैं ॥ दरशन दूर राज छोंड़ि लोटें धूर पै न पावें छबि-पूर एक प्रेम बश करे हैं ॥ करो हरिसेवा भरि भाव धरि मेवा पकवान रस खान दे बखान मन धरे हैं ॥ ५४४ ॥ इंद्रनीलमणिरूप प्रगट सरूप कियो लियो वहै भाव यों सुभाव मिलि चली हैं ॥ नानाबिधि राग भोग लाडको प्रयोग जामें यामिनि सुपन योग भई रंग रली है ॥ करत सिंगार छबिसागर न पारावार रहत निहारि वाही माधुरीसों पली है ॥ कोटिक उपाय करे योग यज्ञ पार परे तौपै नहीं पावे यह दूर प्रेमगली है ॥ ५४५ ॥ देख्योई चहत तऊ कहत उपाय कहा अहो चाह बात कहो कौनको सुनाइये ॥ कही जू बनावो ढिग महलके ठौर एक चौकी ले बैठावो चहूं ओर समुझाइये ॥ आवैं हरिप्यारे तिन्है ल्यावैं वे लिवाइ इहां रहेते धुवाय पाँय रुचि उपजाइये ॥ नानाविधि पाक सामा आगे आनि धरे आप डारि चिक देख्यो श्याम दृगनि लखाइये ॥ ५४६ ॥ आवें हरि प्यारे साधु सेवा करि टारे दिन किहूं पांव धारे जिन्है व्रजभूमि प्यारिये ॥ युगलकिशोर गावे नैननि बहावे नीर ह्वैगई अधीर रूप दृगनि निहारिये ॥ पूँछी वा खवासनीसों रानी कौन अंग जाके इतनी अटक संग भंग सुख भारिये ॥ चली उठि हाथ गह्यो रह्यो नहीं जात अहो सहो दुख लाज बड़ी तनक बिचारिये ॥ ५४७ ॥ देख्यों मैं बिचारि हरिरूप रससार ताको दीजिये अहार लाज कानि नीके टारिये ॥ रोंकत उतरि आई जहां साधु सुखदाई आनि लपटाई पाँय बिनती ले धारिये ॥ संतनि जिंवा-यबेकी निज करि अभिलाख लाख लाख भांतिनसों कैसेकै उचारिये ॥ आज्ञा जोई दीजे सोई कीजे सुख वाहीमें जु प्रीति अवगाही कहि करो लागी प्यारिये ॥ ५४८ ॥ प्रेममें न नेम हेम थार ले उमगि चली चली दृगधार सो परोसिकै जिंवाये है ॥ भीजिगयो साधु नेहसागर

अगाध देखि नैननि निमेष तजी भये मनभाये हैं ॥ चंदन लगाई आनि बीरीहू खवाई श्यामचरचा चलाई चष रूप सरसाये हैं ॥ धूम करी गांव झूम आये सब देखबेको देखि नृपपास लिखि मानस पठाये हैं ॥ ५४९ ॥ ह्वै करि निशंक रानी बंक गति लई नई दई तजि लाज बैठि मोड़नकी भीरमें ॥ लिख्यो ले दिवानतर आय सो बखान कियो बाँचि सुनि आंच लागि नृपके शरीरमें ॥ प्रेमसिंहसुत ताहि कालसों रसाल आयो भालपै तिलक माला कंठी कंठ तीरमें ॥ भूपको सलाम कियो नरनि जताइ दियो बोल्यो आव मोड़ीकेरे परयो मन पीरमें ॥ ५५० ॥ कोप भरि राजा गयो भीतरसों सोच नयो, पाछे पूंछि लयो कह्यो नरनि बखानके ॥ तब तो विचारी अहो मोड़ा है हमारी जात भयो सुख गात भक्ति भाव उर आनके ॥ लिख्यो पत्र माजीको तू प्रीति हिये साजी जोपै शीसपर बाजी आय राखो तजि प्रानके ॥ सभामध्य भूप कही मोड़ीको विरूप भयो रहो अब मोड़ी केहि भूलो मति जानके ॥ ५५१ ॥ लिख्यो दे पठायो बेगि मानस ले आये जहा रानी भक्तिसानी हाथ दई पाती बांचिये ॥ आयो चढ़ि रंग बांचि सुतको प्रसंग वार भीजे ज फुलेल दूरि किये प्रेम सांचिये ॥ आगे सेवापाक निशि महल वसत जाय ल्याय याही ठौर प्रभु नीके गाय नाचिये ॥ अन्न नृप त्यागि दियो दियो लिखि पत्र पुत्र भई मोड़ी आज तुम हित करि जांचिये ॥ ५५२ ॥ गये नर पत्र दियो सीससों लगाय लियो बांचिके मगन हियो रीझ बहु दई है ॥ नौबत बजाय द्वार बांटत बधाई काहू नृपति सुनाई कही कहा रीति नई है ॥ पूंछे भूपलोग कह्यो मिटे सब सोग भयो मोड़ीके जु योग स्वांग कियो बनि गई है ॥ भूपति सुनत बात अति दुख गात भयो लयो बैरभाव चढ़्यो त्यारी इत भई है ॥ ५५३ ॥ नृप समुझाय राखो देशमें चवाय व्हैहै बुधवंत जन आइ सुतसों जताई है ॥ बोल्यो विषै लागि कोदि

कोटि तन खोये एक भक्तिपर आवे काम यह मन आई है ॥ पाँइ परि माँगि लई दई जो प्रसन्न तुम राजा निशि चल्यो जाय करो जिय भाई है ॥ आयो निजपुरढिग भूरि नर मिले आनि कह्यो सो बखान सब चिंता उपजाई है ॥ ५५४ ॥ भवन प्रवेश कियो मंत्री जो बुलाय लियो दियो कहि कटी नाक लोहू निरवारिये ॥ मारिबो कलंकहू न आवे यों सुनावे भूप काहू बुधवंतने विचार ले उचारिये ॥ नाहर जू पिंजरामें दीजै छोडि लीजे मारि पाछेते पकरि वह बात दाब डारिये ॥ सबनि सुहाई जाय करी मन भाई आयो देख्यो वा खवासनी नृसिंहजू निहारिये ॥ ५५५ ॥ करे हरिसेवा भरि रंग अनुराग दृग सुनि यह बात नेकु नैन उत टारे हैं ॥ भावहीसों जाने उठि अति सनमाने अहो आज मेरे भाग श्रीनृसिंहजू पधारे हैं ॥ भावना सँचाई वही शोभा ले दिखाई फूलमाल पहिराई रचि टीको लागे प्यारे हैं ॥ भौनते निकसि धाय मानो खंभ फारि आये विमुखसमूह ततकाल मारि डारे हैं॥५५६॥ भूपको खबर भई रानीजूकी सुधि लई सुनि नीकीभांति आप नम्र व्हैके आये हैं ॥ भूमि परि साष्टांग करी केउ हरी मति भई दया आय वाके बचन सुनाये हैं ॥ करत प्रणाम राजा बोली आजु लालजूको नेकु फिरि देखों एकओर ए लखाये हैं ॥ बोल्यो नृपराज धन सबही तिहारो धारो पतिपै न लोभ कही करो सुख भाये हैं ॥ ५५७ ॥ राजा मानसिंह माधोसिंह उभै भाई चढ़े नावपर कहूं तहां बूड़िबेको भई है ॥ बोल्यो बड़ो भ्रात अब कीजिये जतन कौन भौन तिया भक्त कहि छोटे सुधि दई है ॥ नेकु ध्यान कियो तबै आनिकै किनारो लियो हियो हुलसायो जेठ चाह नई लई है ॥ कर्‍यो आय दरशन विनै गिरि गयो भूप अतिही अनूप कथा हिये व्यापिगई है ॥ ५५८ ॥

छप्पय-रामानुजकी रीति प्रीति पन हिरदे धार्‍यो॥ संस्कार सम तत्व हंसज्यों बुद्धि विचार्‍यो ॥ सदाचार

मुनिवृत्ति इंदिरा पद्धति उजागर ॥ रामदाससुत संत अनन्यदशधाको आगर ॥ पुरुषोत्तमपरसादते, उभै अंग पहऱ्यो वरम ॥ पारिख प्रसिद्ध कुल काथड़्यो, जगन्नाथ सींवा धरम ॥ १४४ ॥ सदाचार संतोष सुहृद सुठि शील सुभासै॥हस्तक दीपक उदै मेटि तम वस्तु प्रकासै ॥ हरिको हिय विश्वास नंदनंदनबल भारी ॥ कृष्णकलशसोंनेम जमत जाने शिर धारी।श्रीवर्धमान गुरुबचनरति,सो संग्रह नहि छंडियो ॥ कीरतन करत कर सुपनहूं, मथुरादास न मंडियो ॥ १४५ ॥

टी०क०—बास कै तिजारेमांझ भक्तिरसरास करी करी एक बात ताको प्रगट सुनाइये ॥ आयो भेषधारी कोउ करे शालग्रामसेवा डोलत सिंहासनपै आनि भीर छाइये ॥ स्वामीके जु शिष्य भयो तिनहूंको भाव देखि वाहीको प्रभाव आय कह्यो हिये भाइये ॥ नेकु आप चलो उही रीतिको विलोकिये जू बड़े सरवज्ञ कही दुखै नहीं जाइये ॥५५९॥ पाँय परि गये लेके जाय ढिग ठाढ़े भये चाहत फिरायो पै न फिरे शोच पऱ्यो है ॥ जानि गयो आप कछु याहीको प्रताप तोपै मारो करि जाय यों विचार मन धऱ्यो है ॥ मूठ ले चलाई भक्ति तेज आगे आई नहीं वाही लपटाई भयो ऐसो मानो मऱ्यो है ॥ व्है करि दयालु जा जिवायो समझायो प्रीतिपंथ दरशायो हिये भयो शिष्य कऱ्यो है ॥ ५६० ॥

छप्पय—पद लीनो परसिद्ध प्रीति जामें दृढ नातो॥ अक्षर तनमें भयो मदनमोहन रँगरातो ॥ नाचत सबको आहि काहिपै यह बनि आवै॥चित्रलिखितसो रह्यो त्रिभंगदेशी जू दिखावे ॥ हँड़िया सराय देखत

ढुनी,हरि पुरपदवीको चढ्यो॥नृतक नारायणदासको प्रेमपुंज आगे बढ़यो॥ १४६॥

टी०क०-हरिहीके आगे नृत्य करे हिये धरे यही ढरे देश देशनमें जहां भक्तभीर है॥ हंडिया सरायमध्य जायकै निवास लियो लियो सुनि नाम सो मलेच्छ जाति मीर है॥ बोलिकै पठाये महाजन हरि-जन सबै आयो है सदन गुनी ल्यावो चाह पीर है॥ आनिकै सुनाई भई बड़ी कठिनाई अब कीजे जोई भाई वह निपट अधीर है॥५६१॥ बिना प्रभुआगे नृत्य करिये न नेम यहै सेवा वाके आगे कहो कैसे बिसतारिये॥ कियो यों विचार ऊंचे सिंहासन माला धारि तुलसी निहारि हरिगान कर्यो भारिये॥ एक ओर बैठो मीर निरखै नयन कोर मगन किशोररूप सुधि ले बिसारिये॥ चाहे कछु वार्यो परे औच कही प्राण हाथ रीझि सनमान कीनो मीच लागी प्यारिये॥ ५६२॥

छप्पय-बोहित राम गोपाल कुंवर बर गोगोविंद मांडिल॥ छीतस्वामी जसवंत गदाधर अनंतानंद भल॥ हरिनाम मिश्र दीनदास बछपाल कन्हर यश गायन॥गोसू रामदास नारदश्याम पुनि हरिनाराय-ण॥कृष्णजीवन भगवानजन,श्यामदास बिहारी अम्ब-तदा॥ गुणगण विशद गोपालके, एते जन भये भूरिदा॥ १४७॥ उद्धव राम रैनि परम रामगंगा धूखेतनि-वासी॥ अच्युतकुलकृष्णदास विश्राम शेषशाईके वा-सी॥ किंकर कुंडा कृष्णदास खेम सोटा गोपालनंद॥ जैतारन बिदुर दयाल दमोदर मोहन परमानंद॥उद्धव रघुनाथ चतुरो नगन,कुंजओक जे बसत अब॥निष्कत भये संसारते, ते मेरे यजमान सब॥ १४८॥

टी०क०–झीथड़ो ढिगहीमे जेतारन बिदुर भयो भयो हरिभक्त साधुसेवा मति पागी है ॥ वरषा न भई सब खेती सूखि गई चिंता नई प्रभु आज्ञा दई बड़ो बड़भागी है॥ खेतको कटावो औ गहावो ले उड़ावो पावो दो हजार मन्न अन्न सुनि प्रीति जागी है ॥ करी वही रीति लोग देखें न प्रतीति होत गाये हरिमीत राशिलागी अनुरागी है ॥ ५६३ ॥

छप्पय–सदा युक्त अनुरक्त भक्तमंडलको पोषत ॥ पुर मथुरा ब्रजभूमि रमत सबहीको तोषत ॥ परम धर्म दृढ़ करन देव श्रीगुरु आराध्यो॥ मधुर बैन सुठि ठौर ठौर हरिजन सुख साध्यो॥संत महंत अनंत जन, यश विस्तारत जासु नित ॥ श्रीस्वामी चतुरीनगन, मगन रैनदिन भजनहित ॥ १४९ ॥

टी०क०–आये गुरुगृह यो सनेहसों ले सेवा करे धरे हिये साँचो भाव अति मति भीजिये ॥ टहल लगाइ दई नई रूपवती तिया दियो वासों कहि स्वामी कहैं सोई कीजिये ॥ देख्यो उरझाव अंग संगको लखाव भयो दयो घर धन बधू कृपा करि लीजिये ॥ धाम पधराय सुख पायकै प्रणाम करी धरी ब्रजभूमि उर वसे रस पीजिये ॥५६४॥ श्रीगोविंदचंदजूको भोरही दरश करि केशव सिंगार राजभोग नंद-ग्राममें ॥ गोवर्द्धन राधाकुंड व्हैके आवे वृंदावन मनमें हुलास नित करे चारि याममें ॥ रहैं पुनि पावनपै भूँखे दिन तीन बीते आये दूध ले प्रवीण एऊ रँगे श्याममें ॥ माँग्यो नेकु पानी ल्यावो फेर वह प्रानी कहां दुख मतिसानी निशि कही कियो काममें ॥ ५६५ ॥ पानीसों न काज ब्रजभूमिमें बिराज दूध पीवो घर घर यह आज्ञा प्रभु दई है ॥ एतो ब्रजबासी सब क्षीरके उपासी कैसे मोको लेन देहैं कही देहैं सुनी नई है ॥ डोले धाम धाम श्याम कह्यो जोई मानि लियो

दियो परचोहू परतीति तब भई है ॥ जहां जा छपावे पात्र बेगि आप ढूंढ़ि ल्यावे अति सुख पावे कीनी लीला रसमई है ॥ ५६६ ॥

छप्पय–गोमा परमानंद प्रधान द्वारिका मथुरा खोरा ॥ कालुष सांगानेर भलो भगवानको जोरा ॥ विठ्ठल टोड़े खेम पंडा गूनोरे गाजे ॥ श्याम श्येनके वंश चींधड़ पापींर विराजे ॥ जैतारनि गोपालको, केवल कूवे मोल लियो ॥ माधुकरी मांगि सेवै भगवत, तिनपर हों बलिहार कियो ॥ १५० ॥

अथ केवलकुवाजूका वर्णन ।

टी०क०–कहत कुह्मार जग कुल निसतार कियो केवल सुनाम साधुसेवा अभिराम है ॥ आये बहु संत प्रीति करी ले अनंत जाको अंत कौन पावे तोपै सीधो नहीं धाम है ॥ बड़ीही गरज चले करज निकासिबेको बनियां न देत कुवा खोदि कीजे काम है ॥ कियो बोलि कही तोल लियो नीके रोल करि हितसों जिवाये जिन्है प्यारो एक श्याम है ॥ ५६७ ॥ गये कुँवा खोदिबेको सुवा ज्यों उचारे नाम हुवा काम जान्यो वानें भयो सुख भारी है ॥ आई रेत भूमि माटी झूमि गिरि दबे वामें केतक हजार मन होत कैसे न्यारी है ॥ शोक करि आये धाम राम नाम धुनि काहू कानपरी बीत्यो मास कही बात प्यारी है ॥ चले वाही ठौर स्वर सुनि प्रीति भौर परे रीति कछु और वह सुधि बुधि टारी है ॥५६८॥ माटी दूरि करी सब पहुँचे निकट तब बोलिकै सुनायो हरे बानी लागी प्यारिये ॥ दर्शन भयो जाय पाय लपटाय गये महराब ऐसी व्है कै कुवाहू निहारिये ॥ धन्यो जलपात्र एक देखि बड़े पात्र जान्यो आने निजगेह पूजा लागी अति भारिये ॥ भई भीर द्वार नर उमड़ि अपार आये महिमा बिचारि वहु संपति ले वारिये

॥५६९॥ सुंदर स्वरूप श्याम ल्याये पधरायबेको साधु निजधाम आयं कुवाजूके बसे हैं॥ रूपको निहार मनमें विचार कियो आप करें कृपा मोको प्रभु अचल व्है लसे हैं॥ करत उपाय संत टरत न नेकु किहूं कही जू अनंत हरि रीझे स्वामी हँसे हैं॥ धऱ्यो जानराय नाम जानि लई हीकी बात अंगमे नमात सदा सेवा सुख रसे हैं॥५७०॥ चले द्वारावती छाप ल्यावें यह मति भई आज्ञा प्रभु दई फिरि घरहीको आये हैं॥ करो साधुसेवा धरे भाव दृढ हिये माँझ ढरो निज कहूं कीजे जे जे मन भाये हैं॥ गेहहोमें शंख चक्र आदि निजदेह भये नये नये कौतुक प्रगट जग गाये हैं॥ गोमतीसों सागरको संगम हो रह्यो सुन्यो सुमिर्नीं पठाय के यो दोउ ले मिलाये हैं॥५७१॥ भये शिष्य शाखा अभिलाषा साधुसेवा हीकी महिमा अगाध जग प्रगट दिखाई है॥ आये घर संत तिया करत रसोंई कोई आयो वाको भाई ताको खीर ले बनाई है॥ कुबाजू निहारि जानी याको हित सोदर सो कीजिये विचार एक सुमति उपाई है॥ कही भरि ल्यावो जल गई डर कलपै न लई तसमई सब भक्तीन जिंवाई है॥५७२॥ बेगि जल ल्याई देखि आगिसी बराई हिये झांके मुह भाई दुखसागर बुडाई है॥ विमुख विचार तिया कुवाजू निकारि दई गई पति कियो और ऐसी मन आई है॥ पऱ्योई अकाल बेटा बेटीसों न पालि सके तकै कोऊ ठौर मति अति अकाई है॥ लियो संग कऱ्यो जोई पुत्रपति भूख भोई आई परी झींथड़ामें स्वामीको सुनाई है॥५७३॥ नानाविध पाक होत संत आवें जैसे सोत सुख अधिकाई रीति कैसे जात गाई है॥ सुनत बचन वाके दीन दुख लीन महा निपट प्रवीण मनमांझ दया आई है॥ देखि पति मेरो और तेरो पति देख याहि कैसेके निवाह सकै परी कठिनाई है॥ रहो द्वार झऱ्यो करो पहुचे अहार तुझे महिमा निहारि दृग धार ले वहाई है

॥ ५७४ ॥ कियो प्रतिपाल तिया पुरीको अकाल मास भयो जब समै बिदा कीनी उठिगाई है ॥ अतिपछितात वह बात अब पावे कहां जहां साधुसंग रंग सभा रसमई है ॥ करे जाको शिष्य संत सेवाही बतावे करो जो अनंतरूप गुण चाह मनभई है ॥ नाभाजू बखान कियो मोको इनि मोल लियो दियो दरसाय सब लीला नित नई है ॥ ५७५ ॥

छप्पय–जंगी प्रसिद्ध प्रयाग बिनोदी पूरन बनवारी॥ नरसिंह भल भगवान दिवाकर दृढ़व्रतधारी॥ कोमलहृदय किशोर जगत जगन्नाथ सुलूधो ॥ औरौ अनुग उदार खेम खीची धर्म धरी लघु ऊधो ॥ त्रिबिधतापमोचन सबै, सौरभ प्रभु जिन शिरभुज॥ श्रीअग्रअनुग्रहते भये, शिष्य सबै धर्मकी ध्वजा ॥ १५१ ॥ अंगद परमानंददास योगी जग जागे ॥ खरतर खेम उदार ध्यान हरिजन अनुरागे ॥ सुस्फुट त्योला शब्द लोहकरबंशउजागर ॥ हरिदास कविप्रेम सबै नवधाके आगर ॥ अच्युतकुल सबै सदा, दासातन दशधा अघट॥ भरतखंड भूधर सुमेरु, टीला लाहाकी पद्धति प्रगट ॥ १५२ ॥ चारि वरण आश्रम रंक राजा अन पावे॥भक्तनिको बहुमान विमुख कोई नाहिं जावे ॥ बीरा चंदन बसन कृष्ण कीरतन बरखै॥ प्रभुके भूषण देइ महामन अतिशय हरखै॥विट्ठलसुत विमल्यो फिरै,दासचरणरज शिरधरे॥ मधुपुरी महोछो मंगलरूप,कान्हरकोसो को करे॥१५३॥आवहिं दास अनेक

उठिब, आदर करिलीजै ॥ चरण धोइ दंडवत सदनमें डेरो दीजे। ठौर ठौर हरिकथा हृदय अति हरिजन भावें। मधुर वचन मुहलाय बिबिधभांतिन्है लड़ावे॥ सावधान सेवा करें, निर्दूषण रति चेतसी॥ भक्तनसों कलियुग भले, निर्वाही नीवा खेतसी ॥ १५१ ॥ यह अचरज भयो एक खांड घृत मैदा बरखे॥ रजत रुक्मकी रेल सृष्टि सबही मन हरखे ॥ भोजन रासविलास कृष्ण कीरतन जु कीनो ॥ भक्तनको बहु मान दान सबहीको दीनो ॥ कीरति कीनी भीमनसुत, सुनि भूप मनोरथ आनके॥ वसन बढ़े कुंतीवधू त्यों तूंबर भगवानके १५५

टी०-क०-बीतत मास आवे मधुपुरी प्रेम नेमसों महोछो रास हेमही लुटाइये ॥ संतन जिंवाय नाना पट पहिराय पाछे द्विजनि बुलाय कछू पूजे पै न भाइये ॥ आयो कोऊ काल धन माल जा विहाल भये चाहे पन पार्‍यो आए अलप कराइये ॥ रहे विप्र दुखी सुनि भयो सुख भूँख बढ़ि आयो यों समाज करो प्यारी मन आइये॥५७६॥ अतिसनमान कियो लायो जोई सौंपि दियो लियो गांठि बांधि तब विनती सुनाइये ॥ संतनि जिमावो भावे रास ले करावो भावे जेंवो सुख पावो कीजे बात मन भाइये॥ सीधो ल्याय कोठे धर्‍यो रोंकहीसों थैली भर्‍यो द्विजन बुलाय देत क्योंहूं निघटाइये ॥ जितनो निकासें तातें सौगुनो बढ़त और एक २ ठौर बीसगुनो दे पठाइये ॥ ५७७॥

छप्पय-भक्तनसों अतिभाव निरंतर अंतर नाहीं॥ कर जोरे इक पाँय मुदित मन आज्ञामाहीं ॥ श्रीवृंदावनवास कुंज क्रीडा रुचि भावे ॥ राधावल्लभ

लाल नित्यप्रति ताहि लड़ावे ॥ परम धर्म नवधा प्रधान. सदन साँचनिधि प्रेमजड ॥ जसवंत भक्त जैमालकी, रूड़ा राखी राठवड़ ॥ १५१ ॥ अमित महागुण गोप्य सारवित सोई जानै ॥ देखतको तुलाधार दूर आसै उनमानै॥देइद मान्यो पैज विदित वृंदावन पायो ॥ राधावल्लभ भजन प्रगट परताप दिखायो॥ परम धरम साधन सुदृढ़, कलियुग कामधे-नुमें गन्यो ॥ हरिदास हरिभक्तनि हित, धनि जननी एकै जन्यो ॥ १५७ ॥

टी०क०—हरिदास वणिक सो काशीढिग वास जाको ताको यह पन तन त्यागों ब्रजभूमिही ॥ भयो ज्वर नारी छीन छोड़ि गये बैद तीन बोल्यों यों प्रवीन वृंदावन रस झूमही ॥ बेटी चार संतनिको दई अंगीकार करो धरो डोली मांझ मोको ध्यान ब्रजभूमिही ॥ चले साव-धान राधाबल्लभको गान करें करें अचरज लोग परी गांव धूमही ॥ ॥ ५७८ ॥ आवतही मगमांझ छूटि गयो तन पन सांचो कियो श्याम वन प्रगट दिखायो है ॥ आय दरशन कियो इष्ट गुरु प्रेम भरि नेम पऱ्यो पूरो जाय चीरघाट न्हायो है ॥ पाछे आय लोक शोक करत भरत नैन बैन सुनि चैन भयो ताहि नहिं आयो है ॥ भक्तिको प्रभाव यामें भाव और आनो चिन बिन हरिकृपा यह कैसे जात पायो है ॥५७९॥

छप्पय—बावोली गोपाल गुणनि गंभीर गुनारट ॥ दक्षिण दिशि विष्णुदास गांव काश्मीर भजन भट॥ भक्तनिसों यह भाय भजै गुरु गोविंद जैसे ॥ तिलक दाम आधीन सुबर संतनि प्रति तैसे ॥ अच्युतकुल

पन एक रस, निबह्यो ज्यों श्रीमुखगदित ॥ भक्ति भार जूड़े युगल, धर्मधुरंधर जगविदित ॥ १५८ ॥

टी०क०--रहे गुरुभाई दोऊ भाई साधुसेवा हिये ऐसे सुखदाई नई रीति ले चलाइये ॥ जाय जा महोछोमें बुलाए हुलसाये अंग संग गाड़ी सामासो भंडारी दे मिलाइये ॥ याको तातपर्य संत घटती न सही जात बात वे न जाने सुख माने मन भाइये ॥ बड़े गुरु सिद्ध जग महिमा प्रसिद्ध बोले विनै करजोर सोई कहिके सुनाइये ॥ ५८० ॥ चाहत महाछो कियो हुलसत हियो नित लियो सुनि बोले करो बेगि दे तियारिये ॥ चहुँदिशि डाऱ्यो नीर कऱ्यो न्योत्यो ऐसे धीर आवे बहु-भीर संत ठौरनि सँवारिये ॥ आये हरिप्यारे चारों खूंटते निहारे नैन जाय पग धारे शीस बिनै ले उचारिये ॥ भोजन कराय दिन पांच लग छाय रहे पट पहिराय सुख दियो अति भारिये ॥ ५८१ ॥ आज्ञा गुरु दई भोर आवो फिरि आस पास महासुखराशि नामदेवजू निहारिये ॥ उज्वल बसन तन एकले प्रसन्न मन चलें जात बेगि शीस पाँयनिपै धारिये ॥ वेही दे बताय श्रीकबीर अति धीर साधु चले दोऊ भाई परि दक्षिणा बिचारिये ॥ प्रथम निरखि नाम हरखि लपटि पगे लगि रहे छोंडत न बोले सुनो धारिये ॥ ५८२ ॥ साधु अपराध जहां होत तहां आवत न होय सनमान सब संत तोहिं आइये ॥ देखि प्रीति रीति हम निपट प्रसन्न भये लये उरलाय जावो श्रीकबीर पाइये ॥ आगे जो निहारे भक्तराज दृग धारे चली बोले हँसि आप कोऊ मिल्यो सुखदाइये ॥ कह्यो हांजू मानि दई भई कृपा पूरण यों सेवाको प्रताप कहाँ कहांलगि गाइये ॥ ५८३ ॥

छप्पय–आश करन ऋषिराज रूप भगवान भक्त-गुरु ॥ चतुरदास जग अभै छाप छीतर जू चतुरबरु ॥ लाखा अद्भुत रायमल खेम मनसा क्रम बाचा ॥ रसि-

कराय मलगौर देबा दामोधर हरि रँग राचा ॥ सबै सुमंगलदास दृढ़ धर्मधुरंधर भजन भट ॥ कीह्न कृपा कीरंति विशद, परम पारषद शिष प्रगट।१५९।आगम निगम पुराण सार शास्त्रजु बिचाऱ्यो ॥ ज्यों पारो दे पुटहिं सबनिको सार उधाऱ्यो॥श्रीरूप सनातन जीव भट्ट नारायण भाख्यौ॥ सो सर्वस उरसांच जतन करि नीके राख्यौ ॥ फनी वंसगोपाल सुवरागाको अयन॥ रसराशिउपाशिक भक्तराजस रघुनाथ भट, निर्मल बयन।१६०।।निश्वरपति रति त्यागि कृष्ण मदसों रति जोरी॥सबै जगतकी फाँसि तरनि तिनका ज्यों तोरी॥ निर्मल कुल कांथड़्या धन्य परसा जिहिं जाई॥विदित वृंदावन वास संत मुख करत बड़ाई॥ संसार स्वाद सुख वांति करि, फेरि नहीं तिन तन चही॥ कठिन काल कलियुगमें, करमेती निकलंक रहीं ॥ १६१ ॥

टी०क०–सेखावत नृपके पुरोहितकी बेटी जानो वासहो खडेला करमेती जो बखानिये ॥ बसे उर श्याम अभिराम कोटि कामहूंते भूले धामकाम सेवा मानसी पिछानिये ॥ बीतजात याम तन वाम अनुकूल भयो फूल फल अंग गति मति छबि छीनिये ॥ आयो पति गौनो लेन भयो पितु मात हिये लिये चित चाव पट आभरन आनिये ॥ ५८४ ॥ पऱ्यो सोच भारी कहा कीजिये विचारी हाड़चामसों सँवारी देह रतिके न कामकी ॥ ताते देवो त्यागि मन सोवे जिनि जागि और मिटे उरदाग एक सांची प्रीति श्यामको ॥ लाजको न काज जोपै चाहै ब्रजराजसुत बड़ोई अकाज जोपै करे सुधि धामकी ॥ जानी भोर गौनो होत सानी अनुराग रंग संग एक व-

ही चली भीजी मति वामकी ॥ ५८५ ॥ आधी निशि निकसी यों बसी हिये मूरति सो पूरण सनेह तनसुधि बिसराइये ॥ भोर भयो सोर पऱ्यो पऱ्यो पितु मातु सोच कऱ्यो ले जतन ठौर ढूंढ़ि आई है ॥ चारों ओर दौरे नर आये ढिग ढरे जन ऊकठे करंकमध्य देह जा दुराई है ॥ जग दुरगंध कोऊ ऐसी बुरी लागी जामें बहु दुरगंध सों सुगंधसी सुहाई है ॥ ५८६ ॥ बीते दिन तीन वा करंकहीमें शंक नहीं वंक प्रीति रीति यह कैसे करि गाइये ॥ आयो कोऊ संग ताही संग गंगा तीर आई तहां सो अन्हाई दे भूषण वन आइये ॥ ढूंढत परशुराम पिता मधुपुरी आये पतो ले बताये जाय माथुर मिलाइये ॥ सघन विपिन ब्रह्मकुंडपर वर एक चढ़ि करि देखी भूमि असुवां भिजाइये ॥ ॥ ५८७ ॥ उतरिकै आय रोय पाँय लपटाय गयो कटी मेरी नाक जग मुख न दिखाइये ॥ चलो गृह बास करो लोकउपहास मिटे सासघर जावो मत सेवा चित लाइये ॥ कोउ सिंह व्याघ्र अजू वपुको विनाश करे त्रास मेरे होत फिरि मृतक जिवाइयै ॥ बोली कही सांच बिनभक्ति तन ऐसो जानो जोपै जियो चाहो करो प्रीति यश गाइये ॥ ५८८ ॥ कही तुम काटी नाक कटै जोपै होय कहूं नाक एक भक्तिनाक लोकमें न पाइये ॥ बरस पचास लग विषैहीमें वास कियो तऊ न उदास भये चनेको चबाइये ॥ देखे सब भोग मैं न देखे एक देखे श्याम ताते तजि काम तन सेवामें लगाइये ॥ राततेजु प्रात होत ऐसे तन जात भयो दयो ले स्वरूप प्रभु गयो हिये आइये॥५८९॥ आये निशि घर हरिसेवा पधराय चाय मनको लगाय वही टहल सुहाई है ॥ कहूं जात आवत न भावत मिलाप कहूं आप नृप पूँछे द्विज कहा सुधि आई है ॥ बोल्यो कोऊ जन धाम श्याम संग पागे सुनि अति अनुराग बेगि खबर मँगाई है ॥ कहो तुम जाय ईश इहांई असीस करो कही भूप आयो हिये चाह उपजाई है ॥ ५९० ॥ देखी नृप प्रीति रीति पूँछी सब बात कही नैन अश्रुपात वह रंगी श्याम रंग-

में ॥ बरजत आयो भूप जायके लिवाय ल्याऊं पाऊं जोपै भाग मेरे बढ़ी चाह अंगमें ॥ कालिंदीके तीर ठाढी नीर दृग भूप लखी रूप कछु और कहा कहे वे उमंगमें ॥ किये मने लाख बेर तोपैं अभिलाष राजा कीनी कुटी आये देस भीजे सो प्रसंगमें ॥ ५९१ ॥

छप्पय-गोपी ग्वाल पितु मात नाम निर्णय किय भारी॥ दान केलि दीपक प्रचुर अति बुद्धि विचारी॥ सखा सखी गोपाल काल लीलामें बितयो ॥ कायथ कुल उदार भक्ति दृढ़ आन न चितयो॥ गोतमी तंत्र उरध्यान धरि तन, त्याग्यो मंडल सरद ॥ गोविंदचंद गुण ग्रंथनको. खड्गसेनवाणी विशद ॥ १६२ ॥

टी०क०-ग्वालियर वास सदा रासको समाज करे शरद उजारी अति रंग चढ्यो भारी है ॥ भावकी बढ़नि दृग रूपकी चढ़नि ताता थेईकी रढ़नि जोरी सुंदर निहारी है ॥ खेलतमैं जाय मिले त्यागत न भावनासों झेलत अपार सुख रीझि देहवारी है ॥ प्रेमकी सचाई ताकी रीति ले दिखाई भई भावकनि सरसाई बात लागी प्यारी है ॥ ५९२ ॥

छप्पय-श्यामाजूकी सखीनाम आगम विधि-पायो॥ ग्वाल गाय व्रज गांव पृथक नीके करि गायो॥ कृष्णकेलि सुख सिन्धु अटलउर अंतर धरई ॥ तार-समें नित मग्न असद आलाप न करई॥ब्रजवास आस ब्रजनाथ, गुरुभक्तिचरणरज अनगिनति ॥ सखा श्याम मनभावतो, गंग ग्वाल गंभीरमति ॥ १६३ ॥

टी०क०-पृथ्वीपति आयो वृंदावन मन चाह भई सारंग सुनावे कोऊ जोरावरी ल्याये हैं ॥ वल्लभहूं संग सुर भरतहीं छायो रंग

अतिही रिझायो दृग असुवां बहाये हैं ॥ ठाढ़ो कर जोर विनै करी पै न धरी हिये जिये ब्रजभूमिहीसों बचन सुनाये हैं ॥ कैद करि साथ लिये दिल्लीते छुटाय दिये हरिदास तूंबरन आये प्राण पाये हैं॥५९३॥

छप्पय–परमभक्ति परताप धरमध्वज नेजाधारी॥ सीतापतिको सुयश बदन शोभित अतिभारी॥जानकीजीवन चरणशरण थाती शिर पाई।नरहरिगुरुप्रसाद पूत पोते चलि आई॥रामउपासक छाप दृढ़,और न कछु उर आनियो॥सोती श्लाघ्य संतानि सभा,द्वितिय दिवाकर जानियो ॥ १६४ ॥ हृदै हरिगुण खान सदा सतसँग अनुरागी॥ पद्मपत्रज्यों रह्यो लोभकी लहर न लागी ॥ विष्णु रातसम रीति बंधे रेत्यों तन त्याज्यो॥ भक्त बराती वृंदमध्य दूलह ज्यों राज्यो ॥ खरी भक्ति हरिषापुरे,गुरुप्रताप गाढ़ी रही ॥जीवत यश पुनि परमपद,लालदास दोनों लही ॥ १६५ ॥ निशिदिन यहै विचार दास जिहिं विधि सुख पावें॥ तिलक दामसों प्रीति हृहै अति हरिजन भावें ॥ परमारथसों काज हिये स्वारथ नहिं जाने ॥ दशधामत्त मराल सदा लीला गुण गाने॥आरत हरिगुण शीलसम,प्रीति रीति प्रतिपालकी ॥ भक्तनहित भगवंत रचि, देही माधो ग्वालकी ॥ १६६ ॥ मानस वाचिक काय राम चरणन चित दीनो॥भक्तनसों अतिप्रेम भावना करि शिर लीनो ॥ रासमध्य निर्जान देह द्युति दशा दिखाई ॥ आड़ो चलियो अंक महोछो पूरी पाई॥ क्यारे कलश

औलिध्वजा,विदुष श्लाघा भागकी ॥ श्रीअगरसुगुरु प्रतापते, पूरी परी प्रयागकी ॥ १६७ ॥ सुंदर शील स्वभाव मधुर बानी मंगलकर ॥ भक्तनको सुख देत फल्यो बहुधा दशधातरु ॥ सदन वसत निर्वेद सारभुक जगतअसंगी ॥ सदाचार उदार नेम हरिदास प्रसंगी॥दयादृष्टि वश आगरे,कथा लोक पावन करयो ॥ प्रगट अमित प्रण प्रेमनिधि, धन्य विप्र जिहि नाम धरयो ॥ १६८ ॥

टी०क०–प्रेमनिधि नाम कर सेवा अभिराम श्याम आगरो सहर निशि शेष जल ल्याइये ॥ बरषा सुऋतु जित तित अतिकीच भई भई चित चिंता कैसे अपरस आइये ॥ जोपै अंधकारहीमें चलो तो बिगार होत चलें यों विचारि नीच छुवे न सुहाइये ॥ निकसत द्वार जब देख्यो सुकुमार एक हाथमें मसाल याके पाछे चलि जाइये ॥ ५९४ ॥ जानी यह बात पहुंचाय कहूं जात हय अबहीं बिलात भले चैन कोउ धरी है ॥ यमुनालों आयो आचरजसों लगायो मन तन अन्हवायो मति वाही रूप हरी है ॥ घट भरि धरयो शीश भट सब आय गयो आय गयो घर नहीं देखी कहा करी है ॥ लाट चटपटी अटपटी न समझि परै भट भटी भई नैन नीर लागी छरी है ॥ ५९५ ॥ कथा ऐसी कहे जामें गहे मनभाव भरे करे कृपादृष्टि दुष्टजन दुख पायो दै ॥ जायके सिखायो बादशाह उर दाह भयो कही तिया भलीको समूह घर छायो है॥ आये चोपदार कहैं चलो एही बार बार झारी प्रभु आगे धर्‌यो चाहे सोर लायो है ॥ चले तब संग गए पूँछे नृप रंग कहा तिया न प्रसंग करों कहिके सुनायो है ॥ ५९६ ॥ कान्ह भगवानही

आयकै सुपन दियो कियो वाको इष्टभेष कही प्यास लागी है ॥ पीवो जल कहां आबखाने ले बखाने तब अतिही रिसाने को पिवावे कोउ रागी है ॥ फेरि मारी लात अरे सुनी नहीं बात मेरी आप फरमावो सोई प्यावे बड़भागी है ॥ सो तो लेके कैद करयो सुनि अरबऱ्यो डऱ्यो भऱ्यो हिये भाव मति सोवतते जागी है ॥ ५९८ ॥ दौरे नर ताही समै बेगि पै लिवाय ल्याये देखि लपटाय पाँये नृप दृग भीजे हैं ॥ साहिब तिसाये जाय अबहीं पिवावो नीर औरपै न पीवें एक तुमहीपे रीझे हैं ॥ लेवो देश गांव सदा पांवहोसों लग्यो रहो गहों नहीं नेकु धन पाये बहु छीजे हैं ॥ संग दे मसाल ताही कालमें पठाये यों कपाट जा खुलाय लाल प्यायो जल धीजे हैं ॥ ५९९ ॥

छप्पय–सदाचार गुरुशिष्य त्यागविधि प्रगट दिखाई॥बाहिर भीतर विशद लागि नाहिं कलियुग काई ॥ राघव रुचिर स्वभाव असद आलाप न भावै ॥ कथा कीरतन नेम मिले संतन गुण गावै ॥ ताप तोल पूरो निकष,ज्यों घन अहरन हीरो सहत॥दुबलो जाहि दुनियां कहे,सो भक्त भजन मोटो महत ॥ ६९ ॥ हरिनारायण नृपति पदम बैरछे बिराजे ॥गांव हुसंगाबाद अटलउद्धव भल छाजे ॥ भले तुलसीदास भट ख्यात दे कल्यानो ॥ वोहिथ बनिया रामदास सुहेले परम सुजानो॥औली परमानंदके,ध्वजा सबन धर्मकी गड़ी॥दासनके दासन्नको,चौकस चौकोए मँडी॥१७०॥ देमा प्रगट सब दुनी रामबाई बीरा हीरामनि ॥ लाली नीरा लक्ष्मी युगल पार्वती जगत धनि ॥ खीचनि के-

शी धना गोमती भक्त उपासिनि॥ बादररानी बिदित गंगा यमुना रैदासिनि ॥ जेवा हरखा जोइ सनि, कुँवर-राय कीरति अमल ॥ अबलाशरी साधन सबल, ए बाई हरिभक्तिबल ॥ १७१ ॥ श्रीगुरुशरणै आइ भक्तिमारग सत जान्यो॥ संसारी धर्म छांड़ि झूंठ अरु सांच पिछान्यो ॥ ज्यों शाखाद्रुमचन्द्र जगतसों यहि बिधि न्यारो ॥ सर्वभूत समदृष्टि गुणनि गंभीर अति भारो ॥ भक्त भलाई वदत नित, कुवचन कबहूँ नहिं कह्यो ॥ कान्हरदास संतनि कृपा, हरी हृदय लाहो लह्यो॥ १७२ ॥ कहनि रहनि है एक एक प्रभुपद अनुरागी ॥ यश वितान जग तन्यो संतसम्मत बड़भागी॥ तैसोई पूत सपूत नूतफल जैसो परसा ॥हरिहरदासनिटहल कबितरचना पुनि सरसा ॥ सुरसुरानंद संप्रदाय दृढ़, केशव अधिक उदार मन ॥ लटचो लटेरा आनाविधि, परम धर्म अति पीनतन ॥ १७३ ॥ भक्त भागवत विमुख जगतगुरु नाम न जानें ॥ ऐसे लोग अनेक ऐंचि सन्मारग आनें ॥ निर्मल रति निहकाम अजाते सदा उदासी ॥ तत्वदराशि तम हरण शील करुणाकी राशी॥तिलक दाम नवधारतन, कृष्ण कृष्ण करि दृढ़दिया ॥ केवल राम कलियुगके, पतित जीव पावन किया ॥ १७४ ॥

टी०क०—घर घर जाय कहै यहै दान दीजे मोको कृष्णसेवा कीजे नाम लीजे चित्त लायकै ॥ देखें भेखधारी दस बीस कहूं अनाचारी

दीये प्रभु सेवनकी रीति हिं सिखायकै ॥ करुणानिधान कोऊ सुने नहीं कान कहूं बैलके लगायों सोंटो लोटे दया आयकै ॥ उपड्यो प्रगट तन मनकी सचाई अहो भये तदाकार कहों कैसे समझायकै॥६००॥

छप्पय–धर्मशील गुणसींव महाभागवत राजऋषि ॥ पृथीराजकुलदीप भीमसुत बिदित कील्हशिष॥ सदाचार अतिचतुर विमल बाणी रचनापद॥शूर धीर उद्दार बिनय भलपन भक्तनहद॥सीतापति राधासुबर, भजन नेम उरमें धर्‍यो ॥श्रीमोहनमिश्रित पदकमल, आशकरन यश विस्तर्‍यो ॥ १७५ ॥

टी०क०–नरवरपुर ताको राजा नरवर जानों मोहनजू धरि हिये सेवा नीके करी है ॥ धरी दश मंदिरमें रहे चौकी चोपदार पावत न जान कोऊ ऐसी मत्ति हरी है ॥ पर्‍यो कोऊ काम आय अबहिं मिलाय ल्यावो कहै पृथ्वीपति लोग कानमें न धरी है ॥ आई फौज भारी सुधि दीजिये हमारी सुनि वहू बात टारी परी अति खरभरी है॥६०१॥ कहिकै पठाई कहो कीजिये लराई सुनि रुचि उपजाई चलि पृथ्वीपति आयो है॥ पर्‍यो शोच भारी तब बात यों विचारि कही आय एक जावो गयो अचरज पायो है ॥ सेवा करि सिद्धि साष्टांग ह्वैके भूमि परे देखि बडी बेर पांव खड्ग लगायो है ॥ कटिगई एँडी तौपै टेढ़ीहूं न भौंह करी करी नित नेम रीति धीरज दिखायो है ॥ ६०२ ॥ उठी चिक डारि तब पाछे सो निहार कियो मुजरा विचारि बादशाह अति रीझे हैं ॥ हितकी सचाई यह नेकु न कचाई होत चरचा चलाई भाव सुनि मन भीजे हैं ॥ बीते दिन केऊ नृप भक्त सो समायो पृथ्वीपति दुख पायो सुनि भोग हरि छीजे हैं ॥ करें विप्रसेवा तिन्है गाँव लिखि न्यारे दिये वाके प्राणप्यारे लाड़ करो कहि भीजे ह ॥ ६०३ ॥

छप्पय–कथा कीरतन प्रीति संतसेवा अनुरागी॥ खरिया खुर्पा रीति ताहि ज्यों सर्वसु त्यागी ॥संतोषी सुठि शील तसद आलाप न भावे ॥ कालवृथा नहिं जाय निरंतर गोविंद गावै॥शिष सपूत श्रीरंगको उदित पारषद अंशके॥ निष्किंचन भक्तन भजे, हरिप्रतीति हरिबंशके ॥ १७६ ॥ नंद किशोर दृढ़व्रत अनन्यमा-रग इक धारा॥ मधुर बचन मनहरण सुखद जानत संसारा ॥ परउपकार विचार सदा करुणाकी राशी॥ मनबच सर्वसरूप भक्तपदरेणुउपासी ॥ धर्मदाससुत शील सुठि, मनमान्यो कृष्ण सुजानके ॥ हरिभक्ति भलाई गुण गंभीर, बाँट परी कल्याणके ॥ १७७ ॥ आदि अंत निर्वाह भक्तपदरजव्रतधारी ॥ रहे जगतसों ऐंड़ तुच्छ जानें संसारी॥प्रभुतापतिकी पद्ध-ति प्रगट कुलदीपप्रकाशी ॥ महतसभामें मान जगत जानै रैदासी ॥ पद पढ़त भई परलोकगति, गुरु गोविंद युगफल दिया॥विठ्ठलदास हरिभक्तिके दुहूं हाथ लाडू लिया॥ १७८॥ का वह श्रीरंग सुमति सदानंद सर्व-सुत्यागी॥श्यामदास लघुलंबअनन्यलाखा अनुरागी॥ मास मुदित कल्याण परस वंशी नारायण॥चेता ग्वाल गोपाल शंकरलीला पारायण॥संतसेवाकारज किया, तोषत श्याम सुजानको ॥ भगवंत रचे भारी भगत, भक्तनके सन्मानको ॥ १७९ ॥ शरणागतको शिबरि

दान दधीच टेक बलि ॥ परम धर्म प्रल्हादसीस जग देव देत कलि॥ बीकावति बानैत भक्तिपण धर्मधुरंधर॥ तूवरकुलदीपक संतसेवा नित अनुसर ॥ पार्थपीठि अचरज कौन, सकल जगतमें यश लियो ॥ तिलकदाम परकामको हरीदास हरि निर्मयो ॥ १८० ॥

टी०क०–प्रल्हाद आदि भक्त गाये गुण भागवत सब एक ठौर आये देखे हरिदासमें ॥ रीझि जगदेवसों यों कहिकै बखान कियो जानत न कोउ सुन्यो कऱ्यो ले प्रकाशमें ॥ रहे एक नटी शक्तिरूप गुणजटी गावे लागे चटपटी मोह पावे मृदु हासमें ॥ राजा रीझबार करे देवेको विचारपै नवावे सार काटे शीस राख्यो तेरे पासमें ॥६०४॥ दियो करदाहनोमें वासो नहीं जाँचो काहू सुनि एक राजा भेद भावसों बुलाई है ॥ नृत्य करि गई रीझि लेवो कही आइ देह ओड्यो बाँयो हाथ रिसभरिकै सुनाई है ॥ इतो अपमान पाणि दक्षिणा ले दियो अहो नृप जगदेवजूको ऐसी कहा पाई है ॥ तासों दसगुनी लीजे मोको सो दिखाय दीजे दई नहीं जाय काहू मोहिं ये सुहाई है॥६०५॥ कितो समझावे ल्यावो कहे यह जग साखी गई बड़भागी पास बस्तु मेरी दीजिये ॥ काटि दियो शीस तन रहे ईश शक्ति लख्यो ल्याई बकशीस थार ढापि देखि लीजिये ॥ खोलिकै दिखायो नृप मूरछा गिरायो तन धनकी न बात अब याको कहा कीजिये ॥ मैं जु दीनो हाथ जान आनि ग्रीव जोरि दई लई वाकी रीझि पद तान सुनि जीजिये ॥ ६०६ ॥ सुनी जगदेवरीति प्रीति नृपराजसुता मातासों बखान कही वाहीको ले दीजिये ॥ तबतो बुलाये समझाये बहुभाँति खोलि बचन सुनाये अजू बेटी मेरी लीजिये ॥ नट्यो शतवार जब कही डारो मारि चले मारबेको बोली वहे मारो मति भीजिये ॥ दृष्टिसों न

देखे कही ल्यावो काट मुंड ल्याय चाहे शीस आखिनको गयो फिरि रीझिये ॥ ६०७ ॥ निष्ठा रिझवार रीति कीन्ही सो विस्तार यह सुनो साधुसेवा हरिदास जूने करी है ॥ परदान संत सोहे देत है अनंत सुख रह्यो रुख जानि भक्तसुता चित धरी है ॥ दोउ मिलि सोवें ऋतुग्रीष-मकी छातपर गातपर गात सो ए सुधि नहीं परीहै ॥ दातुनके करिबेको चढ़े निशिशेष आपि चादर उढाय नीचे आये ध्यान धरी है ॥६०८॥ जागपरे दोऊ अर बरे देखि चादरको पंखि पहिंचानी सुता पिताहीकी जानी है ॥ राते दृग नये चले बैठे मग पग लये गये ले एकांतमें यों बिनती बखानी है ॥ नेकु सावधान ह्वैके कीजिये निःशंककाम दुष्टराज छिद्र पाय कहे कटु बानी है ॥ तुमको जु नांव धरे जरे सुनि हियो मेरो डरे निंदा अपनी न होत सुखदानी है ॥ ६०९ ॥ इतनी जिताव-नीमें भक्तिको कलंक लगे तौपै शंक वही साधु घटती न चाई है ॥ भई लाज भारी विषैवास धोय डारी नीके जीके दुखराशि चाहे कहूं उठि जाई है ॥ निपट मगन किये नानाविधि सुख दिये दिये पै न जान मिलि लालनि लड़ाई है ॥ गोविंदअनुज ताकी बाँसुरीको साँचो पन मनमें न ल्यायो नृप इहबिधि गाई है ॥ ६१० ॥

छप्पय–तान मान सुर ताल छन्द सुंदर सुठि सो है ॥ सुधाअंग भ्रूभंग मान उपमाको कोहै ॥ रत्नाकर संगीत रागमाला रंगरासी ॥ रीझें राधालाल भक्तप-दरेणुउपासी ॥ स्वर्णकार खरगू सुवन, भक्तभजन पन दृढ़ लियो ॥ नंदकुंवर कृष्णदासको, निजपगतैं नूपुर दियो ॥ १८१ ॥

टी०क०–कृष्णदास ए सुनार राधाकृष्ण सार लियो सेवा करि पाछे नृत गान बिसतारिये ॥ ह्वै करि मगन काहू दिन तनसुधि

भूली एक पग नूपुरसों गि-यो न सँभारिये ॥ लाल अति रंग भरे जानी जन भंग भई पाँय निजखोली आय बांध्यो सुख भारिये ॥ फेरि सुधि आई देखि धारा ले बहाई नैन कीरति यों छाई जग भक्ति लागी प्यारिये ॥ ६११ ॥

छप्पय-चित्सुखिटीकाकार भक्ति सर्बोपरि राखी ॥ श्रीदामोदरतीर्थ रामआर्चनबिधि भाखी ॥ चंद्रोदय हरिभक्ति नृसिंहारण्यहि कीनी ॥ माधो मधुसूदन सरस्वती परमहंसकीरति लीनी ॥ प्रबोधानंद राम-भद्र, जगदानंद कलियुग धानि ॥ परमधर्म प्रतिपोषिके संन्यासी मुकुटमानि ॥ १८२ ॥

श्रीप्रबोधानंदसरस्वती गुँसाईजूका वर्णन ।

टी०क०-श्रीप्रबोधानंद बड़े रसिक आनंदकंद श्रीचैतन्यचंदजूके पारषद प्यारे हैं ॥ राधाकृष्णकुंजकेलि निपट नबेलि कही झेलि रस रूप दोउ किये दृग तारे हैं ॥ वृंदाबनवासको हुलास ले प्रकाश कियो दियो सुखसिंधु कर्म धर्म सर्व टारे हैं ॥ तहां सुनि सुनि कोटि कोटि जन रंग पायो विपिन सुहायो बसे तनमन बारे हैं ॥ ६१२ ॥

छप्पय-सरिता कूकस गांव सलिलमैं ध्यान धन्यो मन। रामचरणअनुरागसुदृढ़जाके सांचोपन।सुत कलत्रधन धाम ताहिसों सदा उदासी॥कठिन मोहको फंद तरकि तोरी कुल फांसी॥कीन्ह कृपा बल भजनके,ज्ञानखङ्ग माया हनी ॥ अष्टांग योग तन त्यागियो,द्वारिकादास जानेदुनी॥१८३॥उदयअस्तपरबतगहिरमध्यसरिता भारी ॥ योगयुवती विश्वास तहां दृढ़ आसन धारी ॥ व्याघ्रसिंह गुंजे खराक कछु शंक न मानै॥अर्द्ध न जाते

पवन उलट ऊरधको आनै॥साखि शब्द निर्मल कही, कथ या पद निरवान॥ पूर्ण प्रगट महिमा आनंत,करि हैकौन वखान ॥ १८४ ॥ सदाचार मुनिवृत्ति भजन भागवत उजागर ॥ भक्तनसों अतिप्रीति भक्ति दशधाको आगर ॥ संतोषी सुठि शील हृदय स्वारथ नहिं लेशी ॥ परधर्म प्रतिपाल संतमारगउपदेशी ॥ श्रीभागवत वखानिकै, नीरक्षीर विवरण कऱ्यो॥श्रीरामानुजपद्धति प्रताप,भट्ट लक्ष्मण अनुसऱ्यो॥१८५॥ कृष्णदास कलि जीति न्योति नाहर पल दीयो॥अतिथिधर्म प्रतिपा प्रगट यश जगमें लीयो ॥ उदासीनता अवधि कनककामिनि नहिं रातो ॥ रामचरणमकरंद रहत निशिदिन मदमातो॥गलते गलित अमित गुण सदाचार सुठि नीति॥ दधीच पाछे दूसरी करी,कृष्णदास कलिजीति ॥ १८६ ॥

टी०क०-बैठे हैं गुंफामें देखे सिंहद्वार आय गयो लयों यों विचार हो अतिथि आजु आयो है ॥ दई जांघ काटि डारि कीजिये अहार अजू महिमा अपार धर्म कठिन बतायो है ॥ दियो दरशन आप सांचमें रह्यो न जाय निपट सँचाई दुख जान्यो न बिलायो है ॥ अन्न जल देवेहीको झखत जगत नर करि कौन सकै जन मन भरमायो है ६१२

छप्पय-लालविहारी जपत रहत निशिवासर फूल्यो॥ सेवा सहज सनेह सदा आनंदरस झूल्यो ॥ भक्तनसों अतिप्रीति रीति सबही मनभाई ॥ आशय अधिक उदार रसना हरिकीरति गाई॥हरिविश्वास हिये आ-

निके, सुपनेहु अन्य न आश की ॥ भली भांति नि-
वही भगति, सदा गदाधर दासकी ॥ १८६ ॥

टी०क०–बुरहानपुरढिग बाग तामें बैठे आय करि अनुराग त्यागि पागी मति श्यामसों ॥ गांवमें न जात लोग किते हाहा खात सुख मानि लियो गात नहीं काम और कामसों ॥ पऱ्यो अतिमेह देह बसन भिजाय डारे तब हरि प्यारे बोले सुर अभिरामसों ॥ रहे एक साह भक्त कही जाय ल्यावो उन्हें मंदिर करावो तेरो भऱ्यो घर दामसों ॥ ॥६१४॥ नीठि नीठि ल्याये हरिबचन सुनाये जब तब करवाये ऊंचो मंदिर सँवारिकै ॥ प्रभु पधराये नाम लाल औ विहारी श्याम अति अभिराम रूप रहत निहारिकै ॥ करे साधुसेवा जामें निपट प्रसन्न होत वासी न रहत अन्न सोवैं पात्र झारिकै ॥ करत रसोई जोई राखी ही छिपाय सामा आये घर संत आप कही ज्यांवो प्यारिकै ॥ ६१५ ॥ बोल्यो प्रभु भूँखे रहे ताके लिये राख्यो कछु भाख्यो तब आप काढ़ो भोर और आवैगो॥ करिकै प्रसाद दियो लियो सुख पायो सब सेवारीति देखि कही जग यस गावैगो ॥ प्रात भये भूँखे हरि गये तीन याम दूरि रहे क्रोधभरि कहे कब धौं छुटावैगो ॥ आयो कोउ ताहीसमैं दोसत रुपय्या धरे बोले गुरु शिष्य लेके नारो कितो पावैगो ॥ ६१६ ॥ डऱ्यो वह साह मत मोपै कछु कोप कियो कियो समाधान सब बात समझाई है॥ तबतो प्रसन्न भयो अन्न लगे जितौ देत सेवा सुखलेत साधुरुचि उपजाई है ॥ रहे कोउ दिन पुनि मधुपुरी वास लियो पियो ब्रजरस लीला अतिसुखदाई है ॥ लाल ले लड़ाये संत नीके भुगताये गुण जाने जिते गाये मति सुंदर लगाई है ॥ ६१७ ॥

छप्पय–भक्तियोग दृढ़ युक्ति देह निजबल करि राखी ॥ हियै स्वरूपानंद जालरस रसना भाखी ॥

परिचय प्रचुर प्रताप जानमणि रहससहायक॥श्रीनारायणप्रगट मनौं लोगन सुखदायक॥ नित सेवत संतन महत, दाता उत्तरदेश गति॥ हरिभजन शिवै स्वामी सरस श्रीनारायणदास अति॥ १८७॥

टी०क०–आये बद्रीनाथजूतैं मथुरा निहारी नैन चैन भयो रहे जहां केशैजूके द्वार है॥ आवैं दरशन लोग जूतिनको सोग हिये रूपको न भोग होत कियो यों विचार है॥ करे रखवारी सुख पावत है भारी कोऊ जानै न प्रभाव उर भाव सो अपार है॥ आयो एक दुष्ट पोट पुष्ट सोतो शीश दई लई चले मग ऐसो धीरजको सार है॥ ६१८॥ कोऊ बड़ो नर देखि मग पहिंचानि लखे किये परिणाम भूमि परे भरि नेहको॥ जानिकै प्रभाव पांव लीने महादुष्टहूंनै कष्ट अति पायो छुट्यो अभिमान देहको॥ बोले आप चिंता जिन करो तेरो काम होत नैन नीर सोत मुख देखौं नहीं गेहको॥ भयो उपदेश भक्तिदेश उन जान्यो साधु शक्तिको विशेष वहां जानो भाव मेहको॥ ६१९॥

छप्पय–भजनभाव आरूढ़ गूढ़ गुण वलित ललित वश श्रोता श्रीभागवत रहस्यज्ञाता अक्षररस॥ मथुरापुरी निवास आस पदसंतनि इकचित॥ श्रीयुत खोजीयेश्यामधामसुखकर अनुचरहित॥अति गंभीर सुधीर मति, हुलसत मन जाके दरस॥ भगवानदास श्रीसहित नित, सुहृद शील सज्जन सरस॥ १८८॥

टी०क०–जानिबेको पन पृथ्वीपति मन आई यों दुहाइ ले दिवाई माला तिलक न धारिये॥ मानि आन प्रान लोभ केतकनि त्यागि दिये छिपे नहीं जात जानी वेगि मारि डारिये॥भगवानदास उर भक्ति सुखराशि भन्यो कन्यो ले सुदेस बसे रीति लागी प्यारिये॥रीझ्यो नृप

देखि रीझ मथुरानिवास पायो मंदिर करायो हरि देवसो निहारिये६२०

छप्पय–जगन्नाथको दास निपुण अति प्रभुमन भायो॥परम पारषद समुझि जानि प्रियनिकट बुलायो॥ प्राणपयानो करत नेह रघुपतिसों जोऱ्यो॥ सुतदारा धन धाम मोह तिनुकाज्यों तोऱ्यो॥कोधनी ध्यान उरमें लस्यो रामनाम मुखजानकी॥भक्तपक्षउदारता यह निवही कल्यानकी ॥ १८९ ॥ संतदास सद्वृत्ति जगत छोई कर डाऱ्यो॥महिमा महाप्रवीण भक्तिवित धर्म विचाऱ्यो ॥ बहुरो माधवदास भजनवल परचो दीनो॥परमधर्म विस्तारहित, प्रगट भयेनाहिन तथा॥ सोदर सोभूरामके, सुनो संत तिनकी कथा॥१९०॥ कृष्णभक्तिको थंभ ब्रह्मकुल परम उजागर क्षमाशील गंभीर सर्वलक्षणको आगर॥सर्वसु हरिजनजानि हृदय अनुराग प्रकाशै ॥ अशन वसन सन्मान करत अति उज्वल आशै॥ सोभूरामप्रसादते, कृपादृष्टि सबपर बर्सी॥बूड़िये बिदित कान्हर कृपालु,आत्माराम आगम दरसी ॥ १९१ ॥ रुचिर शील घन नील लील रुचि सुमति सरितपति॥विविध भक्ति अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति॥लघु दीर्घ स्वर शुद्ध वचन अविरुद्ध विचारन॥विश्ववास विश्वास दास परिचय विस्तारन॥जानि जगतहित सब गुणनि,सुसम नरायण दास दिय॥भक्तरत्नमाला सुधन,गोबिंदकंठ विकास

किय॥१९२॥ श्रीयुत नृपमणि जगतसिंह दृढ़भक्तिपरायण ॥ परमप्रीति किय सुवश शील लक्ष्मी नारायण जासु सुयश सहजही कुटिल कलि कलपज्जु धायक ॥ आज्ञा अटल सुप्रगट सुभट कटकनि सुखदायक ॥ अतिहि प्रचंड मार्तंड सम, तमखंडन दोर्दंड वर ॥ भक्तेशभक्त भवतोष करि, संत नृपति वासों कुँवर १९३

टी०क०—जगताको पन मन सेवा श्रीनारायणजू भयो ऐसो परायण रहे डोला संगही ॥ लखिबेको चले आगे आगे सदा पाछे रहे लावे जल शीश इंश भऱ्यो हियो रंगही॥सुनि जसवंत औ जैसिंहके हुलास भयो देख्यो दिल्लीमांझ नीर ल्यावत अभंगही ॥ भूमि परि विनै करी धरी देह तुमहीने जाते पायो नेह भीजि गयो यों प्रसंगही ॥ ॥ ६२१ ॥ नृपति जैसिंहजूसों बोल्यो कहा नेह मेरे तेरी जो बहनि ताकी गंधको न पाऊँ मैं ॥ नाम दीपकुँवरि सो बड़ी भक्ति मान जानि वह रसखान तोपै कछु लड़ाऊँ मैं ॥ सुनि सुख भयो भारी हुती रीस वासों टारि लिये गांव काटि फिरि दिये हरि ध्याऊं मैं ॥ लिखिकै पठाई बाई करे सो करन दीजे लीजे साधुसेवा करि निशिदिन गाऊँ मैं ॥ ६२२ ॥

छप्पय—प्रेमी भक्त प्रसिद्ध गानअतिगद्गदबानी ॥ अंतर प्रभुसों प्रीति प्रगट रह नाहिंन छानी ॥ नृत्य करत आमोद बिपिन तन बसन बिसारे ॥ हाटक पट हित दान रीझि ततकाल उतारे॥मालपुरे मंगलकरण, रास रचो रस रंगको ॥गिरिधर ग्वालगोपालको,सखा साचलो संगको ॥ १९४ ॥

टी०क०-गिरिधर ग्वाल साधुसेवाहीको ख्याल जाके देखि यों निहाल होत प्रीति साँची पाई है ॥ संत तन छूटहूते लेत चरणामृतको और अब रीति कहौ कापै जात गाई है ॥ भये द्विज पंच इकठौर सो प्रपंच मान्यो आन्यो सममांझ कह्यो छोड़यो न सुहाई है ॥ जाके हो अभाव मत लेवो प्रेमभाव जानो मृतक यों बुद्धि ताको वारो सुनि भाई है ॥ ६२३ ॥

छप्पय-प्रगट अंगमें प्रेम नेमसों मोहनसेवा ॥ कलियुग कलुष न लग्यो दासते कबहुँ न छेवा ॥ बाणी शीतल सुखद सहज गोविंदधुनि लागी ॥ लक्षणकला गँभीरधीर संतनि अनुरागी॥ अंतरशुद्ध सदा रहै, रसिक भक्ति निज उर धरी॥ गोपालीजन पोषको, जगत यशोदा औतरी॥ १९५॥ शीतल परम सुशील बचन कोमल मुख निकसै॥ भक्त उदित रवि देखि हृदय वारिज जिमि विकसै॥ अतिअनंद मन उमँगि संतपरिचर्या करई ॥ चरण धोइ दंडवत विविध भोजन विस्तरई ॥ बछवन निवास विश्वास हरि, युगुल चरण उर जगमगत ॥ श्रीरामदास रसरीतिसों, भलीभांति सेवत भगत ॥ १९६ ॥

टी०क०-सुनि एक साधु आयो भक्तिभाव देखिबेको बैठे रामदास पूँछे रामदास कौन है ॥ उठे आप धोये पांव आवे रामदास अब रामदास कहां मेरे चाह और गौन है ॥ चलो जू प्रसाद लीजे दीजे रामदास आनि यही रामदास पग धारि निजभौ है ॥ लपटानो पायनसों चायति समात नाहिं भायनिसों भर्‌यो हियो छायो यश जौन है ॥ ६२४ ॥ बेटीको विवाह घर बड़ो उतसाह भयो किये पकवान नाना कोठेमांझ धरे हैं ॥ करें रखवारी सुत नाती दिये तारो रहें

औरही लगाय तारी खोल्यो नहीं डरे हैं ॥ आये गृह संत तिन्है पोट बँधवाइ दई पायो यों अनंत सुख ऐसे भाव भरे हैं ॥ सेवा श्रीविहारी-लाल गाई पाकस्वच्छताई मेरे मन भाई सब साधु उर हरे हैं॥ ६२५ ॥

छप्पय–भक्ति ज्ञान वैराग्य योग अंतर्गति पाग्यो॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब त्याग्यो ॥ कथा कीर्तन मग्न सदा आनंदरस झूल्यो ॥ संत निरख मन मुदित उदित रवि पंकज फूल्यो॥ वैरभाव जिन-द्रोह किय, तासु पागि खसि भै परी॥ विप्र सारस्वत-घर जनम, राम राय हरि रति करी ॥ १९७॥ कुंजवि-हारी केलि सदा अभ्यंतर भासै॥ दंपति सहज सनेह प्रीति परि मितिपरकासै॥ अनन्य भजन रसरीति पुष्टि-मारग करि देखी विधिनिषेध, बल त्यागि पागि रति हृदयविशेषी॥माधवसुतसंमतरासिक, तिलकदामधरि सेव लिय॥ भगवंत मुदित उदार यश रस रसना आ-स्वाद किय ॥ १९८ ॥

टी० क०–सूजाके दिवान भगवंत रसवंत भये वृंदावनवासिनाकी सेवा ऐसी करी है ॥ विप्र कै गुसाँई साधु कोऊ ब्रजवासी जावे देत बहु धन एक प्रीति मति हरी है ॥ सुनि गुरु देव अधिकारी श्रीगोविंद देव नाम हरिदास जाय देखि चित धरी है योग्यताई सीवा प्रभु दूध भात मांगि लियो कियो उतसाह तऊ पोषें अरबरी है ॥ ६२६ ॥ सुनि गुरु आवत अमावत न किहूँ अंग रंग भरि तियासों यों कही कहा कीजिये ॥ बोली घरबार पट संपति भंडार सब भेंट करि दीजे एक धोती धारि लीजिये ॥ रीझे सुनि वाणी साँची भक्ति तेही जानी मेरे अति मनमानी कहि आंखें जल भीजिये ॥ वहीं बात परी कान श्रीगु-

सांई लई जानि आये फिरि वृंदावन पन मति धीजिये ॥ ६२७ ॥ रह्यो उतसाह उरदाहको न पारावार कियो ले विचार आज्ञा मांगि चले आये हैं ॥ रहे सुख लहे नानापद रचि कहे एक रस निरवहे व्रजवासी जा छुटाये हैं ॥ कीनी घर चोरी तऊ नेकु नासा मोरी नाहिं बोरी मति रंग लाल प्यारी दृग छाये हैं ॥ बड़े बड़भागी अनुरागी रति जागी जग माधव रसिक बात सुनो पिता पावे हैं ॥ ६२८ ॥ आयो अंतकाल जानि बेसुधि पिछानि सब आगरेते लेके चले वृंदावन जाइये ॥ आये आधी दूरि सुधि आई बोले चूर ह्वैके कहां लिये जात कूर कही जोई ध्याइये ॥ कही फेरो तन बन जायबेको पात्र नवीं जरै बास आवे प्रिया पियको न भाइये ॥ जानहारो होय सोई जायगो युगलपास ऐसे भाव राशि ताही ठौर चलि आइये ॥ ६२९ ॥

छप्पय–गौरश्यामसों प्रीति प्रीति यमुनाकुंजनमों॥ वंशीवटसों प्रीति प्रीति ब्रजरजपुंजनसों॥गोकुलगुरु-जन प्रीति प्रीति घन वारह बनसों॥पुरमथुरासों प्रीति प्रीति गिरि गोवर्धनसों ॥ वास अटल वृंदा विपिन, दृढ़ करि सो नगरी कियो॥दुर्लभ मानुषदेहसों, लाल मती लाहो लियो ॥१९९॥ कविजन करत बिचार बड़ो को ताहि मनीजे ॥ कोउ कह अवनी बड़ी जगत आ-धार फनीजे ॥ सो धारी शिर शेष ताहि शिव भूषण कीनो॥ शिव आसन कैलास भुजा भरि रावण लीनो॥ रावण जीत्यो वालि राम इक सायक दंडे ॥ अग्र कहे त्रैलोक्यमें, हरि उर धारे ते बड़े ॥२००॥ नेह परस्पर अघट निबहि चारों युग आयो ॥ अनुचरको उत्कर्ष

श्याम अपने मुख गायो ॥ ओतप्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जानै ॥ पुरप्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखानै ॥ अग्र अनुगगुण वर्णतहि, सीतापति तिन होयँ वश ॥ हरिसुयश प्रीति हरिदासको, हरि भावे हरि दासयश ॥२०१॥ दुर्वासाप्रति श्याम दासवशता हरि भाखी ॥ ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम शबरी फल चाखी ॥ राजसूय यदुनाथ चरण धो जूंठ उठाई ॥ (बहु) पांडव विपति निवारि दियो विषविषया पाई॥ कलि विशेष परचौ प्रगट, आस्तिक ह्वैके चित धरौ ॥ उत्कर्ष सुनत संतनको, अचरज कोऊ जिन करौ२०२

फलश्रुति–दोहा ।

पादव पेड़हिं सींचते, पावैं अँग अँग पोष ॥
पूरबजा ज्यौं बरणते, सुनि मानिय संतोष ॥ २०३ ॥
भक्त जिते भूलोकमें, कथे कौनपै जायँ ॥
समुद्रपानश्रद्धा करै, कह चिरिपेट समाय ॥ २०४ ॥
श्रीमूरति सब वैष्णव, लघु दीर्घ गुणी अगाध ॥
आगे पीछे वरणते, जिनि मानो अपराध ॥ २०५ ॥
फलकी शोभा लाभ तरु, तरुशोभा फल होय ॥
गुरुशिष्यकी कीर्तिमें, अचरज नाहीं कोय ॥ २०६ ॥
चारि युगनिमें जे भगत, तिनके पदकी धूरि ॥
सर्बसु शिर धर राखि हौं, मेरो जीवनमूरि ॥ २०७ ॥
जग कीरति मंगल उदय, तीनों ताप नशाय ॥
हरिजनको यश बरणते, हरि हृदि अटल बसाय ॥२०८॥
हरिजनको यश वरणते, करै जू असुया आय ॥

इहा उदर बाढ़ै व्यथा, अरु परलोक नशाय ॥ २०९ ॥
जो हरिप्राप्तिकि आस है, तो हरिजनगुण गाय ॥
नातर भूंजे बीजलौं जन्म जन्म पछिताय ॥ २१० ॥
भक्तदाम संग्रह करै, कथन श्रवण अनुमोद ॥
सो प्रभु प्यारो पुत्रज्यों, बैठे हरिकी गोद ॥ २११ ॥
अच्युतकुल यश इक वरहु, जाकी मति अनुरागि ॥
उनकी भक्ति भजन सुकृत, निश्चय होय बिभागि ॥ २१२ ॥
भक्तदाम जिन जिन कथी, तिनकी जूंठनि पाय ॥
मोमति सारू अक्षर द्वै, कीनो सिलौ बनाय ॥ २१३ ॥
काहूके बल योगयज्ञ, कुल करनोकी आस ॥
भक्तनाममाला अग्र उर, बसौ नारायणदास ॥ २१४ ॥

इति भक्तमाल नाभाजीकृत मूल समाप्त।

॥ अथ टीकाकर्ताके गुरुदेवका वर्णन ॥

कबित्त–रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिन पाई भई सरसाई हिये मनमें बसाई है ॥ उररंगभवनमें राधिकारवन बसे लसे ज्यों मुकुरमध्य प्रतिबिंब भाई है ॥ रसिकसमाजमैं विराज रसराज कहे चहे मुख सब फूले सुखसमुदाई है ॥ जनमन हरि लाल मनोहर नाम पायो उनहूँको मन हरि लीनो ताते राई है ॥ ६३१ ॥ इनहींके दासदास प्रियादास दास जानों तिन ले बखान्यो मानो टीका सुखदाई है ॥ गोवर्द्धननाथजूके हाथ मन पर्‍यो जाको कर्‍यो वास वृंदावन लीला मिलि गाई है ॥ मति अनुमान कह्यो लह्यो सुख संतनके अंतको न पावे जाइ गावे हिये आई है ॥ घटि बढि जानि अपराध मेरो क्षमा कीजे साधु गुणग्राही यह

मानि मैं सुनाई है ॥ ६३२ ॥ कीनो भक्तमाल सुरसाल नाभास्वामीजूने तेरे जीवजाल जग जनमनमोहनी ॥ भक्तिरसबोधिनी सो टीका मतिशोधिनी है बांचत कहत अर्थ लागे अति सोहनी ॥ जोपै प्रेमलक्षणाकी चाह अवगाह याहि मिटै उरदाह नेकु नैननहूं जोहनी ॥ टीका अरु मूल नाम भूलि जात सुनै जब रसिक अनन्य मुख होत विश्वमोहनी ॥ ६३३ ॥ नाभाजूको अभिलाष पूरण ले कियो मैं तो ताकी साखि प्रथम सुनाई नीके गायकै ॥ भक्तिको विश्राम जाके ताहीसों प्रकाश कीजे भीजै रंग हियो लीजे संतनि लड़ायकै ॥ संवत प्रसिद्ध दशसातशत उन्हत्तर फाल्गुन मास वदी सप्तमी बितायकै ॥ नारायणदास सुखराशि भक्तमाल लेकै प्रियदासदास पुर वसो रहौ छायकै ॥ ६३४ ॥ अगनि जरावो लैकै जलमै बुड़ावो भावे शूलीपै चढ़ावो घोरि गरल पिवायवी ॥ बिच्छू कटवावो कोटि साप लपटावो हाथी आगे डरवावो एनी भीत उपजायवी ॥ सिंहपै खवावो चाहो भूमि गड़वावो तीखा अन विधवावो मोहिं दुःख नहीं पायवी ॥ व्रजजनप्राण कान्हबात यह कान करो भक्तिसों विमुख ताको मुख न दिखायवी ॥ ६३५ ॥

॥ इति श्रीप्रियादासकृता भक्तिरसबोधिनी भक्तमालटीका सम्पूर्णा ॥

छप्पय—उन हरिआज्ञा पाय सकल ब्रह्मांड उपायो॥ इन गुरु आज्ञा पाय भक्तको निर्णय गायो ॥ चार युगनके भक्त गुणनकी गूँथी माला ॥ अंगअंगही बनी विचित्रजू परम रसाला ॥ लघु मोहन अचिरज कहा सीतापति जापै जयो ॥ कमलनाभ अज विष्णुको त्यों अग्रनाभ नाभा भयो ॥ १ ॥ ब्रह्माआयुष वर्ष कल्प छत्तीस हजारा ॥ पांचलाख पर चारिहजार

सुचार विचारा ॥ तीनकोटि साठै हजार चौकड़ी सुजाही ॥ छत्तिस कोटि अवतार ब्रह्मआयुर्बलमाहीं ॥ चौदह कोटि चालीस लाख जुग कोना जाही जगतमें ॥ तत्ववेत्ता तिहुँलोकमे लेखो कीनो भक्तमें॥२॥

प्रमाणिकाछंद ॥ पढै जु आदि अंतलौ ॥ बढ़ै सपर्म तंतलौं ॥ दहै आनंत सालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ १ ॥ कथा करै जु याहिकी ॥ व्यथा रहै न ताहिकी ॥ मिलै सुकृष्णलालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ २ ॥ प्रकार नौकि भक्ति जो ॥ स्वअंग होत शक्ति सी ॥ कहे गिरा रसालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ३ ॥ घटै सुअन्य भाव है ॥ लहै जु भक्तिभाव है ॥ यही प्रमाण भालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ४ ॥ अभक्त भक्तिको लहै ॥ सभक्ति मुक्त ह्वै रहै ॥ गिनै सु तुच्छ कालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ५ ॥ करै जु पाठ प्रातमें ॥ सरै स्वकाज गातमें ॥ हरैहि कामजालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ६ ॥ मिलाप दुग्ध तक्रते ॥ जुहोस सर्पि चक्रने ॥ तथा सुबुद्धि बालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ७ ॥ बहूपमा कहूं कहा ॥ कहे न पारको लहा ॥ बखान सूर्य ख्यालको ॥ नमामि भक्तमालको ॥ ८ ॥ इति भक्तमालमहिमाष्टकं संपूर्णम् ॥

॥ कबित्त ॥

भक्तमाल ग्रंथ पंथ जान हरिजानबेको भानबेको भ्रम कर्म बहु भांति छूटही ॥ सब मतरत भक्तिभाव गाव कहि सत मत अनुसारते कुमत सब टूटही ॥ मूलको बखान सो कहान नाभाजू सयान आभा सुअपार अर्थ रंचहू न खूटही ॥ प्रियादास टीकाको प्रकाश कियो लियो जैसे हटकालंकारपर कुंदनको बूटही ॥ १ ॥ होत चिरकालते

अशुद्ध ग्रंथ फिर ताते बहु परिश्रमसों सुधारि याहि छाप्यो है ॥ विद्या विस्तार अरु जोवन उधार हेत मतके पसार हित इत यह थाप्यो है ॥ अतिसरसाई सब सुजनसुहाई गिरा हिंदीमें कहाई ताते सर्वदेश व्याप्यो है ॥ सब मतके अनंत संत जग भये तायो कियो है बखान मत कोउ नाहिं थाप्यो है ॥ २ ॥

समाप्त.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
हरिप्रसाद भगीरथजी.
कालकादेवीरोड़–रामवाड़ी–मुम्बई.

Printed by V. V. Pathak at Jagadishwar Press Girgaou Gaiwadi House No 2 Bombay. Published by Biaja- wollabha Hariprasad for Hariprasad Bhagirathji Ramwadi Bombay